

हमफिरे
के

एतराफ़ात

मिस्टर हमफिरे

रजवी किताब घर दिल्ली-6

ਪੰਜਾਬੀ ਕਿੱਤਾਬ ਘਰ

ਹਮਫਿਰੇ ਕੇ ਏਰਾਫ਼ਾਤ

ਹਮਫਿਰੇ ਕੇ ਏਰਾਫ਼ਾਤ



ਮਿਸਟਰ ਹਮਫਿਰੇ

ਫੇਹਰਿਸਤ ਮਜ਼ਾਮੀਨ

ਉਨਵਾਨ	ਸਫਾ
ਹਿਜਾਬ ਉਠਤਾ ਹੈ.....1	5
ਹਿਜਾਬ ਉਠਤਾ ਹੈ.....2	13
ਹਿਜਾਬ ਉਠਤਾ ਹੈ.....3	22
ਹਿਜਾਬ ਉਠਤਾ ਹੈ.....4	29
ਹਿਜਾਬ ਉਠਤਾ ਹੈ.....5	47
ਹਿਜਾਬ ਉਠਤਾ ਹੈ.....6	57
ਹਿਜਾਬ ਉਠਤਾ ਹੈ.....7	85

(1)

मुद्दतों हुकूमते बर्तानिया अपनी अजीम और मजबूत नौ आबादियों (मकबूजा इलाकों) के बारे में फिक्रमंद रही और उसकी सल्तनत के हुदूद ने इतनी युसअत इख्तियार की कि अब वहां सूरज भी गुरुब नहीं होता था लेकिन हिंदुस्तान, चीन और मशिरके युस्ता के ममालिक और दीगर बेशुमार नौ आबादियों के होते हुए भी जजीरए बर्तानिया बहुत छोटा दिखाई देता था। हुकूमते बर्तानिया की साम्राजी पालीसी भी हर मुल्क में एक ही तरह की नहीं है। बाज ममालिक में हुकूमत की बाग डोर जाहिरन वहां के लोगों के हाथ में है लेकिन दर पर्दा पूरा साम्राजी निजाम कार फरमा है और अब इसमें कोई कसर बाकी नहीं है कि वह ममालिक अपनी जाहिरी आजादी खोकर बर्तानिया की गोद में चले आयें। अब हम पर लाजिम है कि हम अपने नौ आबादयाती निजाम पर नजरे सानी करें और खास तौर से दो बातों पर लाजमी तवज्जो दें।

१. ऐसी तदबीरें इख्तियार करें जो सल्तनते इंगलिस्तान की नौ आबादियों में उसके अमल दखल और कब्जे को मजबूत करें।

२. ऐसे प्रोग्राम मुरत्तब करें जिनसे उन इलाकों पर हमारा असर व रुसूख कायम हो जो अभी हमारे नौ आबादयाती निजाम का शिकार नहीं हुए हैं।

इंगलिस्तान की नौ आबादयाती इलाकों की वजारत ने इन प्रोग्रामों को अमल लाने के लिये इस बात की जरूरत महसूस की कि वह नौ आबादयाती या नीम नौ आबादयाती इलाकों में जासूसी और इत्तेलआत हासिल करने के लिये वफूद रवाना करे। मैंने नौ आबादयाती इलाकों की वजारत में मुलाजेमत के शुरू ही से अच्छी कार कर्दगी का मुजाहिरा किया। खास तौर पर "ईस्ट इंडिया कंपनी" के कामों की जांच पड़ताल के सिलसिले में अच्छी कार कर्दगी ने मुझे वजारते

सुल्तानों ने एक अच्छे सोहरे पर कायम किया। यह सोचनी चाहिये कि जिसकी सहायता की थी मगर इसीका मतलब है कि उसी का खर्च उस और इसके सामान का मकसद हिंदुस्तान में उन सूरतों का उन राजों की सहायता की जिसके जरिये इस सरजमीन पर मुकम्मल और सार्वभौमिक का अन्तर्गत न मुकम्मल कायम हो सके और फिर इसके सुल्तान का इसकी निरन्तर सहायता की जा सके।

उन दिनों इंग्लिस्तान की हुकूमत हिंदुस्तान से बड़ी मुश्किल और बर्बर थी क्योंकि कौमी, कबायली, मजहबी और सत्तावादी इच्छावादी मजिरी सुल्तान के रहने वालों को इस बात की पुरस्कार से कहा देते थे कि वह इंग्लिस्तान के जायज अन्तर्गत न रह सके कि जिसके कोई सुरित बरपा कर सके। यही हाल चीन की सरजमीन का भी था। कुछ और कन्फ्यूशियस जैसे मुर्दा मजहबों के पैरोकारों की तरफ से भी अंग्रेजों को कोई खतरा नहीं था और हिंदू व चीन ने कसरत से आपसी बुनियादी इच्छावादी के पेशे नजर यह बात को से परे थी कि यहां के रहने वालों को अपनी आजादी और इस्तिस्लाम की चिन्ता हो। यही वह एक उनवान था जो कभी उनके लिये काबिले खोज नहीं रहा। ताहम यह सोचना भी बेवकूफी है कि आइंदा के पेशे नजर इच्छावादी भी इन कौमों को अपनी तरफ मुतावज्जेह नहीं करेंगे। फिर यह बात सामने आई कि ऐसी तदाबीर इच्छावादी की जगह जिससे इन कौमों में बेदारी की सलाहियत खत्म हो जाये। यह तदबीर लंबी मुश्किल के प्रोग्रामों की सूरत में उन सरजमीनों पर जारी हुए जो अन्तर्गत के समान इच्छावादी, जहालत, बीमारी और गुरबत की बुनियाद पर कायम थे। हमने इन इलाकों के लोगों पर इन मुसीबतों और बर्बर कृत्यों को धारित करते हुए बुद्ध मत की इस कहावत को अपनाया जिसमें कहा गया है-

दीनार को उसके अपने हाथ पर छोड़ दो और सब का दामन हाथ में न जाने दो बिल आधिर वह दमा को पूरी कड़वाहट के सज्जुद पराद करने लगेगा।

उसने जवाब दिया :

“हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलेहि वसल्लम साहबे इल्म और साहबे हिकमत पैगम्बर थे, और वह चाहते थे कि इस अंदाज से काफिरों पर दबाव डालें कि वह दीने इस्लाम कुबूल करने पर मजबूर हो जायें।”

सियासी मैदान में भी जब कभी हुकूमतों को किसी फर्द या गरोह से खटका होता है तो वह अपने हरीफ पर सख्तियां करती हैं और उसे रास्ते से हटने पर मजबूर करती हैं ताकि बिल आखिर वह अपनी नुख्तालिफ्तों से बाज़ आ जाये और अपना सर झुका दे। ईसाईयों के नजिस और नापाक होने से मुराद उनकी जाहिरी नापाकी नहीं बल्कि बातिनी नापाकी है और यह बात सिर्फ ईसाईयों ही तक महदूद नहीं है बल्कि इसमें जर तशती भी शामिल हैं जो कौमी ऐतेबार से ईरानी हैं, इस्लाम इन्हें भी नापाक समझता है।

मैंने कहा-

अच्छा! मगर ईसाई तो खुदा रसूल और आखिरत पर ईमान रखते हैं?

उसने जवाब दिया-

हमारे पास उन्हें काफिर और नजिस मानने के लिये दो दलीलें हैं। पहली दलील तो यह है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं मानते, और कहते हैं कि मुहम्मद (नाऊजूबिल्लाह) झूटे हैं, हम भी उनके जवाब में कहते हैं कि तुम लोग नापाक और नजिस हो और यह तअल्लुक अकल की बुनियाद पर है। क्योंकि जो तुम्हें दुख पहुंचाये तुम भी उसे तकलीफ दो।

दूसरे यह कि ईसाई अंबियाए मुरसलीन पर झूटी तोहमतें बांधते हैं जो खुद एक बड़ा गुनाह और उनकी बे हुरमती है। मसलन

वह कहते हैं-

हजरत ईसा (नाऊजूयिल्लाह) शराब पीते थे, इसलिये लानते इलाही में गिरफ्तार हुए और उन्हें सूली दी गयी।

मुझे इस बात पर बड़ा ताव आया और मैंने कहा-

“ईसाई हरगिज यह नहीं कहते।”

उसने कहा-

“तुम नहीं जानते, “किताने मुकदस” में यह तमाम तोहमते वारिद हैं।”

इसके बाद उसने कुछ नहीं कहा और मुझे यकीन था कि वह झूट बोल रहा है। अगरचे मैंने सुना था कि बाज़ अफराद ने पैगम्बर इस्लाम पर झूट की निसबत दी है लेकिन मैं इससे ज्यादा बहस नहीं करना चाहता था। मुझे खौफ था कि कहीं मेरा भांडा न फूट जाये और लोग मेरी असलियत से वाकिफ न हो जायें।

2. मजहबे इस्लाम तारीखी पस मंजरो की बुनियाद पर एक आजादी पसंद मजहब है और इस्लाम के सच्चे पैरोकार आसानी के साथ गुलामी कुबूल नहीं करते। उनके पूरे वजूद में गुजिश्ता अजमतों का गुरुर समाया हुआ है यहां तक कि अपने इस कमजोरी और पुर कुतूर दौर में भी वह इससे अलग होने पर तैयार नहीं हैं। हम इस बात पर कादिर नहीं हैं कि तारीखे इस्लाम की मनमानी तफसीर पेश करके उन्हें यह बतायें कि तुम्हारी गुजिश्ता अजमतों की कामयाबी उन हालात पर मुनहसिर थी जो उस जमाने का तकाज़ा था मगर अब जमाना बदल चुका है और नये तकाज़ों ने उनकी जगह ले ली है और अब गुजिश्ता दौर में वापसी नामुमकिन है।

3. हम ईरानी और उस्मानी हुकूमतों की दूर अंदेशियों, होशयारियों और कार्रवाईयों से महफूज नहीं थे और हर आन यह खटका था कि

कही वह हमारी साम्राजी पालीसियों से बाखबर होकर हमारे किये के परे पर पानी न फेर दें। यह दोनों हुक्मतें जैसा कि पहले ब्यान हो चुका है बहुत कमजोर हो चुकी थी और इनका असर व रसूख सिर्फ अपनी सरजमीन की हद तक महदूद था। वह सिर्फ अपने ही इलाकें में हमारे खिलाफ असलहा और पैसा जमा कर सकते थे, ताहम उनकी बदगुमानी हमारी आइदों कामयाबियों के लिये अदमे इत्मीनान का सबब थी।

४. मुसलमान उलमा भी हमारी तशवीश का बाइस थे, जामिया अजहर के मुफ्ती और ईरान व ईराक के शिया मराजेअ हमारे साम्राजी मकासिद की राह में एक अजीम रुकावट थे। यह उलमा जदीद इल्म व तमहुन और नये हालात से यकसर बे खबर थे और उनकी तहा तवज्जोह उस जन्नत के लिये थी जिसका वादा कुरआन ने उन्हें दे रखा था। यह लोग इस कदर तास्सुब पसंद थे कि अपने मोकिफ से एक इंच पीछे हटने को तैयार नहीं थे। बादशाह और अमीरों समेत तमाम अफराद उनके आगे छोटे थे। अहले सुन्नत हजरात शियों की निसबत अपने उलमा से इस कदर खीफजदा नहीं थे और हम देखते हैं कि उस्मानी सलतनत में बादशाह और शैखुल इस्लाम के दमियान हमेशा खुशगवार तअल्लुकात बरकरार रहे थे और उलमा का जोर सियासी हुक्काम के जोर के हम पल्ना था लेकिन शियई मुल्कों में लोग बादशाहों से ज्यादा उलमा का एहतेराम करते थे। मजहबी उलमा से उनका लगाव एक हकीकी लगाव था लेकिन हुक्काम या सलातीन को वह कुछ ज्यादा अहमियत नहीं देते थे। बहरहाल सलातीन और उलमा की कदरदानी से मुतअल्लिक शिया और सुन्नी नजरियात का यह फर्क नौआबादियाती इलाकों की वजारत और अंग्रेजी हुक्मत के फितने में कमी का बाइस नहीं थी। हमने कई बार इन मुल्कों के साथ आपस की पेचीदा दुश्वारियों

को दूर करने के सिलसिले में गुफ्तगू की लेकिन हमेशा हमारी गुफ्तगू ने बदगुमानी की सूरत इस्तेयार की और हमने अपना रास्ता बंद पाया। हमारे जासूसों और सियासी मिम्बरों की दरख्वास्तें भी पुराने मुजाकरत की तरह नाकाम रही लेकिन फिर भी हम ना उम्मीद नहीं हुए क्योंकि हम एक मजबूत और साबिर कल्ब के ममालिक हैं।

मुझे याद है कि एक दफा नौ आबादियाती इलाकों के वजीर ने लंदन के एक मशहूर पादरी और 25 दीगर मजहबी सरबराहों के साथ एक इजलास मुनअकिद किया जो पूरे तीन घंटे तक जारी रहा और जब यहां भी कोई मन चाहा नतीजा न निकल सका तो पादरी ने हाजिरीन से मुखालिब होकर कहा-

“आप लोग अपनी हिम्मत कम न करें, सब और हीसले से काम लें, ईसाईयत तीन सौ साल की जहमतों और भटकने के साथ हजरत ईसा और उनके पैरोकारों की शहादत के बाद आलमगीर हुई। मुमकिन है आइंदा हजरत ईसा की नजरे इनायत हम पर हों और हम तीन सौ साल बाद काफिरों को निकालने में कामयाब हों। पस हम पर लाजिम है कि हम अपने आपको पक्के ईमान और पायदार सब से आरास्ता करें और उन तमाम वसायत को इस्तेमाल लायें जो मुसलमान इलाकों में ईसाईयत को फैलाने का सबब हों। अगर इसमें हमें सदियों का अर्सा भी गुजर जाये तो घबराने की कोई बात नहीं। आबा व अजदाद अपनी औलाद के लिये बीज बोते हैं।

एक दफा फिर नौ आबादियाती इलाकों की वजारत में रूस, फ्रांस और बर्तानिया के आला कल्बा नुमाइंदों पर मबनी कांफ्रेंस का इनएकाद हुआ। कांफ्रेंस के शुरका में सियासी वुफूद, मजहबी शख्सियतें और दीगर मशहूर हरितयां शामिल थीं। हुस्ने इस्तेफाक से मैं भी वजीर से करीबी ताल्लुकात की बिना पर इस कांफ्रेंस में शरीक था। मौजूए गुफ्तगू इस्लामी ममालिक में साम्राजी निजाम की तरबीज और इसमें पेश आने वाली दुश्वारियां था।

शुरका का गौर व फिक्र इस बात में था कि हम किस तरह

मुस्लिम ताकतों को दरहम बरहम कर सकते हैं और उनके दर्मियान निफाक का बीज बो सकते हैं। गुप्तगू उनके ईमान के तजलजुल के सिलसिले में थी। बाज लोगों का ख्याल था कि मुसलमानों को उसी तरह राहे रास्त पर लाया जा सकता है जिस तरह स्पेन कई सदियों के बाद ईसाईयों की आगोश में चला आया था। क्या यह वही मुल्क नहीं था जिसे यहशी मुसलमानों ने फतह किया था? कांफ्रेंस के नतायज ज्यादा बाजेह नहीं थे। मैंने इस कांफ्रेंस में पेश आने वाले तमाम बाकियात को अपनी क़िताब अज़ीम मसीह की सम्त एक उड़ान में ब्यान कर दिया है।

हकीकतन मशिरक से मग़रिब तक फैलाव रखने वाले अज़ीम और मजबूत दरख्त की जड़ों को काटना इतना आसान काम नहीं, फिर भी हमें हर कीमत पर इन दुश्वारियों का मुकाबला करना है क्योंकि ईसाई मजहब उसी वक्त कामयाब हो सकता है जब सारी दुनिया इसके कब्जे में आ जाये। हज़रत ईसा ने अपने सच्चे पैरोकारों को इस जहांगीरी की बशारत दी है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कामयाबी उन इज्तेमाई और तारीखी हालात से जुड़ी थी जो उस दौर का तकाजा था। ईरान व रोम से जुड़ी मशिरक व मग़रिब की सलतनतों का कम होना दर असल बहुत कम अर्से में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कामयाबी का सबब बना। मुसलमानों ने इन अज़ीम सलतनतों को जेर किया, मगर अब हालात बिल्कुल मुख़्तलिफ़ हो चुके हैं और इस्लामी ममालिक बड़ी तेज़ी से रु ब ज़वाल हैं और इसके मुकाबले में ईसाई रोज़ बरोज तरक्की की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। अब वह वक्त आ गया है कि ईसाई मुसलमानों से अपना बदला चुकाये और अपनी खोई हुई अजमत दोबारा हासिल करें। इस वक्त सबसे बड़ी ईसाई हुकूमत अज़ीम बर्तानिया के हाथ में है जो दुनिया के कोने कोने में अपना सिक्का जमाए हुए है और अब चाहता है कि इस्लामी ममलकतों से जंग लड़ने का परचम भी उसी के हाथ में हो।

(2)

सन् 1710 ई० में इंगलिस्तान की नौआबादयाती इलाकों की बजारत ने मुझे मिश्र, ईराक, ईरान, हिजाज और उस्मानी खिलाफत के मर्कज इस्तंबोल की जासूसी पर मामूर किया। मुझे इन इलाकों में वह राहें तलाश करनी थी जिनसे मुसलमानों को दरहम बरहम करके मुस्लिम ममालिक में साम्राजी निजाम रायज किया जा सके। मेरे साथ नौ आबादियाती इलाकों की बजारत के नौ और बेहतरीन तर्जुबेकार जासूस इस्लामी ममालिक में इस काम पर मामूर थे और बड़ी मेहनत से अंग्रेज साम्राजी निजाम के गुलबे और नौआबादयाती इलाकों में अपने असर व नुफूज की मजबूती के लिये सरगम अमल थे। इन बुफूद को बड़ी भिकदार में सरमाया फराहम किया गया था। यह लोग बड़े पुरस्तिब शुदा नक्शे और बिल्कुल नई और ताजा इत्तेलाआत से शक्ति थे। इनको अमीरों, वजीरों, हुकूमत के आला ओहदेदारों और उलमा व मालदारों के नामों की मुकम्मल फेहरिस्त दी गयी थी। नौआबादयाती इलाकों के मुआविन वजीर ने हमें रवाना करते हुए खुदा हाफिजी के वक्त जो बात कही वह आज भी मुझे अच्छी तरह याद है। उसने कहा था-

“तुम्हारी कामयाबी हमारे मुल्क के मुस्तकबिल की आइनादार होगी लिहाजा अपनी तमाम कुव्वतों को इस्तेमाल में लाओ ताकि कामयाबी तुम्हारे कदम चूमे।”

मैं खुशी खुशी बहरी जहाज के जरिये इस्तंबोल के लिये रवाना हुआ। मेरे जिम्मे अब दो अहम काम थे। पहले तुर्की जुबान पर महारत हासिल करना जो उन दिनों वहां की कौमी जुबान थी। मैंने लंदन में तुर्की जुबान के चंद अलफाज सीख लिये थे। इसके बाद मुझे अरबी जुबान, कुरआन, उसकी तफसीर और फिर फारसी सीखना थी। यहां यह बात भी काबिले जिक्र है कि किसी जुबान का सीखना और अदबी कवायद फसाहत और महारत के एतेबार से इस पर पूरी दस्तरस

रखना दो मुख्तलिफ चीजें हैं मुझे यह जिम्मेदारी सौंपी गयी थी कि मैं इन जुबानों में ऐसी महारत हासिल करूँ कि मुझ में और वहाँ के लोगों में जुबान के एतेबार से कोई फर्क महसूस न हो। किसी जुबान को एक दो साल में सीखा जा सकता है लेकिन उस पर महारत हासिल करने के लिये बरसों का वक्त दरकार होता है। मैं इस बात पर मजबूर था कि इन गैर मुल्की जुबानों को इस तरह सीखूँ कि इसके कबायद व रुमूज का कोई नुकता छूट न जाये और कोई मेरे तुर्क ईरानी या अरब होने पर शक न करे।

इन तमाम मुश्किलात के बावजूद मैं अपनी कामयाबी के सिलसिले में खोफ जदा नहीं था क्योंकि मैं मुसलमानों की तबीयत से वाकिफ था और जानता था कि उनकी कुशादा कल्बी, हुस्ने जन और मेहमान नवाज तबीयत जो इन्हें कुरआन व सुन्नत से विरसे में मिली थी उन्हें ईसाईयों की तरह बद गुमानी और बुरा समझने पर महमूल नहीं करेगी और फिर दूसरी तरफ से उस्मानी हुकूमत इतनी कमजोर हो चुकी थी कि अब उसके पास इंगलिस्तान और गैर मुल्की जासूसों की कारवाइयां मालूम करने का कोई जरिया नहीं था और ऐसा कोई इदारा मौजूद नहीं था जो हुकूमत को इन गैर जरूरी चीजों से बाखबर कर सके। फरमाँ रवा और उसके मुसाहेबीन पूरे तौर पर कमजोर हो चुके थे।

कई महीने के थका देने वाले सफर के बाद आखिरकार हम उस्मानी दारुल खिलाफा में पहुँचे। जहाज से उतरने से पहले मैंने अपने लिये 'मुहम्मद' का नाम तजवीज किया और जब मैं शहर की जामा मरिजद में दाखिल हुआ तो वहाँ लोगों के इजतेमाआत, नज़म व जव्व और सफाई सुथराई देखकर खुश हुआ और दिल ही दिल में कहा: आखिर क्यों हम इन पाक दिल अफ़राद से दुश्मनी कर रहे हैं? और क्यों इनसे इनकी आराइश छीनने पर तुले हुए हैं? क्या हजरत ईसा ने इस किस्म के नाशाइस्ता कामों की तजवीज दी है? लेकिन फौरन ही मैंने इन शैतानी बराबरों और बातिल ख्यालात को जेहन से

झटक कर इस्तिगफार किया और मुझे ख्याल आया कि मैं तो इतानिया उजमा की नी आबादयाती बजारत का मुलाजिम हूँ और मुझे अपने फरायज दयानतदारी से अंजाम देने चाहिये, और मुंह से लगाए हुए सागर को आखिरी घूंट तक पी जाना है।

शहर में दाखिले के फौरन ही मेरी मुलाकात अहले तसन्नून के एक बूढ़े पेशवा से हुई। उसका नाम अहमद आफंदी था। वह एक बरजस्ता, साहबे फजल और नेक तबीयत आलिम था। मैंने अपने पादरियों में ऐसी बुजुर्गवार हरती नहीं देखी थी। वह दिन रात इबादत में मशगूल रहता था और बुजुर्गी और बरतरी में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मारिद था। वह रसूले खुदा को इस्तानियत का मजहरे कामिल समझता था और आप की सुन्नत को अपनी जिन्दगी का असली मकसद बनाये हुए था। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम आते ही उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग जाती थी। शैख के साथ मुलाकात में मेरी एक खुश नसीबी यह भी थी कि उसने मुझसे एक दफा भी मेरे हसब नसब और खानदान के बारे में सवाल नहीं किया और हमेशा मुझे मुहम्मद आफंदी के नाम से पुकारता था। जो कुछ मैं उससे पूछता था बड़े बकार और शराफत से जवाब देता था और मुझे बहुत चाहता था। खास तौर से जब उसे मालूम हुआ कि मैं परदेसी हूँ और इस उस्मानी सलतनत के लिये काम कर रहा हूँ जो पैगम्बर की जानशीन है तो मुझ पर और भी मेहरबान हो गया (यह वह झूट था जो मैंने इस्तंबोल में अपने कयाम की बजह ब्यान करते हुए शैख के सामने बोला था)।

इसके अलावा मैंने शैख से यह भी कहा था कि मैं बिन मां बाप का एक नीजवान हूँ। मेरे कोई बहन भाई नहीं हैं। मैं बिल्कुल अकेला हूँ लेकिन मेरे वालिदेन ने घरसे मैं मेरे लिये बहुत कुछ छोड़ा है। मैंने इरादा किया है कि कुरआन और तुर्की और अरबी जुबान सीखने के लिये इस्लाम के मर्कज यानी इस्तंबोल का सफर इख्तियार करूँ और

फिर दीनी और मानवी सरमाया के हुसूल के बाद दुनियावी कारोबार में ऐसा लगाऊँ। शैख अहमद ने मुझे मुबारकबाद दी और चंद बातें कहीं जिन्हें मैं अपनी नोटबुक से यहाँ नकल कर रहा हूँ।

ऐ नौजवान! मुझ पर तुम्हारा स्वागत और एहतेराम कई बजूहात की बिना पर लाजिम है और वह बजूहात यह है -

१. तुम एक मुसलमान हो और मुसलमान आपस में भाई भाई हैं।
२. तुम हमारे शहर में मेहमान हो, और पैगम्बर इस्लाम का इरशाद है- मेहमान को मोहतरम जानो।
३. तुम तालिबे इल्म हो और इस्लाम ने तालिबे इल्म के एहतेराम का हुक्म दिया है।

तुम हलाल रोजी कमाना चाहते हो और इस पर "कारोबार करने वाला अल्लाह का दोस्त है" की हदीस सादिक आती है।

इस पहली मुलाकात ही में शैख ने अपनी अच्छी आदतों की बुनियाद पर मुझे अपना आशिक बना लिया था। मैंने अपने दिल में कहा काश ईसाईयत भी इन खुली हकीकतों से आशना होती लेकिन दूसरी तरफ मैं यह देख रहा था कि इस्लामी शरीअत इतनी बुलंद निगाही और बुलंद मकामी के बावजूद रुब जवाल हो रही थी और इस्लामी हुक्मरानों की नालायकी, जुल्म व सितम, बद अतरवारी और फिर उलमाए दीन का तअरसुब और दुनिया के हालात से उनकी बेखबरी उन्हें यह दिन दिखा रही थी। मैंने शैख से कहा -

"अगर आपकी इजाजत हो तो मैं आपसे अरबी जुबान और कुरआन मजीद सीखने का ख्वाहिशमंद हूँ।"

शैख ने मेरी हिम्मत अफजाई की और मेरी ख्वाहिश का इस्तिकबाल किया और सूरः हम्द को मेरे लिये पहला सबक करार दिया और बड़ी गर्मजोशी के साथ आयतों की तफसीर व तावील पेश की। मेरे लिये

बहुत से अरबी अल्फाज के तलफ्फुज दुश्वार थे और कभी यह दुश्वारी बहुत बढ़ जाती थी। वह बार बार मुझसे कहता था कि मैं अरबी इबारत इस तरह तुम्हें नहीं सिखाऊंगा तुम्हें हर मुश्किल लफ्ज को दस मर्तबा तकरार करना होगा ताकि अल्फाज तुम्हारे दिमाग में बैठ जायें।

शैख ने मुझे हरफ को एक दूसरे से मिलाने के तरीके सिखाये। मुझे कुरआन की तजवीद व तफसीर सीखने में दो साल का अर्सा लगा। दर्स शुरू करने से पहले वह खुद भी वुजू करता था और मुझे भी वुजू करने का हुक्म देता था। फिर हम किब्ला रुख बैठ जाते थे और दर्स का आगाज होता था। यह बात भी काबिले जिक्र है कि इस्लाम में बदन के हिस्सों को एक खास तरीक़ से धोने का नाम वुजू है। इब्तेदा में मुंह धोया जाता है फिर पहले सीधे हाथ को उंगलियों और बाद में उलटे हाथ से कोहनी तक धोया जाता है। इसके बाद सर, गर्दन और कानों के पिछले हिस्से का मसह किया जाता है और आखिर में पैर धोए जाते हैं।

वुजू करते वक़्त कुल्फी करना और नाक में पानी चढ़ाना मुस्तहब है। आदाबे वुजू से पहले एक खुरक लकड़ी से दांतों का मिस्वाक जो वहां की रस्म थी मेरे लिये बहुत नागवार थी और मैं समझता था कि यह खुरक लकड़ी दांतों और मसूढ़ों के लिये इतेहाई नुक्सानदेह है। कभी कभी मेरे मसूढ़ों से खून भी जारी हो जाता था मगर मैं ऐसा करने पर मजबूर था क्योंकि वुजू से पहले मिस्वाक करना सुन्नते मोकिदा है और इसके लिये बहुत सवाब और फज़ीलत ब्यान की गयी है।

मैं इस्तंबोल में क़याम के दौरान रातों को एक मस्जिद में सो रहता था, और इसके बदले वहां के खादिम को जिसका नाम मरवान आंफदी था कुछ रकम दे देता था। वह एक बंद अख़लाक़ गुरस्ता वर शख्स था और अपने आपको पैगम्बर इस्लाम के एक सहाबी का हम नाम समझता था और उस नाम पर बड़ा घमंड करता था एक बार उसने मुझसे कहा-

अगर कभी खुदा ने तुम्हें साहवे औलाद किया तो तुम अपने बेटे का नाम मरवान रखना क्योंकि इसका शुमार इस्लाम के अजीम पुजाहिदा में होता है।

रात का खाना मैं खादिम के साथ खाता था और जुमा का तमाम दिन जो मुसलमानों की इंद और छुट्टी का दिन था खादिम के साथ गुजारता था। हफ्ता के बाकी दिन एक बड़ई की शार्गिदी में काम करता था और वहां से मुझे एक हकीर सी रकम मिल जाया करती थी। मैं आधा दिन काम करता था क्योंकि शाम को मुझे शैख से दर्स लेना होता था इसलिये मेरी मजदूरी भी आधी होती थी। उस बड़ई का नाम खालिद था। दोपहर को खाने के वक़्त वह हमेशा फातेहे इस्लाम 'खालिद बिन वलीद,' का तजकिरा करता था और उसके फज़ायल व मनाकिब बयान करता था और उसे उन असहावे पैगम्बर में मानता था जिनके हाथों मुखालेफीने इस्लाम ने हजीमत उठाई। हर बंद हज़रत उमर से उसके तात्लुकात कुछ ज्यादा मजबूत न थे और उसे यह खटका था कि अगर खिलाफत उन्हें मिली तो वह उसे ओहदे से हटा देंगे और ऐसा ही हुआ।

लेकिन खालिद बड़ई अच्छे किरदार का हामिल न था, फिर भी अपने दीगर शार्गिदों से कुछ ज्यादा ही मुझ पर मेहरबान था जिसका सबब मुझे अब तक मालूम न हो सका। शायद इसलिये कि मैं बगैर हुज्जत के उसके हर काम को बजा लाता था और उससे मजहबी उमूर या अपने काम के बारे में किसी किस्म का कोई बहस व मुबाहेसा नहीं करता था। कई बार दुकान खाली होने पर मैंने महसूस किया कि वह मुझे अच्छी नज़रों से नहीं देख रहा है। शैख अहमद ने मुझसे कहा था कि इगलाम (बदफेली) इस्लाम में बहुत बड़ा गुनाह है लेकिन फिर भी खालिद मुझसे इस फेल के इतरेकाब पर ज़िद करता था।

वह धीन व दयानत का ज्यादा पाबंद नहीं था और हकीकत में सही अकीदे और सही ईमान का आदमी नहीं था। वह सिर्फ जुमा के जुमा नमाज पढ़ने मस्जिद में जाया करता था और बाकी दिनों में उसका नमाज पढ़ना मुझ पर साबित नहीं था। बरहहाल मैंने उसकी इस बे शर्माना उकसाने को रद्द किया लेकिन कुछ दिनों बाद उसने यह बुरा काम अपनी दुकान के एक और खूब रू कारीगर के साथ अंजाम दिया जो अभी नौ मुस्लिम था और यहूदियत से इस्लाम में आया हुआ था।

मैं रोजाना बड़ई की दुकान में दोपहर का खाना खाकर जुहर की नमाज के लिये मस्जिद में चला जाया करता था और वहां नमाजे अख़ तक रहता था। अख़ की नमाज से फारिग होकर शैख अहमद के घर जाया करता था और वहां दो घंटे कुरआन ख्यानी में गुज़ारता था। कुरआन के अलावा अरबी और तुर्की जुवान भी सीखता था और हर जुना को हफ्ता भर की कमाई जकात के उन्वान से शैख अहमद के हवाले करता था और यह जकात हकीकत में शैख से मेरी इरादत और लगाव का एक नजराना शैख के दर्से कुरआन का एक हकीर सा हक्कुल रहमा था। कुरआन की तालीम में शैख का तर्जें दर्स बे नजीर नौइयत का था। इसके अलावा वह मुझे इस्लामी अहकाम की बुनियादी बातें अरबी और तुर्की जुवान में सिखाता था।

जब शैख अहमद को मालूम हुआ कि मैं ग़ैर शादी शुदा हूं तो उसने मुझे शादी का मशवरा दिया और अपनी एक बेटी मेरे लिये मुन्तख़ब की लेकिन मैंने बड़े मोअद्बाना अंदाज़ से माज़रत चाही और अपने आपको शादी के नाकाबिल जाहिर किया। मैं यह मौक़िफ़ इख़्तियार करने पर मजबूर था क्योंकि शैख अहमद अपनी बात पर मुसिर था और हमारे तअल्लुकात बिगड़ने में कोई कसर बाकी नहीं रह गयी थी। शैख अहमद शादी को पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु

अलेहि वसल्लम की सुन्नत समझता था और इस हदीस का हवाला देता था-

“जो कोई मेरी सुन्नत से मुंह फेरे वह मुझसे नहीं है।”

लिहाजा इस बहाने के अलावा मेरे पास और कोई चारा नहीं था मेरे इस मसलेहत आमेज झूट ने शैख को मुतमईन कर दिया और फिर उसने शादी से मुतअल्लिक कोई गुफ्तगू नहीं की और हमारी दोस्ती फिर पहली मंजिल पर आ गयी।

दो साल इस्तंबोल में रहने और कुरआन समेत अरबी और तुर्की जुबानों को सीखने के बाद मैंने शैख से वापस वतन जाने की इजाजत चाही लेकिन शैख मुझे इजाजत नहीं देता था और कहता था कि तुम इतनी जल्दी क्यों वापस जाना चाहते हो? यह एक बड़ा शहर है, यहां तुम्हारी जरूरत की हर चीज मौजूद है। अल्लाह की मर्जी से इस्तंबोल में दीन और दुनिया दोनों दस्तयाब हैं। शैख ने अपनी गुफ्तगू के दौरान कहा-

“अब जबकि तुम अकेले हो और तुम्हारे मां बाप और बहन भाई कोई नहीं तो फिर तुम इस्तंबोल को अपना मसकन क्यों नहीं बनाते?”

बहरहाल शैख को मेरे वहां रहने पर बड़ा इसरार था। उसे मुझसे उन्स हो गया था मुझे भी उससे बहुत दिलचस्पी थी मगर अपने वतन इंग्लिस्तान के बारे में मुझ पर जो जिम्मेदारियां आयद थीं वह मेरे लिये सबसे ज्यादा अहम थीं और मुझे लंदन जाने पर मजबूर कर रही थीं। मेरे लिये जरूरी था कि मैं लंदन जाकर नौआबादयाती इलाकों की बजारत को अपनी दो साला कारगुजारी की मुकम्मल रिपोर्ट पेश करूं और वहां से नये अहकामात हासिल करूं।

इस्तंबोल में दो साल की रिहाईश के दौरान मुझे उस्मानी हुकूमत

के हालात पर हर माह एक रिपोर्ट लंदन भेजनी पड़ती थी। मैंने अपनी एक रिपोर्ट में बद किरदार बढ़ई के उस वाक्य को भी लिखा था जो मेरे साथ पेश आया था। नौआबादयाती इलाकों की बजारत ने जवाब में मुझे यह हुक्म दिया। अगर तुम्हारे साथ बढ़ई का यह फौल हमारे लिये मंजिले मकसूद तक पहुँचने की राह को आसान बना देता है तो इस काम में कोई हरज नहीं। जब मैंने यह इबारत पढ़ी तो मेरा सर चकराने लगा और मैंने सोचा कि हमारे अफसरान को शर्म नहीं आती कि वह हुकूमत की मसलेहों की खातिर मुझे इस बेशर्मी की तरगीब देते हैं। बहरहाल मेरे पास कोई चाराएकार नहीं था और होटों से लगाए हुए इस कड़वे जाम को आखिरी घूंट तक पी जाना था। फिर भी मैंने इस हुक्म का कोई नोटिस नहीं लिया और लंदन के आला ओहदेदारों की इस बे रुखी की किसी से शिकायत नहीं की। मुझे अलविदाअ कहते हुए शीख की आखों में आंसू भर आये और उसने मुझे इन अल्फाज के साथ रुखसत किया।

“खुदा हाफिज बेटे! मुझे मालूम है कि अब जब तुम लौटकर आओगे तो मुझे इस दुनिया में नहीं पाओगे। मुझे न मुलाना इशाअल््लाह सोजे महशर पैगम्बरे इस्लाम के हुजूर हम एक दूसरे से मिलेंगे।”

दर हकीकत शीख अहमद की जुदाई से मैं एक अर्सा तक गमगीन रहा और उसके गम में मेरी आखें आंसू बहाती रही लेकिन क्या किया जा सकता था, फरायज की अंजाम देही जाती एहसासात से ऊपर है।

(3)

मेरे नौ दीगर साधियों को भी लंदन वापस बुलाया गया था मगर बंद किसमती से उनमें से सिर्फ पांच वापस लौटे थे बाकी मांदा चारा अफराद में से एक मुसलमान हो चुका था और वहीं मिच में रिहाईश पजीर था। इस वाकिये को नौआबादयाती इलाकों की वजारत के सेक्रेट्री ने मुझे बताया लेकिन वह इस बात से खुश था कि उस शख्स ने उनके किसी राज को अफशा नहीं किया था। दूसरा जासूस रूसी था और रूस पहुंचकर उसने वहीं बूद व बाश इस्तेयार कर ली थी। सेक्रेट्री उसके बारे में बड़ा फिक्रमंद था। उसे खटका था कि कहीं यह रूसी नजाद जासूस जो अब अपनी सर जमीन में पहुंच चुका है हमारे राज फाश न कर दे। तीसरा शख्स बगदाद के करीब वाकेय 'अमारा' में हैजा से हलाक हो गया था और चौथे के बारे में कोई इत्तेलाअ मौसूल न हो सकी थी। नौआबादयाती इलाकों की वजारत को उसके बारे में उस वक्त तक इत्तेलाअ रही जब तक वह यमन के पाए तख्त सनआ में रहते हुए मुसलसल एक साल तक अपनी रिपोर्टें में इस वजारत को भेजता रहा लेकिन इसके बाद जब कोई इत्तेलाअ मौसूल न हुई तो बहुत कोशिश के बावजूद नौआबादयाती इलाकों की वजारत को उसका कोई निशान न मिल सका। हुकूमत एक जबरदस्त जासूस की गुमशुदगी के नतायज से अच्छी तरह बाखबर थी। वह हर मुलाजिम के काम की अहमियत को बड़ी बारीकी के साथ जांचती थी और दर हकीकत इस तरह के मुलाजिमीन में से किसी मुलाजिम की गुमशुदगी इस साम्राजी हुकूमत के लिये परेशान कुन थी जो इस्लामी ममालिक में गदर मचाने और उन्हें जेर करने की रकीमों की तैयारी में मसरूफ हो।

हमारा तअत्लुक एक ऐसी कौम से है जो आबादी के ऐतेबार से कम होने के साथ बड़ी अहम जिम्मेदारियों का बोझ सहार रही है और तजरेबाकार अफराद की कमी यकीनन हमारे लिये शदीद नुक्सान का बाइस थी।

सेक्रेट्री ने मेरी आखरी रिपोर्ट के अहम हिस्सों के मुताला के बाद

मुझे उस कांफ्रेंस में शिकत की हिदायत की जिसमें लंदन बुलाये गये पांच जासूसों की रिपोर्टें सुनी जाने वाली थी। उस कांफ्रेंस में जो वजीरे खारिजा की सदारत में हो रही थी नौआबादयाती वजारत के आला ओहदेदार शिकत कर रहे थे, मेरे तमाम साथियों ने अपनी रिपोर्टों के अहम हिस्सों को पढ़कर सुनाया। वजीरे खारिजा नौआबादयाती इलाकों की वजारत के सेक्रेट्री और बाज हाजिरीन ने मेरी रिपोर्ट को बड़ा सशहा। ताहम मैं इस मुहासबे में तीसरे नंबर पर था। दो और जासूसों ने मुझसे बेहतर कारकंदगी का मुजाहिदा किया था जिन में पहला नंबर जी. विलकोक, और दूसरा हेनरी फॉस का था।

यह बात काबिले जिक्र है कि मैंने तुर्की, अरबी, तजवीदे कुरआन और इस्लामी शरीअत में सबसे ज्यादा महारत हासिल की थी लेकिन उस्मानी हुकूमत के जवाल के सिलसिले में मेरी रिपोर्ट ज्यादा कामयाब नहीं थी। जब सेक्रेट्री ने कांफ्रेंस के इस्तेलाम पर मेरी इस कमजोरी का जिक्र किया तो मैंने कहा-

“इन दो सालों में मेरे लिये दो जुबानों को सीखना, तफसीरे कुरआन और इस्लामी शरीअत से आशनाई ज्यादा अहमियत रखती थी और दूसरे कामों पर तवज्जोह देने के लिये मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं था। अगर आप भरोसा करें तो मैं यह कसर आइंदा सफर में पूरी कर दूंगा।

सेक्रेट्री ने कहा- इसमें कोई शक नहीं कि तुम अपने काम में कामयाब रहे हो लेकिन हम चाहते हैं कि तुम इस राह में दूसरों से बाजी ले जाओ।

उसने यह भी कहा- आइंदा के लिये तुम्हें दो अहम बातों का खयाल रखना है।

१. मुसलमानों की उन कमजोरियों की निशानदेही करो जो हमें उन तक पहुंचने और उनके मुख्तलिफ गरोहों के दरमियान फूट डालने में कामयाबी फराहम करे क्योंकि दुश्मन पर हमारी कामयाबी का राज इन मसायल की शनाख्त पर निर्भर है।

२. उनकी कमजोरियां जान लेने के बाद तुम्हारा दूसरा काम उनमें फूट डालना है। इस काम में पूरी कुव्वत सर्फ करने के बाद

तुम्हें यह इत्मीनान हो जाना चाहिये कि तुम्हारा शुमार सफे अब्दल के अंग्रेज जासूसों में होने लगा है और तुम एजाजी निशान के हकदार हो गये हो।

छः माह लंदन में कयाम के बाद मैंने अपने चचा की लड़की मेरी शबी से शादी कर ली जो मुझसे एक साल बड़ी थी। उस वक़्त मैं 22 साल और वह 23 साल की थी। मेरी एक दर्मियाना दर्जे की जहीन लड़की थी लेकिन बड़े दिलकश चेहरे की मालिक थी मेरी बीबी का मुझसे दर्मियाना सलूक था और मैंने अपनी जिन्दगी के बेहतरीन दिन उसके साथ गुजारे। शादी के पहले साल ही मेरी बीबी उम्मीद से थी और मैं नये मेहमान का बेघेनी से मुन्तज़िर था। लेकिन ऐसे मौक़े पर मुझे वज़ारत खाना से यह पक्का हुक्म मिला कि मैं वक़्त बर्बाद किये बग़ैर फ़ौरन इराक़ पहुँचूँ जो बरसहा बरस से उस्मानी खिलाफ़त के ज़ेरे इस्तेहसाल था।

हम भियां बीबी जो अपने पहले बच्चे के इंतज़ार में थे इस हुक्मनामा से बहुत गमगीन हुए लेकिन मुल्क व मिल्तत से मुहब्बत, एहत्तासे जाह तलबी और अपने साथियों से दुश्मनी, तमाम घरेलू आसाइशात, जज्यात और बच्चे की मुहब्बत पर छा गयी, और मैंने बग़ैर तरदुद के इस नई मामूरियत को कबूल कर लिया हालांकि मेरी बीबी बार बार यह जोर देती रही कि मैं अपनी रवानगी को बच्चे की पैदाईश तक मुलतबी रखूँ। जब मैं उससे रुखसत हो रहा था तो वह और मैं दोनों बे तहाशा रो रहे थे। उस पर मुझसे ज़्यादा रिक्कत तारी थी और वह कह रही थी मुझे भूल न जाना, खत जरूर लिखते रहना, मैं भी अपने बच्चे के सुनहरे मुस्तकबिल के बारे में तुम्हें लिखती रहूँगी। उसकी बातों ने मेरा दिल परीज दिया और मुझे इस मंज़िल तक पहुंचाया कि मैं अपने सफर को कुछ अरसे तक मुलतबी कर दूँ लेकिन फिर मैंने अपने आप पर काबू पाया और उससे रुखसत होकर नये अहकामात हासिल करने के लिये वज़ारत खाना रवाना हो गया।

समुंदों में छः माह के तबील सफर के बाद आखिरकार मैं बसरा पहुंचा। उस शहर में रहने वाले ज़्यादा तर वहीं अतराफ के कबायल

वे जिनमें ईरानी और अरब कौमों के दो अहम बाजू शिया और सुन्नी एक साथ जिन्दगी बसर करते थे। बसरा में ईसाईयों की तादाद बहुत कम थी। अपनी जिन्दगी में यह पहला मौका था कि मैं अहले तशीअ और ईरानियों से मिल रहा था। यहां यह बात नायुनासिब नहीं होगी अगर मैं अहले तशीअ और अहले तसनून के अकायद के बारे में मुस्तसर कुछ कहता चलूं। शिया हजरात, हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दायाद और चचा जाद भाई अली बिन अबू तालिब (अलैहिस्सलाम) के मुहिब हैं और उनको हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बरहक जानशीन समझते हैं। उनका ईमान है कि हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नस्से सरीह के जरिये हजरत अली को अपना जानशीन मुन्तखब फरमाया था और आप के ग्यारह फरजंद आपके बाद दीगरे इमाम और रसूले खुदा के बरहक जानशीन हैं।

मेरी सोच के मुताबिक हजरत अली और आपके दो बेटों इमाम हसन और इमाम हुसैन की खिलाफत के बारे में शिया हजरात मुकम्मल तौर पर हक बजानिय हैं क्योंकि अपने मुतालआत की बुनियाद पर बाज शवाहिद व इसनाद मेरे इस दावे पर दलालत करते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि हजरत अली ही वह हस्ती थे जो मुमताज सिफात के हामिल थे। और सही तौर पर फौज और इस्लामी हुकूमत की सरबराही के अहल थे। इमाम हसन और इमाम हुसैन की इमामत के बारे में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बहुत सी हदीसें दस्तयाब हैं और अहले सुन्नत को भी इनसे इंकार नहीं है और दोनों फरीक इस पर मुत्तहिद हैं। अलबत्ता मुझे बाकी नौ अफराद की जानशीनी में शक है जो हुसैन बिन अली की औलाद हैं और शिया हजरात उन्हें इमाम बरहक मानते हैं।

यह कैसे मुमकिन है कि पैगम्बरे इस्लाम उन अफराद को इमामत की खबर दें जो अभी पैदा ही न हुए हों? अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बरहक पैगम्बर हों तो गैब की खबर दे सकते हैं जैसा कि हजरत ईसा ने आइंदा की खबरें दी हैं लेकिन

हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबूवत ईसाईयों के नजदीक साबित नहीं है।

मुसलमानों का कहना है कि कुरआन पैगम्बर इस्लाम की नुबूवत पर भरपूर दलील है लेकिन मैंने जितना भी कुरआन पढ़ा मुझे ऐसी कोई दलील नहीं मिली।

इसमें कोई शक नहीं कि कुरआन एक बुलंद पाया किताब है और उसका भकाम तीरात और इंजील से बढ़कर है। कदीम दारस्ताने, इस्लामी अहकाम, आदाब, तालीमात और दीगर बातों ने इस किताब को ज्यादा मोअतबर और ज्यादा मुमताज़ बना दिया है लेकिन क्या सिर्फ यह खुसूसी फौकियत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई पर दलील बन सकती है? मैं हैरान हूँ कि एक सहरा नशीन जिसे लिखना और पढ़ना भी न आता हो किस तरह एक ऐसी अरफ़अ व आला किताब इंसानियत के हवाले कर सकता है। यह काम तो कोई पढ़ा लिखा और साहबे इस्तेदाद आदमी भी अपनी पूरी होशमंदी के बावजूद अंजाम नहीं दे सकता। फिर किस तरह एक सहराई अरब बगैर तालीम के एक ऐसी किताब लिख सकता है और जैसा कि मैं पहले भी अर्ज कर चुका हूँ 'क्या यह किताब पैगम्बर की नुबूवत पर दलील हो सकती है?'

मैंने इस बारे में हकीकत जानने के लिये बहुत मुताला किया है। लंदन में जब मैंने एक पादरी के सामने इस मौजूअ को पेश किया तो वह भी कोई काबिले इत्मीनान जवाब न दे सका। तुर्की में भी मैंने शेख अहमद से कई दफा इस मौजू पर बातचीत की मगर वहां भी मुझे इत्मीनान नहीं हुआ। यह बात काबिले जिक्र है कि मैं लंदन के पादरी के मुकाबिल शेख अहमद से इतनी खुल कर गुफ्तगू नहीं कर सकता था इसलिये कि मुझे खतरा था कि कहीं मेरा पोल न खुल जाये या फिर कम से कम पैगम्बर इस्लाम के बारे में उसे मेरी नीयत पर शक न हो जाये। बहरहाल मैं हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कदर व मंजिलत की अज़मत और बुजुर्गी का कायल हूँ। बेशक आप का शुमार उन बा फजीलत अफ़राद में होता है जिनकी कोशिशे तरबियत बशर के लिये नाकाबिले इंकार हैं और तारीख़ इस

बात पर शाहिद है लेकिन फिर भी मुझे उनकी रिसालत में शक है। फिर भी अगर उन्हें पैगम्बरे इस्लाम तसलीम न भी किया जाये तो भी उनकी बुजुर्गी उन अफराद से बढ़कर है जिन्हें हम उजीम समझते हैं। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तारीख के होशमंद तरीन अफराद से ज्यादा होशमंद थे।

अहले सुन्नत कहते हैं : हजरत अबू बकर, उमर और उसमान सलीम आरा की बुनियाद पर हजरत अली से ज्यादा खिलाफत के काम के हकदार थे। इस तरह उन्होंने खुलफा के इन्तेखाब में कौले पैगम्बर को भुला कर बराहे रास्त इकदाम किया। इस तरह के इख्तेलाफात अक्सर अदयान, विलखुसूस ईसाईयत में पाए जाते हैं लेकिन शिया सुन्नी इख्तेलाफ का नाकाबिले समझ पहलू इसका बरकरार या मुसलसल जारी रहना है जो हजरत अली और हजरत उमर के गुजरने के बाद सदियों बाद भी अब तक उसी जोर व शोर से बाकी है। अगर मुसलमान हकीकतन अक्ल से काम लेते तो गुजरी तारीख और भूले जमाने के बजाए आज के बारे में सोचते। एक दफा मैंने शिया सुन्नी इख्तेलाफात के मौजूअ को अपनी नौआबादयाती इलाकों की बजारत के सामने पेश किया और उनसे कहा-

“मुसलमान अगर जिन्दगी के सही मफहूम को समझते तो इन इख्तेलाफात को छोड़ बैठते और वहदत व इत्तेहाद की बात करते।”

अचानक सदरे जलसा ने मेरी बात काटते हुए कहा-

‘तुम्हारा काम मुसलमानों के दर्मियान इख्तेलाफ की आग भड़काना है न यह कि तुम उन्हें इत्तेहाद और एक जेहती की दावत दो।’

ईराक जाने से पहले सेक्रेट्री ने अपनी एक बैठक में मुझसे कहा :

हमफिरे! तुम जानते हो कि जंग और झगड़े इंसान के लिये एक फितरी अमर है और जब से खुदा ने आदम को खलक किया और उसके सुल्ब से हाबील और काबील पैदा हुए इख्तेलाफ ने सर उठाया और अब इसको हजरत ईसा की वापसी तक इसी तरह जारी रहना है। हम इंसानी इख्तेलाफात को पांच बातों पर तकसीम कर सकते हैं।

१. गसली इस्तेलाफात।
२. कबायली इस्तेलाफात।
३. जमीनी इस्तेलाफात।
४. कीमी इस्तेलाफात।
५. मजहबी इस्तेलाफात।

इस सफर में तुम्हारा अहम तरीन काम मुसलमानों के दर्मियान इस्तेलाफात के मुख्तलिफ पहलुओं को समझना और उन्हें हवा देने के तरीकों को सीखना है। इस सिलसिले में जितनी भी मालूमात हासिल हो सके तुम्हें उसकी इस्तेला तंदन के हुक्काम तक पहुंचाना है। अगर तुम इस्लामी ममालिक के बाज़ हिस्सों में सुन्नी शिया फसाद बरपा कर दो तो गोया तुम ने हुक्मते बर्तानिया की अजीम खिदमत की है।

जब तक हम अपने मकबूजा इलाकों में निफ़ाक, तिफ़रका, फसाद और इस्तेलाफ की आग को हवा नहीं देंगे पुर सकून और सुसहाल नहीं हो सकते। हम उस वक्त तक उस्मानी सल्तनत को शिकस्त नहीं दे सकते जब तक उसके हुक्मत में शहर शहर, गली गली फित्ना व फसाद बरपा न कर दें। इतने बड़े इलाके पर अंग्रेजों की मुख्तसर सी काम सिवाए इस हथकंडे के और किस तरह छा सकती है।

पस ऐ हमकिरे तुम्हें चाहिये कि तुम पहले अपनी पूरी कुव्वत सर्फ करके हंगामे, शोर शराबे फूट और इस्तेलाफात की कोई राह निकालो और फिर वहां से अपने काम का आगाज करो। तुम्हें मालूम चुकी है। तुम्हारा फर्ज है कि तुम लोगों को उनके हुक्मरानों के खिलाफ भड़काओ। तारीखी हकायक की बुनियाद पर हमेशा इंकेलाबात हुक्मरानों के खिलाफ अवाम की शोरिश से वजूद में आये हैं। जब कभी किसी इलाके के अवाम में फूट और इन्तेशार पड़ जाये तो कब्जा करने की राह बड़ी आसानी से हमवार हो सकती है।

(4)

बसरा पहुंचकर मैं एक मरिजद में दाखिल हुआ। मरिजद के पेश इमाम अहले सुन्नत के मशहूर आलिम शैख उमर ताई थे। मैंने उन्हें देखकर बड़े अदब से सलाम किया लेकिन शैख इक्तेदाई लम्हा से ही मुझ पर शक हुआ और मेरे हसब नसब और पिछली जिन्दगी के बारे में मुझसे सवालान करने लगा। मेरा ख्याल है कि मेरे चेहरे और लहजे ने उसे शक में डाल दिया था लेकिन मैंने बड़ी तरकीब से अपने आपको उसकी गिरफ्त से बचा लिया और शैख के जवाब में कहा-

मैं तुर्की में वाक़ेय "आगदीर" का रहने वाला हूँ और मुझे कुस्तुनतुनिया के शैख अहमद की शार्गिटी का शर्फ हासिल है। मैंने वहाँ खालिद बढई के पास भी काम किया है।

मुख्तसर यह कि तुर्की में जो कुछ मैंने सीखा था वह सब उससे ब्यान किया। मैंने देखा कि शैख मौजूद लोगों में से किसी को आंख के जरिये इशारा कर रहा है। मालूम होता था कि वह जानना चाहता है कि मुझे तुर्की आती भी है कि नहीं। उस शख्स ने आंखों से हामी मरी। मैं दिल में बहुत खुश हुआ कि मैंने किसी हद तक शैख का दिल जीत लिया है लेकिन कुछ ही देर बाद मुझे अपनी गलतफहमी का एहसास हुआ और मैंने महसूस किया कि शैख का शुबहा अभी अपनी जगह बाकी है और वह मुझे उस्मानियों का जासूस समझता है। मशहूर था कि शैख बसरा के गवर्नर का सख्त मुखालिफ़ था जिसे उस्मानियों ने मोअय्यन किया था।

बहरहाल मेरे पास इसके सिवा कोई रास्ता नहीं था कि मैं शैख उमर की मरिजद से इलाके के एक ग़रीब नवाज मुसाफिर खाना में पुन्तकिल हो जाऊँ। मैंने वहाँ एक कमरा किराए पर लिया। मुसाफिरखाना का मालिक एक अहमक आदमी था जो हर सुबह सवेरे मुसाफिरों को परेशान किया करता था। अज़ान के बाद अंधेरे

मैं मेरा दरवाजा जोर जोर से पीटता था और मुझे नमाज के लिये जगाता था और फिर सूरज निकलने तक कुरआन पढ़ने पर मजबूर करता था। जब मैं उससे कहता कि कुरआन पढ़ना वाजिब नहीं है फिर क्यों तुम्हें इस काम में इतना इसरार है? तो वह कहता कि तुलूअ आफताब से पहले की नींद गरीबी और बढ़ बख्ती लाती है और इस तरह उस मुसाफिरखाना के तमाम मुसाफिर बढ़बख्ती का शिकार हो जायेंगे। मुझे उसकी बात माननी पड़ी क्योंकि वह मुझे यहां से निकल जाने की प्रमत्ती देता था। हर रोज सुबह मैं नमाज के लिये उठता था और फिर एक घंटा या इससे भी ज्यादा वक्त तक कुरआन की तिलावत करता था।

मेरी मुश्किल यही खत्म नहीं हुई। एक दिन मुसाफिर खाने के मालिक मुरशिद आफंदी ने आकर कहा, जब से तुमने इस मुसाफिरखाने में रिहाईश इख्तेयार की है मुसीबतों ने मेरा घर देख लिया है और इसकी वजह तुम और तुम्हारी लाई हुई नहूसत है इसलिये कि तुम ने अभी तक शादी नहीं की है और किसी को अपना शरीक हयात नहीं बनाया है तुम्हें या शादी करनी होगी या फिर यहां से जाना होगा।

मैंने कहा- आफंदी! मैं शादी के लिये सरमाया कहां से लाऊं? इस दफा मैंने अपने आपको शादी के नाकाबिल जाहिर करने से एहतेराज किया क्योंकि मैं जानता था कि मुरशिद आफंदी टोह लगाए बगैर मेरी बात पर यकीन करने वाला आदमी नहीं था।

मुरशिद आफंदी ने जवाब दिया। ओ नाम के जईफुल ऐतकायद मुसलमान! क्या तुमने कुरआन का मुताला नहीं किया है जहां वह फरमाता है-

“वह लोग जो फकर में मुक्तला हैं खुदा वंदे आलम उन्हें अपनी बुजुगी से मालामाल कर देगा।”

मैं हैरान था कि इस नासमझ इंसान से किस तरह पीछा छुड़ाऊं। आखिरकार मैंने उससे कहा, आपका इरशाद बजा है लेकिन मैं रकम

के बगैर कैसे शादी कर सकता हूँ? क्या आप जरूरी अखराजात के लिये मुझे कुछ रकम कर्ज दे सकते हैं? इस्लाम में महर अदा किये बगैर कोई औरत किसी के अक्द में नहीं आ सकती।

आफंदी कुछ देर सोच में पड़ गया और फिर कर्ज हसना की बात करने के बजाए अचानक उसने सर बुलंद किया और ऊंची आवाज में धीखा, मुझे कुछ नहीं मालूम या तुम्हें शादी करनी होगी या फिर रजब की पहली तारीख तक कमरा छोड़ना होगा।

उस दिन जमादिउस्सानी की पांचवी तारीख थी और सिर्फ 25 दिन धेरे पास थे।

इस्लामी महीनों के नामों के बारे में भी यहां कुछ तजकिरा ना मुनासिब न होगा।

1. मुहर्रम
2. सफर
3. रबीउल अब्दल
4. रबीउस्सानी
5. जुमादिलउला
6. जुमादिउस्सानी
7. रजब
8. शावान
9. रमजान
10. शव्वाल
11. जीकादा
12. ज़िलहिज्जा

हर महीना चांद के आगाज से शुरू होता है और 30 दिन से ऊपर नहीं जाता लेकिन कभी कभी चांद 29 दिन का भी होता है।

मुख्तसर यह कि मुसाफिरखाना के मालिक की सख्तगीरी के सबब मुझे वह जगह छोड़ना पड़ी। मैंने यहां भी एक तरखान की दुकान पर इस शर्त के साथ नौकरी कर ली कि वह मुझे रहने और खाने की सहूलत फराहम करेगा और इसको बदले मजदूरी कम देगा। मैं रजब से पहले ही नई जगह मुन्तकिल हो गया और तरखान की दुकान पर पहुंचा। तरखान अब्दुल रजा निहायत शरीफ और मोहतरम शख्स था और मुझसे अपने बेटों जैसा सुलूक करता था।

अब्दुल रजा ईरानी उल अस्ल शिया था, और खुरासान का रहने वाला था। मैंने मौके से फायदा उठाते हुए उससे फारसी सीखना शुरू की। दोपहर के वक्त उसके पास बसरा मैं मुकीम ईरानी जमा होते थे जो सब के सब शिया थे। वहां बैठकर इधर उधर की गुफ्तगू होती थी। कभी सियासत और मइशयत उनवाने कलाम होता और कभी उस्मानी हुकूमत को बुरा भला कहा जाता। खास तौर पर सल्तनते वक्त और इसतंबोल में मुकरर होने वाला खलीफ़े मुस्लेमीन उनकी तनकीद का निशाना होता लेकिन ज्यों ही कोई अजनबी ग्राहक दुकान में आता वह सबके सब खामोश हो जाते और जाती दिलचस्पी के मुताल्लिक गैर अहम बातें होने लगती।

मुझे मालूम नहीं मैं क्योंकर उनके लिये काबिले एतेमाद था और वह मेरे सामने हर किस्म की गुफ्तगू को जायज समझते थे। यह बात मुझे बाद में मालूम हुई कि उन्होंने मुझे आजर बाईजान का रहने वाला ख्याल किया था क्योंकि मैं तुर्की में बात चीत करता था और आजर बाईजानियों की तरह मेरा चेहरा सुर्ख व सफ़ेद था।

उन दिनों जब मैं तरखान का काम करता था मेरी मुलाकात ऐसे शख्स से हुई जो यहां आता जाता था और तुर्की, फारसी और अरबी जुवानों में गुफ्तगू करता था। वह दीनी तालिब इल्मों का लिबास पहनता था। उसका नाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब था। वह एक ऊंचा उड़ने वाला, एक जाह तलब और निहायत गुसीला इंसान था। उसे उस्मानी हुकूमत से सख्त नफरत थी और वह हमेशा उसकी

बुराई करता था लेकिन हुकूमते ईरान से उसको कोई सरोकार नहीं था। तरखान अब्दुल रजा से उसकी दोस्ती की वजह मुश्तरक यह थी कि वह दोनों ही उस्मानी खलीफा को अपना सख्त तरीन दुश्मन समझते थे लेकिन मेरे इल्म में यह बात न आ सकी कि उसने अब्दुल रजा तरखान से किस तरह दोस्ती बढ़ाई थी जबकि यह सुन्नी और वह शिया था। मुझे यह भी नहीं मालूम हो सका कि उसने फारसी कहाँ से सीखी थी? अलबत्ता बसरा में शिया सुन्नी मुसलमान एक साथ जिन्दगी बसर करते थे, और एक दूसरे के साथ उनके रवाबिल भी दोस्ताना थे और वहाँ फारसी और अरबी दोनों जुबानें बोली जाती थी ताहम तुकी समझने वालों की तादाद भी वहाँ कुछ कम न थी।

मुहम्मद अब्दुल वहाब एक आजाद ख्याल आदमी था। उसका जेहन शिया सुन्नी तास्सुबात से बिल्कुल پاک था हालांकि वहाँ के बेस्तर सुन्नी हजरात शियों के खिलाफ थे और बाज सुन्नी मुप्ती शियों की तकफीर भी करते थे। शैख मुहम्मद के नजदीक हनफी, शाफई, हंबली और मालिकी मकातिबे फिक्र में से किसी मकतबे फिक्र की कोई खास अहमियत नहीं थी। वह कहता था कि खुदा ने जो कुछ कुरआन में कह दिया है बस वही हमारे लिये काफी है।

इन चार मकातिबे फिक्र की दास्तान भी कुछ यूँ है कि हजरत पैगम्बरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के सौ साल बाद आलमे इस्लाम में बड़े मर्तबे वाले उलमा का जहूर अमल में आया जिनमें से चार अफराद अबू हनीफा, अहमद बिन हंबल, मालिक बिन अनस और मुहम्मद बिन इदरीस शाफई अहले सुन्नत की पेशवाई के मकाम तक पहुँचे। अब्बासी खुलफा का जमाना था और उन अब्बासी खुलफा ने मुसलमानों पर दबाव डाल रखा था कि वह इन चार अफराद के अलावा किसी की तकलीद न करें अगरचे कोई कुरआन व सुन्नत में इनसे बढ़कर महारत क्यों न रखता हो। अब्बासी खुलफा ने इनके अलावा किसी तर्जुमाकार और आला पाया आलिम को इनके मुकाबिल में उभरने नहीं दिया और इसी तरह दर

हकीकत उन्होंने इल्म के दरवाजे को बंद कर दिया, और यह बात अहले सुन्नत व जमाअत के फिक्री जुमूद का बाइस बनी। इसके बरअक्स शिया हजरात ने अहले सुन्नत की इस पाबंदी और जुमूदी कैफियत से फायदा उठाते हुए अपने अकायद व नजरियात को बड़े पैमाने पर फैलाना शुरू किया और दूसरी सदी हिजरी के शुरू में बावजूद इसके कि शिया आबादी अहले सुन्नत के मुकाबिल में दस फीसद थी इनकी तादाद में मुसलसल इजाफा होने लगा और वह अहले सुन्नत के बराबर हो गये और यह एक फितरी काम था क्योंकि शिया हजरात के पास इज्तेहाद का दरवाजा खुला हुआ था और यह बात मुसलमानों की फिक्र की ताजगी, इस्लामी फिक्ह को आगे बढ़ने और नई रीशनी में कुरआन व सुन्नत को समझने का बाइस बनी और उसी ने इस्लाम को नये जमानों के तकाजों से हम आहंग किया। इज्तेहाद ही वह बड़ा वसीला था जो फिरकी जुमूद से लड़ता रहा और इसके जरिये इस्लाम ने जिंदगी पाई और फिक्रों में इंकलाब लाना हुआ। इस्लाम को चार मकातीबे फिक्र में कैद करना, मुसलमानों के लिये जुस्जतू और तलाश के रास्तों को बंद करना और नई बात से उनकी समाअत को रोकना और वक्त के तकाजों से उन्हें बे तवज्जोह रखना दरअसल छिपा हुआ हथियार था जिसने मुसलमानों को आगे बढ़ने से रोक दिया। जाहिर है कि जब दुश्मन के हाथ में नया हथियार हो और आप अपने पुराने जंग जदा हथियार से उसका मुकाबला करेंगे तो यकीनन जल्द या देर आपको नुकसान उठाना पड़ेगा। मैं पेशेनेगोई से काम लेते हुए यह कहूंगा कि अहले सुन्नत के अक्लमंद अफराद बहुत जल्द ही मुसलमानों पर इज्तेहाद का दरवाजा खोल देंगे और यह काम मेरे अंदाजे के मुताबिक अगली सदी तक अमल में आयेगा और सौ साल बाद मुसलमानों में इज्तेहाद की हिमायत करने वाले शियों की अक्सरियत और अहले सुन्नत अकलियत में रह जायेंगे।

अब मैं शैख मुहम्मद अब्दुल वहाब के बारे में अर्ज करूँ कि यह

सल्लस कुरआन व हदीस का अच्छा मुताला रखता था और अपने अफकार की हिमायत में बुजुर्गाने इस्लाम के अकवाल व आरा को बतौरे सनद पेश करता था लेकिन कभी कभी उसकी फिक मशाहीर उलमा के खिलाफ होती थी। यह बात बात पर कहता -

पैगम्बरे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर्फ किताब और सुन्नत को नाकाबिले तगय्युर उसूल बनाकर हमारे लिये पेश किया और कभी यह नहीं कहा कि सहाबाए किराम और आइम्मे दीन के फरमान अटल और नाजिल की गयी वही है। पर हम पर वाजिब है कि हम सिर्फ किताब व सुन्नत की पैरवी करें। उलमा, चार आइम्मा अरबा हत्ता कि सहाबा की राय चाहे कुछ भी क्यों न हो हमें उनके इत्तेफाक व इख्तेलाफ पर अपने दीन को इस्तवार नहीं करना चाहिये।

एक दिन उसकी ईरान से आने वाले एक आलिम से खाने के दस्तरख्यान पर झड़प हो गयी। इस आलिम का नाम शेख जव्वाद कुम्मी था और उसे अब्दुल रजा तरखान ने अपने पास मेहमान बुलाया था। शेख जव्वादकुम्मी के मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से उसूली इख्तेलाफात थे और उनकी गुप्तगू ने जल्द ही तलखी और तुरशी का रंग इख्तेयार कर लिया।

मुझे उनके दर्मियान होने वाली तमाम गुप्तगू तो याद नहीं अलबत्ता जो जो हिस्से मुझे याद हैं मैं उनको यहां पेश करना चाहता हूँ-

शेख कुम्मी ने इन जुमलों से अपनी गुप्तगू का आगाज किया और मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से कहा -

“अगर तुम एक आजाद ख्याल इंसान हो और अपने दावे के मुताबिक इस्लाम का काफी मुताला कर चुके हो तो फिर क्या वजह है कि तुम हजरत अली को वह फजीलत नहीं देते जो शिया देते हैं?”

मुहम्मद ने जवाब दिया, “इसलिये कि हजरत उमर और दीगर अफराद की तरह उनकी बातें भी मेरे लिये हुज्जत नहीं हैं। मैं सिर्फ

किताब व सुन्नत को मानता हूँ।”

कुम्भी: “अच्छा अगर तुम सुन्नत के आमिल हो तो क्या पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नहीं कहा था “मेरे शहर इत्म हूँ और अली उसका दरवाजा है” और क्या यह कहकर पैगम्बर ने अली और सहाबा के दर्मियान फर्क कायम नहीं किया?”

मुहम्मद : अगर ऐसा ही है तो फिर पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कहना चाहिये था मैं तुम्हारे दर्मियान दो चीजें छोड़ जाता हूँ एक किताब और एक अली बिन अबू तालिब।

कुम्भी : बेशक यह बात भी पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मुकाम पर कही है - मैंने तुम्हारे दर्मियान एक किताब और अहले बैत को छोड़ा है। बेशक अली अहले बैत के बड़े लोगों में से हैं।

मुहम्मद ने इस हदीस को झुटलाया लेकिन शैख कुम्भी ने उसूलों काफ़ी के इसनाद की बुनियाद पर पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस हदीस को साबित किया और मुहम्मद को खामोश होना पड़ा। अब उसके पास कोई जवाब नहीं था, अचानक उसने शैख पर एतेराज ठोका, पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे लिये सिर्फ किताब और अपने अहले बैत को बाकी रखा है तो फिर सुन्नत कहाँ गयी?

कुम्भी ने जवाब दिया सुन्नत इसी किताब की तफ़सीर व तशरीह का नाम है और इसके अलावा कुछ भी नहीं। पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है अल्लाह की किताब और मेरे अहले बैत यानी किताबे खुदा इस तशरीह व तफ़सीर के साथ जो सुन्नत कहलाती है और इसके बाद सुन्नत की तफ़सीर की जरूरत नहीं रहती।

मुहम्मद ने कहा, अगर आपके दावे के मुताबिक इतरत या अहले बैत ही कलामे इलाही की तफ़सीर हैं तो फिर क्यों मतने हदीस में उसका इजाफ़ा हुआ है।

कुम्भी ने जवाब दिया : जनाबे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की वफात के बाद उम्मत मुहम्मदी को कुरआन समझाने वाले की अशद जरूरत थी क्योंकि कौम अपनी जिन्दगी को अहकामे इलाही पर मुक्तधिक करना चाहती थी इसलिये पैगम्बर इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने गैबी इल्म की बुनियाद पर किताबे इलाही को असले साबित और इतरत (अहले बैत) को मुफस्सिर व शारेहे किताब बनाकर उम्मत के हवाले किया।

हेरानी के साथ साथ मुझे उनकी गुफ्तगू से बड़ा मजा आ रहा था। मैंने देखा कि मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब उस बूढ़े शैख जवाद कुम्भी के आगे एक ऐसी चिड़िया की मारिंद फड़ फड़ा रहा था जिसे बिजरे में बंद कर दिया गया हो और उसके परवाज की राह बंद हो गयी हो।

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से मेल जोल और मुलाकातों के एक सिलसिले के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा की वर्तानवी हुकूमत के मकासिद को अमली जामा पहनाने के लिये यह शख्स बहुत मुनासिब दिखाई देता है। इसकी ऊंचा उड़ने की ख्वाहिश जाह तलबी, गुरुर, उलेमा और मशायखे इस्लाम से इसकी दुश्मनी, इस हद तक खुदसरी की खुलफाए राशिदीन भी इसकी तनकीद का निशाना बनें और हकीकत के सरासर खिलाफ कुरआन व हदीस से मतलब निकालना इसकी कमजोरियां थी जिससे बड़ी आसानी से फायदा उठाया जा सकता था।

मैंने सोचा कहाँ यह मगरूर नौजवान और कहाँ इस्तंबोल का वह तुर्क बूढ़ा आदमी (अहमद आफंदी) जिसके अफकार व किरदार गोया हजार पहले के अफराद की तसवीर कशी करते थे। उसने अपने अंदर जरा भी तबदीली पैदा नहीं की थी। हनफी मजहब से ताल्लुक रखने वाला वह बूढ़ा आदमी अबू हनीफा का नाम जुवान पर लाने से पहले उठकर वुजू करता था य मसलन सही बुखारी के मुताला को अपना फर्ज समझता था जो अहले सुन्नत के नजदीक हदीसों की निहायत मोअतबर और मुस्तनद किताब है और वहां भी वह वुजू के

बगीर किताब को नहीं छूता था और इसके बिल्कुल बर अकरा शेख मुहम्मद बिन अब्दुल पहाब अबू हनीफा की सहकीर करता था और उसे नाकाबिले एतेबार समझता था। मुहम्मद कहता था मैं अबू हनीफा से ज्यादा जानता हूँ उसका दावा था कि आधी सही बुखारी बिल्कुल लख्खर और बेहूवा है।

बहर सूरत मैंने मुहम्मद से बहुत गहरे ताल्लुकात कायम कर लिये और हमारी दोस्ती में नाकाबिले जुदाई मजबूती पैदा हो गई। मैं बार बार इसके बानों में यह रस घोलता था कि खुदा ने तुम्हें हजरत अली और हजरत उमर से कहीं ज्यादा सलाहियती वाला बनाया है और तुम्हें बड़ी फजीलत और बुजुर्गी बख्शी है। अगर तुम जनाव रितालत मआब के जमाने में होते तो यकीनन उनकी जानशीनी का शर्फ तुम्हें ही मिलता। मैं हमेशा उम्मीद भरे लहजे में उससे कहता -

“मैं चाहता हूँ कि इस्लाम में जिस इंकेलाब को जाहिर होना है वह तुम्हारे ही पुवारक हाथों से अंजाम पजीर हो इसलिये कि सिर्फ तुम ही वह शख्सियत हो जो इस्लाम को जवाल से बचा सकते हो और इस सिलसिले में सबकी उम्मीदें तुम से लगी हैं।

मैंने मुहम्मद के साथ तय कि कि हम दोनों बैठकर उलमा, मुफत्सेरीन, पेशवायाने दीन व मजहब और सहाबा-ए किराम से हट कर नये अफकार की बुनियाद पर कुरआन मजीद पर गुफ्तगू करें। हम कुरआन पढ़ते और आयात के बारे में इजहारे ख्याल करते। मेरा मंसूबा यह था कि मैं किसी तरह उसे अंग्रेजों की आबादयाती इलाकों की युजारत के दाम में फंसा दूँ।

मैंने आहिस्ता आहिस्ता उस ऊँची उद्धान वाले खुद परस्त इंसान को अपनी गुफ्तगू की लपेट में लेना शुरू किया और यहां तक कि उसने हकीकत से कुछ ज्यादा ही आजाद ख्याल बनने की कोशिश की।

एक दिन मैंने उससे पूछा, क्या जिहाद वाजिब है?

उसने कहा क्यों नहीं, खुदावंदे आलम फरमाता है काफिरों से

जंग करो।

मैंने कहा, खुदा बंदे आलम फरमाता है काफिरो और मुनाफिको दोनों से जंग करो और अगर काफिरो और मुनाफिको से जंग वाजिब है तो फिर पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुनाफिको से क्यों जंग नहीं की?

मुहम्मद ने जवाब दिया, जिहाद सिर्फ मैदाने जंग ही में नहीं होता, पैगम्बर खुदा ने अपनी रफतार व बातचीत के जरिये मुनाफिको से जंग की है।

मैंने कहा, फिर इस सूरत में कुपफार के साथ जंग भी रफतर व बातचीत के साथ वाजिब है।

उसने जवाब दिया नहीं इसलिये कि पैगम्बर ने जंग के मैदान में उनके साथ जिहाद किया है।

मैंने कहा, कुपफार के साथ रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जंग अपने दिफाअ के लिये थी क्योंकि वह उनकी जान के दुश्मन थे।

मुहम्मद ने हां में अपना सर हिलाया और मैंने महसूस किया कि मैं अपने काम में कामयाब हो गया हूं।

एक और दिन मैंने उससे कहा, क्या औरतों के साथ मुतआ जायज है?

उसने कहा, हरमिज नहीं।

मैंने कहा, फिर क्यों कुरआन ने इसे जायज करार देते हुए कहा है, "और जब तुम इनसे मुतआ करो तो उनका महर अदा करो।"

उसने कहा, "हां आयत तो अपनी जगह ठीक है मगर हजरत उमर ने इसे यह कह कर हराम करार दिया कि मुतआ पैगम्बर के जमाने में हलाल था मैं उसे हराम करार देता हूं और अब जो इसका पुरतकिय होगा मैं उसे सजा दूंगा।"

मैंने कहा, बड़ी अजीब बात है तुम तो हजरत उमर की पैरवी करते हो और फिर अपने आप को उससे ज्यादा साहबे अक्ल भी कहते हो। हजरत उमर को क्या हक पहुंचता है कि वह हलाले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हराम करें। तुमने कुरआन को भुलाकर हजरत उमर की राय को तसलीम कर लिया?

मुहम्मद ने चुप्पी साध ली और खामोशी उसकी रजामंदी की दलील थी। इस मौजूअ पर उसके ख्यालात दुरुस्त करके मैंने उसके जिन्सी गरीजा को उभारना शुरू किया। वह एक गैर मुताहिहल शाख्स था। मैंने उससे पूछा "क्या तुम मुतआ के जरिये अपनी जिन्दगी पुर मसरत बनाना चाहते हो?"

मुहम्मद ने रजा और रगवत की अलामत से अपना सर झुका लिया।

मैं अपने फरायज के इंतेहाई अहम मोड़ पर पहुंच चुका था। मैंने उससे वादा किया कि मैं बहरहाल तुम्हारे लिये इसका इंतेजाम करूंगा। मुझे सिर्फ इस बात का डर था कि कहीं मुहम्मद बसरा के उन सुन्नियों से खौफजदा न हो जाये जो इस बात के मुखालिफ थे। मैंने उसे इत्मीनान दिलाया कि हमारा प्रोग्राम बिल्कुल छिपा रहेगा यहां तक कि औरत को भी तुम्हारा नाम नहीं बताया जायेगा। इस गुप्तगू के फौरन बाद मैं उस बंद किरदार नसरानी औरत के पास गया जो इंगलिस्तान के नौ आबादयाती इलाकों की बुजारत की तरफ से बसरा में जिसम फरोशी पर मामूर थी और मुस्लिम नौजवानों को बे राह रवी पर उभारती थी। मैंने उससे तमाम वाकियात ब्यान किये। जब वह राजी हो गयी तो मैंने उसका आरजी नाम "सफिया" रखा और कहा कि मैं शैख को लेकर उसके पास आऊंगा।

मुकरररा दिन मैं शैख को लेकर सफिया के घर पहुंचा। हम दोनों के सिवा वहां और कोई नहीं था। मुहम्मद ने एक अशरफी महर पर एक हफ्ते के लिये सफिया से निकाह किया। मुख्यसर यह कि मैं बाहर और सफिया अंदर से मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अपने

आइंदा के प्रोग्रामों के लिये तैयार कर रहे थे। सफिया ने अहकामे दीन की पामाली और आजादीए राय का पुर कैफ मज़ा मुहम्मद को बखा दिया था।

मैं इस प्रोग्राम के तीसरे दिन फिर मुहम्मद से मिला और हमने एक बार फिर अपनी गुफ्तगू का सिलसिला जारी किया। इस बार गुफ्तगू शराब की हुरमत के मुताल्लिक थी। मेरी कोशिश थी कि मैं उन आयात को रद्द करूं जो मुहम्मद के नजदीक हुरमते शराब पर दलील थी। मैंने उससे कहा, "अगर मुआविया, यजीद, खुलफाए बनू उमैय्या और बनी अब्बास की शराब नोशी हमारे नजदीक मुसल्लम हो तो क्योंकर हो सकता है कि यह तमाम पेशवायाने दीन व मज़हब गुमराही की जिन्दगी बसर करते हों और तंहा तुम सच्चे रास्ते पर हो? बेशक वह लोग किताबे इलाही और सुन्नते रसूल को हम से ज्यादा बेहतर जानते थे। तब यह बात सामने आती है कि इरशादाते खुदा और रसूल से उन बुजुर्गों ने जो मतलब निकाला था वह शराब की हुरमत नहीं बल्कि उसकी कराहत थी। इसके अलावा यहूद व नसारा की मुकद्दस किताबों में साफ़ तौर से शराब पीने की इजाजत है हालांकि यह भी इलाही अदयान हैं और इस्लाम इन अदयान के पैगम्बरों का मोअतकिद है। यह कैसे मुमकिन है कि शराब अल्लाह के भेजे हुए एक दीन में हलाल और दूसरे में हराम हो? क्या यह सब अदयान सच्चे या खुदाए यकता के भेजे हुए नहीं हैं? हमारे पास तो यह भी रिवायत है कि हज़रत उमर उस वक्त तक शराब पीते रहे जब तक यह आयत नाज़िल नहीं हुई क्या तुम शराब और जुए से अलग नहीं होंगे, अगर शराब हराम होती तो रसूले खुदा हज़रत उमर की शराब नोशी पर हद जारी फरमाते मगर आपका उन पर हद जारी न करना इस बात की दलील है कि शराब हराम नहीं है।

मुहम्मद जो बड़े गौर से मेरी गुफ्तगू सुन रहा था अचानक संभला और कहा "रिवायात में है कि हज़रत उमर शराब में पानी मिलाकर पीते थे ताकि उसकी वह कैफियत दूर हो जाये जो नशा पैदा करती

है। वह कहते थे कि शराब की मस्ती हराम है न कि खुद शराब। वह शराब जिससे नशा तारी न हो हराम नहीं है।”

मुहम्मद, हजरत उमर के इस नजरिये को इस आयत की रीशनी में दुरुस्त जानता था जिसमें इरशाद होता है शैतन चाहता है कि तुम्हारे दमियान शराब और जुए के जरिये अदाबत और दुश्मनी पैदा करे और तुम्हें पादें खुदा और नमाज़ से बाज़ रखे।

अगर शराब में मस्ती और नशा न हो तो पीने वाले पर उसके असरात मुरत्ताब नहीं होंगे और इसीलिये वह शराब जिसमें मस्ती नहीं हराम नहीं है।

मैंने मुहम्मद के साथ शराब से मुताल्लिक गुप्तगू को सफिया को बताया और उसे ताकीद की कि मौका मिलते ही मुहम्मद को नशे में घूर कर दो और जितना हो सके शराब पिलाओ।

दूसरे दिन सफिया ने मुझे इत्तेला दी कि उसने शेख के साथ जी खोलकर शराब नोशी की यहां तक कि वह आपे से बाहर हो गया और चीखने बिल्लाने लगा। रात की आखरी घड़ी में कई मर्तबा मैंने उससे मिलन की और अब उस पर कमजोरी का आलम तारी है और चेहरे की चमक खत्म हो चुकी है। खुलासा कलाम यह कि मैं और सफिया पूरी तरह मुहम्मद पर छा चुके थे। इस मंज़िल पर मुझे नौआबादयाती इलाकों के वजीर की वह सुनहरी बात याद आयी जो उसने मुझे अलबिदा कहते वक़्त कही थी। उसने कहा था -

“हमने स्पेन को कुफ़कार (मुराद अहले इस्लाम हैं) से शराब और जुए के जरिये दोबारा हासिल किया। अब इन्हीं दो ताकतों के जरिये दूसरे इलाकों को भी हिम्मत के साथ वापस लेना है।”

मुहम्मद के साथ मजहबी गुप्तगू के दौरान एक दिन मैंने रोज़ा के मसले को हवा दी और कहा, “कुरआन कहता है रोज़ा तुम्हारे लिये बेहतर है” उसने यह नहीं कहा कि तुम पर वाजिब है लिहाज़ा इस्लाम में रोज़ा वाजिब नहीं मुस्तहब है।”

इस मौके पर मुहम्मद को गुस्सा आया और उसने कहा तुम मुझे दीन से खारिज करना चाहते हो?

मैंने कहा, "ऐ मुहम्मद! दीन दिल की पाकी, जान की सलामती और एतेदाल का नमा है। यह कफियात इंसान को दूसरों पर जुल्म व ज्यादाती से रोकती है। क्या हजरत ईसा ने यह नहीं कहा कि मजहब इश्क व वारफतगी का नमा है। क्या कुरआन यह नहीं कहता, "यकीन हासिल करने तक अल्लाह की इबादत करो।" अब अगर इंसान यकीने का मिल की मंजिल पर पहुंच जाये खुदा और रोजे कयामत उसके दिल में बैठ जाये, ईमान से उसका दिल भर जाये और वह अच्छे सुलूक का हमिल हो तो फिर रोजे की क्या जरूरत बाकी रह जाती है? इस मंजिल में वह आला तरीन इंसानी मरतबों से जुड़ जाता है।

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने इस मर्तबा मेरी शदीद मुखालेफत की और अपनी नाराजगी का इजहार किया। फिर एक दफा मैंने उससे कहा नमाज वाजिब नहीं?

उसने पूछा "क्यों?"

मैंने कहा इसलिये कि खुदावंदे आलम ने कुरआन में कहा है कि- "मुझे याद करने के लिये नमाज कायम करो।" पस नमाज मकसद जिक्रे इलाही है और तुम्हें चाहिये कि तुम उसका नाम अपनी जुबान पर जारी रखो।"

मुहम्मद ने कहा, "हां मैंने सुना है कि बाज उलमाए दीन नमाज के वक़्त अल्लाह के नाम की तकरार शुरू करते हैं और नमाज अदा नहीं करते।"

मैं मुहम्मद के इस एतेराफ से बहुत ज्यादा खुश हुआ मगर एहतियातन कुछ देर मैं उसे नमाज पढ़ने की तलकीन भी की जिसका नतीजा यह निकला कि उससे नमाज की पाबंदी छूट गयी। अब वह कभी नमाज पढ़ता और कभी न पढ़ता। खास तौर से सुबह की

नमाज गालिबन उराने तक ही कर दी थी। हम लोग रात को देर तक जागते जिसकी वजह से सुबह उठने और बुजू करने की उसमें हिम्मत बाकी नहीं रहती थी।

किस्ता मुख्यसर आहिस्ता आहिस्ता मैं मुहम्मद के बदन से ईमान का लिबादा उतारने में कामयाब हो गया। मैं हर रोज उससे अपनी मीठी गुप्तगू का सिलसिला जारी रखता। अंजाम कार एक दिन मैंने गुप्तगू की हुदूद को जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जाते अकदस तक आगे बढ़ाया। अचानक उसके चेहरे पर तबदीली आई और वह इस मौजूअ पर गुप्तगू के लिये तैयार नहीं हुआ। उसने मुझसे कहा, "अगर तुमने रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में गुस्ताखी की तो हमारी तुम्हारी दोस्ती के दरवाजे यहीं से हमेशा के लिये बंद हो जायेंगे।" मैंने अपनी मेहनत पर पानी फिरते देखा तो फौरन अपना मौजूए गुप्तगू बदल दिया और फिर इस मौजू पर गुप्तगू नहीं की।

उस दिन के बाद से मेरा मकसद मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को रहबरी और पेशवाई की फिक्र देना हो गया। मुझे उसके कल्ब व रुह में उतरकर शिया सुन्नी फिरकों के अलावा इस्लाम में एक तीसरे फिरके की सरबराही की पेश कश को उसके लिये काबिले अमल बनाना था। इस मकसद के हुसूल के लिये जरूरी था कि पहले मैं उसके जेहन को बेजा मुहब्बतों और अंधे तारसुबात से پاک कर दूं और इस उनवान से उसकी आजाद ख्याली और बुलंद परवाजी को तकवियत पहुंचाऊं। इस काम में सफिया भी मेरी मददगार थी क्योंकि मुहम्मद उसे दीवानों की तरह चाहता था और हर हफ्ता मुतआ की मुहत को बढ़ाता जाता था। मुख्यसर यह कि सफिया ने मुहम्मद से सब व करार और उसके तमाम इच्छेयारात छीन लिये थे।

मैंने अपनी एक मुलाकात में मुहम्मद से कहा, "क्या यह दुरुस्त है कि जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम असहाय से दोस्ती थी?"

उसने जवाब दिया, "हां।"

मैंने पूछा "इस्लाम के कवानीन दायमी (हमेशा के लिये) हैं या बर्तनी?"

उसने कहा, "बेशक दायमी हैं," इसलिये कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि हलाले मुहम्मद कयामत तक हलाल और हरामे मुहम्मद कयामत तक हराम है।"

मैंने बिला ताखीर कहा, "पस हमें भी उनकी सुन्नत पर अमल करते हुए एक दूसरे का दोस्त और भाई बनना चाहिये।"

उसने मेरी पेशकश को कबूल किया और उस दिन के बाद से तमाम सफर व हजर में हम एक दूसरे के साथ रहने लगे।

मैं इस कोशिश में था कि जिस पौधे को सींचने में मैंने अपनी जवानी के दिन खर्च किये हैं अब जितनी जल्दी हो सके उसके फलों से फायदा हासिल करूं।

हस्बे मामूल मैं अपनी हर महीने की रिपोर्ट इंग्लिस्तान में नौ आबादयाती इलाकों की बजारत को भेजता रहा। रिपोर्ट लिखना अब मेरी आदत में शामिल हो गया था जिसमें कभी मैं कोताही नहीं करता था। वहां से जो जवाबात लिखे जाते थे वह तमाम के तमाम बड़े हौसला अफजा और उम्मीद भरे हुआ करते थे। और अपने फरायज को अंजाम देने में मेरी हिम्मत बढ़ाते थे। मैं और मुहम्मद ने जिस रास्ते को चुना था हम उसे बड़ी तेजी से तय कर रहे थे। मैं सफर और हजर में कभी उसको तंहा नहीं छोड़ता था। मेरी कोशिश यही थी कि मैं आजाद ख्याली और मजहबी अकायद में जिदत पसंदी की रुह को इसके बजूद में मजबूत करूं। मैं हमेशा उसको यह आस दिलाता रहता था कि एक रौशन मुस्तकबिल तुम्हारे इंतजार में है।

एक दिन मैंने उससे अपना एक झूटा ख्याब ब्यान किया और

कहा, रात में जनाब खतमी मस्तगत को बिल्कुल उसी सरापा के साथ कुर्सी पर बैठे देखा जैसे जाकिरीन और वायेजीन मिम्बरों पर ध्यान करते रहते हैं। बड़े बड़े उलमा और बुजुर्गाने दीन ने जिनसे मेरी कोई वाकफियत नहीं थी चारों तरफ से उनको घेर रखा था। ऐसे में मैंने देखा कि अचानक तुम उस भीड़ में दाखिल हो गये तुम्हारे चेहरे से नूर की किरणें फूट रही थी। जब तुम रिसालते मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पहुंचे तो उन्होंने खड़े होकर तुम्हारी ताजीम की और माथा चूमा और कहा, "ऐ मेरे हमनाम मुहम्मद तुम मेरे इल्म के वारिस और मुसलमानों के दीनी और दुनियावी कामों को संवारने में मेरे जानशीन हो।"

वह सुनकर तुमने कहा, "या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! लोगों पर अपने इल्म को जाहिर करते हुए मुझे खीफ महसूस होता है।"

जनाबे रिसालत मआब ने फरमाया, "खीफ को अपने दिल में जगह न दो क्योंकि जो कुछ तुम अपने बारे में सोचते हो इससे कहीं ज्यादा साहबे मर्तबा हो।"

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने मेरे इस मन घड़त ख्याब को सुना तो खुशी से फूला नहीं समाया। वह बार बार मुझसे पूछता था क्या तुम्हारे ख्याब सच्चे होते हैं? और मैं उसे मुसलसल इत्मीनान दिलाता रहा। मैंने महसूस किया कि ख्याब के तजकिरे के साथ ही उसने अपने दिल में नये मजहब के ऐलान का पक्का इरादा कर लिया है।

(5)

इसी दौरान लंदन से मुझे खत पहुंचा कि मैं फौरन करबला और नजफ के उन मुकद्दस शहरों की तरफ रवाना हो जाऊं जो शियों के लिये क़िब्लाए आरजू और इल्म व रुहानियत के मरकज हैं। अब सबसे पहले मैं मुकद्दमा के तौर पर उन दोनों मुकद्दस शहरों का एक निहायत मुख्तसर तारीखी पस मंजर पेश करना चाहता हूं।

अहले तशीअ के पहले इमाम और आमातुल मुस्लेमीन के चौथे खलीफा हजरत अली की तदफीन शहर नजफ की अहमियत का आगाज है और यहीं से इस बस्ती का वजूद अमल में आता है और यह रोज बरोज फैलती चली जाती है और यह शिलसिला आज तक जारी है। हजरत अली की शहादत के वक्त मर्कजे ख़िलाफत यानी कूफा से नजफ का फासला छः किलोमीटर था जिसे पैदल एक घंटे में तय किया जा सकता था। आपकी शहादत के बाद जनाब हसनैन आपके जनाजे को पोशीदा तौर पर इस दूर दराज इलाके में लाये जिसे आज नजफ कहा जाता है और रात की तारीकी में आपको दफन कर दिया। अब यह शहर बेनुन्नहरेन का सबसे बड़ा इलाका कहलाता है और इसकी आबादी कूफा से कहीं ज्यादा है। इस जगह अहले तशीअ का होजा-ए-इलमिया कायम है और दुनिया भर के उलमा ने इस शहर में बसेर इख्तेयार किया है। हर साल इसके बाजारों, मदरसों और घरों में इजाफा होता चला जा रहा है। शिया उलमा खुसूसी एहतेराम के हामिल हैं। इसतंबोल में रहने वाले उस्मानी खलीफा मुंदरजा जैल वजूहात की बिना पर उनका बड़ा एहतेराम करता था।

१. ईरान का बादशाह शिया मजहब का पैरोकार था और उलमाए नजफ की निसबत उस्मानी सलातीन का एहतेराम ईरान और तुर्की के दोस्ताना रवाबित में मजबूती का बाइस था और इस तरह दोनों मुल्कों में जंग का खटका खत्म हो जाता था।

२. नजफ के आसपास में बहुत से कबीले आबाद थे जो सबके सब हथियार बंद और सरस्ती से शिया मराजेअ के पैरोकार थे। उनके

पास फौजी हथियार और फौजी तर्बियत नहीं थी। यह लोग कबायली जिन्दगी के आदी थे लेकिन उलमा की तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकते थे लिहाजा अगर उस्मानियों की तरफ से उलमा की वे एहतेरामी होती तो वह सबके साथ उस्मानियों के खिलाफ मुत्तहिद हो जाते और यह कोई अकलमंदी की बात न थी कि इसतंबोल की खिलाफत ऐसा खतरा अपने लिये मोल लेती।

3. सारी दुनियाए तशीअ में शिया उलमा की मरजिइयत कायम थी लिहाजा अगर उस्मानियों की तरफ से ज़रा बराबर भी उनकी अहानत होती तो ईरान, हिंदुस्तान, अफ्रीका और दुनिया के तमाम मुल्कों के शिया बर भड़क जाते और यह बात तुर्क हुकूमत के हक में न थी।

अहले तशीअ का दूसरा मुकद्दस शहर करबला मोअल्ला है। यह शहर भी हजरत अली और हजरत फातिमा के फरजंद हजरत इमाम हुसैन की शहादत के बाद आज तक मुसलसल फैल रहा है। ईराक के लोगों ने इमाम हुसैन को दावत दी कि आप मुसलमानों के अमरे खिलाफत को संभालने के लिये हिजाज़ से कूफा तशरीफ लायें लेकिन ज्यों ही आप अपने खानदान के साथ करबला पहुंचे जो कि कूफा से तकरीबन ७२ किलोमीटर के फासले पर है ईराक के लोगों का मिजाज बदल गया और वह यजीद के हुक्म पर इमाम के खिलाफ लड़ने पर तैयार हो गये।

यजीद बिन मुआविया उमवी खलीफा था जिसकी शाम पर हुकूमत थी। उमवी लश्कर हुसैन और उनके घराने से लड़ने लगा और आखिरकार उन सबको कत्ल कर दिया। ईराकियों की यह बुजदिली और यजीदी लश्कर की पलीदी और संगदिली इस्लामी तारीख की सबसे ज्यादा शर्मनाक दास्तान है। इस वाकिये के बाद से आज तक दुनिया के तमाम शिया करबला को जियारत, इबादत, रूहानी लगाव और तवज्जोह का मर्कज बनाये हुए हैं और हर तरफ से जूक दरजूक वहां पहुंचते हैं। कभी तो इतना मजमा होता है कि तारीखे मसीहियत में कभी ऐसा इज्तेमाअ देखने में नहीं आया। करबला के शहर में भी

शिया उलमा और मराजेअ दीने इस्लाम की तालीम व तरवीज में हमेशा मसरूफ नजर आते हैं। यद्वा के दीनी मदरसे तालिम इल्मों से भरे रहते हैं। करबला और नजफ बिल्कुल एक दूसरे के मुमासिल हैं। दजला व फुरात ईराक के दो बड़े दरिया हैं जिनका सर घश्मा तुर्की का एक कोहिस्तानी इलाका है बैनुन्नहेरेन की खेतियां इसी के दम से आबाद हैं और यहां के लोगों की खुशहाली इन्हीं दरियाओं की बदीलत है।

जब मैं लंबन वापस गया तो मैंने नीआदयाती इलाकों की वजारत को यह पेशकश की कि वह हुक्मते ईराक को अपना फरमावदार बनाने के लिये दजला व फुरात के संगम को कंट्रोल करे और शोरिश और बगावत के मौकों पर उसके रास्ते को तबदील करे ताकि वहां के लोग अंग्रेजों के इस्तेमारी मकासिद को मानने पर मजबूर हो जायें।

मैं एक बरबरी सौदागर के भेस में नजफ पहुंचा और वहां के शिया उलमा से रस्म व राह बढ़ाने के लिये उनकी दरसी मजलिसों और बहस की महफिलों में शिकत करने लगा। महफिलें बेहतर औकात मुझे अपने अंदर जज्ब कर लेती थीं क्योंकि उनमें क़त्ब व जमीर की पाकी हुक्म फरमा थी। मैंने शिया उलमा को इंतहाई पाक दामन और परहेजगार पाया लेकिन अफसोस कि उनमें जमाने की तबदीली के असरात की कमी थी और दुनिया के इंकलाबात ने उनकी फिक्र में कोई तबदीली पैदा नहीं की थी।

१. नजफ के उलमा और मराजेअ उस्मानी हुक्काम के शदीद मुखालिफ थे इसलिये नहीं कि वह सुन्नी थे बल्कि इसलिये कि वह जालिम थे और अवाम उनसे नाखुश थे और अपनी निजात के लिये उनके पास कोई रास्ता नहीं था।

२. वह लोग अपना तमाम वक्त दर्स व तदरीस और दीनी उलूम व बहसों पर सर्फ करते थे और कुरुने बुरस्ता के पादरियों की तरह उन्हें जदीद उलूम से दिलचस्पी नहीं थी और अगर कुछ जानते भी थे तो वह उनके लिये न जानने के बराबर था।

3. उन्हें दुनिया के सियासी वाकियात का बिल्कुल इल्म न था और इस किसम के मसायल पर सोचना उनके नजदीक बिल्कुल बेकार और बेहूदा था। उन्हें देखकर मैं आप ही आप कहता था वाकई यह लोग कितने बंद बख्त हैं दुनिया जाग चुकी है मगर यह अभी ख्याबे खरगोश ही में पड़े हैं। शायद कोई तबाह युन मौज ही इनको इस ख्याबे गिरां से बेदार करे। मैंने बाज़ उलमा से खिलाफते उस्मानिया के खिलाफ सहरीक चलाने पर गुप्तगू की लेकिन उन्होंने अपनी तरफ से कोई रद्दे अमल जाहिर नहीं किया और ऐसा मालूम होता था कि वह लोग इस किसम के मसायल से दिलचस्पी नहीं रखते। बाज़ लोग मेरा मजाक उड़ाते थे और मेरी बात का यह मतलब निकालते थे कि मैं दुनिया के हालात को खराब और नजमे आलम को बरहम करना चाहता हूँ। उन उलमा की नज़र में खिलाफत मकदूर व महतूम थी। उनका अकीदा था कि उन्हें ज़हेर मेहदी मौऊद से पहले आते उस्मान के खिलाफ कोई इकदाम नहीं करना चाहिये। मेहदी मौऊद शिरो के बारहवें इमाम हैं जो बचपन ही से पर्दे गैबत में चले गये हैं और अभी तक जिन्दा हैं। आखिरी जमाने में उनका जुहर होगा और वह उस वक्त दुनिया को अदल व इंसाफ से भर देंगे, जब वह मुकम्मल तौर पर जुल्म व ज़्यादती से भर चुकी होगी।

मैं इस तरह के अकीदा रखने वाले इस्लामी दानिशमंदों के बारे में सख्त हैरान था। उनका अकीदा कशरी ईसाईयों की तरह का अकीदा था जो कयामे अदल के लिये हजरत ईसा की वापसी को मानते थे। मैंने एक आलिम से पूछा क्या आपका यह अकीदा नहीं है कि अभी से जुल्म व ज़्यादती के खिलाफ लड़ते हुए दुनिया में इस्लाम का बोल बाला किया जाये? बिल्कुल उसी तरह जैसे पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जालिमों के खिलाफ जिहाद किया था?

उन्होंने फरमाया पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खुदा ने इसी काम के लिये मामूर किया था और इसी लिये उनमें इस काम को अंजाम देने की ताकत थी।

घने कहा, क्या कुरआन यह नहीं कहता कि "अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो अल्लाह भी तुम्हारा मददगार होगा।" लिहाजा तुम भी अल्लाह की तरफ से जालिमों के खिलाफ तलवार उठाने पर मامूर हो।

आखिरकार चिड़ होकर उसने कहा, तुम एक तिजारत पेशा आदमी हो और इन मौजूआत पर गुफ्तगू के लिये सिलसिलए इल्म की जरूरत है जिसके लिये तुम मुनासिब नहीं हो।

अब ज़रा नजफ की तरफ आये और हज़रत अली के रौजे के बारे में गुफ्तगू करें। बज़ी पुर शिकोह और बा अजमत आरामगाह है। पूरी इमारत बनावट नवकाशी, आईनाकारी और मुस्तलिफ सजावर्हों का बे मिसाल शाहकार है। मजार के आसपास बड़े बड़े पुर शिकोह कमरे, तलाई नाब का अजीम गुंबद और सोने के दो मीनारे एक अजीब मंजर पेश करते हैं। शिया हज़रात हर रोज़ गरोह दर गरोह रौजा की जियारत के लिये हाजिर होते हैं और वहां की नमाजे जमाअत में शिर्कत करते हैं। वह लोग बड़े वालेहाना अंदाज़ में इख़्लास व इरादत का मुजस्समा बनकर जरीह को बोसा देते हैं। दाखिले से पहले आशिकाने इमाम दरवाजे की चौखट पर अपने आपको गिरा देते हैं और बड़े एहतेराम से बारगाह की जमीन को चूमते हैं। फिर इमाम अली पर दुरूद भेजते हैं और दाखिल होने की इजाजत पढ़कर हरम में दाखिल होते हैं। हरम के चारों तरफ एक अजीमुशान सेहन है जिसमें बहुत से कमरे बने हुए हैं जो उलमाए दीन और जायरीने हरम की रिहाईशगाह हैं।

करबलाए मोअल्ला में दो मशहूर आरमागहें हैं जो थोड़े से इस्तेलाफ के साथ नजफ में बाक़ेय हज़रत अली की आरामगाह के तर्ज पर बनाई गयी हैं। पहली आरामगाह इमाम हुसैन की और दूसरी हज़रत अब्बास की है। करबला के जायरीन भी नजफ की तरह रोज़ाना हरम में हाजिरी देते हैं और इमाम की जियारत करते हैं। करबला मजमूई तीर पर नजफ से ज़्यादा खुश मंजर है। चारों तरफ

हरे भरे खुशनुमा बागात और उनके दर्मियान दरिया के बहते पानी ने उसकी खूबसूरती में चार चांद लगा दिये हैं।

इन शहरों की वीरानी और आशुफता हाली ने हमारी कामयाबी के मौके फराहम कर रखे थे लोगों की हालतें जार को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता था कि उस्मानी हुक्काम ने इन शहरों के रहने वालों के साथ किन किन जुर्मों का इतेंकाब किया और कैंसी कैंसी ज्यादातियां की। यह लोग बड़े नादान, लालची, और खुद सर थे और जो चाहते थे कर गुजरते थे। ऐसा मालूम होता था कि ईराक के लोग उनके जर खरीद गुलाम हैं। पूरी कौम हुक्ूमत से बेजार थी और जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ शिया हजरात अपनी आजादी के छिन जाने के बावजूद हुक्काम के जुल्म व सितम को सब्र व सकून से सह रहे थे और कोई रद्दे अमल जाहिर नहीं कर रहे थे। अहले सुन्नत हजरात का भी यही हाल था। वह लोग अपनी सर जमीन पर तुर्क गवर्नर के तसल्लुत से बहुत नाखुश थे खास तौर पर जबकि उनकी रमा में अरब अशराफियत का खून दौड़ रहा था। इधर खानदाने रिसालत से ताल्लुक रखने वाले अफराद हुक्ूमती इतेजामात में अपने आपको उस्मानी गवर्नर से ज्यादा हकदार समझते थे।

तमाम बस्तियां वीरान थीं। गर्द व गुबार बस्ती वालों का मुकद्दर बन चुका था। हर तरफ बंद नजमी का दीर दौरा था। रास्तों पर लुटेरे कबिज थे और इस ताक में बैठे रहते थे कि हुक्ूमत की सरपरस्ती से आजाद कोई काफिला वहां से गुजरे और वह उन्हें लूटना शुरू कर दें। लिहाजा बड़े बड़े काफिले सिर्फ उसी वक्त मंजिले मकसूद तक पहुंच सकते थे जब उन्हें हथियार बंद आदमियों के जरिये हुक्ूमत की हिमायत हासिल हो।

दूसरी तरफ कबायली झड़पों में भी इजाफा हो गया था। कोई दिन ऐसा न था जिसमें एक कबीला दूसरे कबीले पर हमला आवर न हो और कतल व गारतगरी का बाजार गर्म न होता हो। रोजाना कई अफराद मौत के घाट उतर जाते थे। नादनी और वे इल्मी ने पूरे

दुश्मक को अजीब तरह अपनी लपेट में ले रखा था। यह बाकैयात कुत्तने पुस्ता में पादरियों के दौर की याद ताजा कर रहे थे। सिर्फ नजफ और करबला के उलमा इस से बचे हुए थे या फिर किसी कदर तालिबे इल्म या वह लोग जिनका इन उलमा से मेल जोल था वरना सबके सब जाहिल थे। मुल्की मईशत का पहिया जाम हो गया था और बीमारी, बेरोजगारी, जहालत और बढ़ बख्तियों ने शिदत से मुतवस्सित लोगों का घर देख लिया था। हुकूमत का शीराजा बिखर चुका था। हर तरफ एक हंगमा बपा था। हुकूमत और अवाम के धर्मियान समझौते की कमी थी और वह एक दूसरे को अपना दुश्मन समझते थे। उनका एक दूसरे के साथ तआवुन नहीं था। उलमाए दीन इत्ताही मसायल में इस तरह डूबे थे कि दुनिया की जिन्दगी उनकी नजरों से ओझल हो गयी थी।

जमीन खुश्क और खेतियां उजाड़ थीं। दजला फुरात के दोनों दरिया खेतों को सैराब करने के बजाए एक आशुफता सर मेहमान की तरह प्यासी जमीनों के बीच से तेजी से गुजर रहे थे। मुल्क की यह आशुफता हाली यकीनन एक इंकैलाब का धमक थी।

मुख्तसर यह कि मैंने करबला और नजफ में चार महीने गुजारे। नजफ में मैं एक ऐसी बीमारी में मुब्तला हुआ कि जीने की आस टूट गयी। तीन हफ्ते तक मेरी बुरी हालत थी। आखिरकर मुझे शहर के एक डाक्टर से रुजूअ करना पड़ा। उसने मेरे लिये कुछ दवायें तजवीज की जिनके इस्तेमाल से मैं आहिस्ता आहिस्ता बेहतर होता चला गया। उस साल गर्मी भी बड़ी शदीद और नाकाबिले बर्दाश्त थी और मैंने अपनी बीमारी का तमाम वक्त एक तह खाने में गुजारा जो किसी कदर पुर सुकून और ठंडा था। मेरा मालिके मकान मेरे दिये हुए मुख्तसर पैसे से मेरे लिये दवा दारू और खाने पीने का इंतजाम करता था। यह हजरत अली के जव्वारों की खिदमत को खुदा की नज़दीकी का ज़रिया समझता था। बीमारी के इक्तेदाई दिनों में मेरी गिज़ा मुर्ग का सूप था लेकिन बाद में डाक्टर की इजाजत से मैंने गोश्त और घावल भी इस्तेमाल करना शुरू किया।

बीमारी से किसी कदर ठीक होने के बाद मैं बगदाद रवाना हुआ और वहां जाकर मैंने करबला, नजफ, हुल्ला और बगदाद से मुताल्लिक अपने मुशाहेदात को तकरीबन सौ सफहात पर मुश्तभिल एक रिपोर्ट में नौआबादयाती इलाकों की बजारत के लिये लिख और लंदन भेजने के लिये उसे बगदाद में उस बजारत के नुमाइंदे के सुपुर्द किया और अपने रुकने या लंदन वापस जाने से मुताल्लिक नये अहकामात के इत्तेजार में बैठा रहा।

यहां यह बात भी बताता चलूं कि मैं वापसी के लिये बहुत बे करार था क्योंकि अपने देश, खानदान और अजीज व अकारिब से छूटे मुझे एक अर्सा हो चुका था। खास तौर पर रह रहकर ससपोटीन का ख्याल आ रहा था जो मेरी ईराक खानगी के कुछ अर्से बाद ही इस दुनिया में आया था। उस नौ मौलूद की याद मुझे बहुत बेचैन कर रही थी। इसी बाइस मैंने दरख्वास्त में एक मुख्यसर अर्से के लिये वापस लंदन आने की इजाजत चाही थी। मुझे ईराक में तीन साल का अर्सा हो चुका था। बगदाद में नौआबादयाती इलाकों की बजारत के नुमाइंदे का इसरार था कि मैं बार बार उसके पास न जाऊं क्योंकि इस तरह मुमकिन है कि लोग मुझे शक की निगाह से देखने लगें और इसी बात को मदे नजर रखते हुए मैंने दजला के करीब एक मुसाफिरखाने को अपना ठिकाना बनाया। नौआबादयाती इलाका की बजारत के नुमाइंदे ने कहा था कि लंदन से जवाब आते ही मुझे इत्तेला कर दिया जायेगा।

बगदाद में रहने के दौरान मैंने इस शहर का आम हालतों में उस्मानी हुकूमत के पाया-ए-तरक्त कुसतुनतुनिया से मवाजना किया तो मुझे उन दोनों में नुमायां फर्क महसूस हुआ जो अरबों की निसबत उस्मानियों की दुश्मनी और बद नीयती को जाहिर करता था। उन्होंने ईराकी शहरों और इराकी आबादियों को सेहत की हिफाजत के तमाम उसूलों के बर खिलाफ गलाजत और गंदगी का मसकन बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

बसरा से करबला और नजफ पहुंचने के चंद माह बाद मुझे शीख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब का ख्याल आया। मैं उसकी तरफ से बड़ा फिक्रमंद था। मैंने उस पर बड़ी मेहनत की थी लेकिन मुझे उस पर भरोसा नहीं था क्योंकि वह चंचल मिजाज बाकेंय हुआ था। इसके अलावा वह गुस्से का भी बड़ा तेज था और जरा जरा सी बात पर आपे से बाहर हो जाया करता था। इन खुरसुसियात के पेशे नजर मुझे धड़का था कि कहीं मेरी मेहनत बेकार न जाये और जिस ख्वाहिश को मैं एक असें से अपने सीने में लिये फिर रहा हूं उस पर पानी न फिर जाये।

जिस दिन मैं बसरा की सभ्त रवाना हो रहा था वह तुर्की जाने के लिये ज़िद कर रहा था कि वहां जाकर उस शहर के बारे में मालूमात हासिल करे। मैंने बड़ी सख्ती से उसे उस सफर से रोका और कहा मुझे डर है कि तुम वहां जाकर कोई ऐसी उल्टी सीधी बात न कर बैठो जिससे तुम पर कुफ्र व इलहाद का इल्जाम आयद हो और तुम्हारा खून बेकार जाये लेकिन सच्ची बात यह थी कि मैं नहीं चाहता था कि वहां जाकर वह बाज उलमाए अहले सुन्नत से कोई रास्ता कायम करे। क्योंकि इसमें इस बात का खतरा था कि कहीं वह लोग अपनी मजबूत दलीलों के जरिये दोबारा उसे अपने जाल में न फांस लें और मेरे तमाम मंसूबे धरे के धरे रह जायें।

जब मैंने देखा कि मुहम्मद बसरा से जाने की ज़िद कर रहा है तो मजबूरन मैंने उसे ईरान जाने पर उभारा कि वहां जाकर वह शीराज और असफहान की सैर करे।

यहां इस बात की गज़ाहत भी ज़रूरी है कि उन दोनों शहरों के रहने वाले शिया मजहब के पैरोकार हैं और यह बात सोच से बहुत परे थी कि शीख उनके अकायद से मुतारिसर हो। मुझे इस बारे में पूरा इत्मीनान था क्योंकि मैं शीख को अच्छी तरह जानता था।

रुखसत होते हुए मैंने उससे पूछा “तकिया के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?”

उसने कहा, दुरुस्त है क्योंकि पैगम्बर इस्लाम के एक सहायी अम्मार उन मुशरिकीन के डर से जिन्होंने उनके मां बाप को कत्ल कर दिया था अपने आपको मुशरिक जाहिर करते रहे और खतमी भरतबत ने जनाब अम्मार यासिर की इस बात की तरफ इशारा भी किया है।

मैंने उससे कहा, पस तुम पर भी बाजिब है कि ईरान जाकर तर्फिया को न भूलो और अपने आप को खालिस मिया जाहिर करो ताकि एतेराजात से बचे रहो और उलमा की सोहबत भी तुम्हें हासिल रहे और साथ ही साथ ईरानियों के आदाब व रुसूम भी तुम पर खुल जाये। क्योंकि आइंदा चलकर यह मालूमात तुम्हारे बहुत काम आवेगी और तुम्हें अपने मकासिद में बड़ी कामयाबी अता करेंगी।

इस गुफ्तगू के बाद मैंने उसे कुछ रकम जकात के उनवान से दी। जकात एक तरह का इस्लामी टेक्स है जिसे सरमाया दारों से वसूल किया जाता है ताकि इस आमदनी को उम्मत के फलाह व बहबूद पर खर्च किया जाये। जाते हुए मैंने रास्ते ही में उसे एक घोड़ा खरीद कर दिया क्योंकि उसे उसकी सख्त जरूरत थी और फिर मैं उससे अलग हो गया और उस दिन से अब तक उसकी कोई खबर नहीं है और नहीं मालूम उस पर क्या बीती होगी। मुझे ज्यादा फिक्र इसलिये भी थी कि हम ने बसरा से निकलते वक्त यह तय किया था कि हमें वापस बसरा ही पहुंचना है और अगर हम में से कोई वहां न पहुंच सके तो अपनी कैफियत अब्दुर रजा तरखान को लिख भेजे ताकि दूसरा उससे बाखबर हो मगर अभी तक उसकी तरफ से कोई इत्तेला नहीं मिली थी।

(6)

कुछ असा इतेजार के बाद बिल आखिर नौआबादयाती इलाकों की बजारात से जरूरी अहकामात बगदाद पहुंचे और मेरी हुकूमत ने मुझे फौरी तौर पर तत्व किया। लंदन पहुंचते ही नौआबादयाती इलाकों की बजारात के सेक्रेट्री और आला ओहदेदारों के साथ हम ने एक कमीशन बनाया। मैंने इस जल्से में अपने फरायज, इकदामात और मुतालआत पर गवनी रिपोर्ट को लंदन हुक्काम के सामने पेश किया और उन्हें बेनुन्नहरैन की कैफियत से भी आगाह किया।

ईराक से मुताल्लिक मेरी दी गयी मालूमात और मेरी कारगुजारियों ने सबके दिल जीत लिये थे। पहले भी ईराक से मैंने कई रिपोर्ट उनके यहां रवाना की थी और इन सब से वह मुतमईन थे। उधर सफिया ने भी एक रिपोर्ट भेजी थी जो पूरी तरह मेरी रिपोर्ट की ताईद करती थी। इसके अलावा मुझे यह बात भी मालूम हुई कि बजारात खाना ने मेरी निगरानी के लिये कुछ मखसूस अफराद को मेरे पीछे लगा रखा था जो सफर व हजर में मुझ पर निगाह रखते थे। उन अफराद ने भी अपनी रिपोर्टों में मेरे तर्ज अमल और दिलचस्पी से खुशी का इजहार किया था और उन रिपोर्टों की तसदीक व ताईद की थी जिन्हें मैंने लंदन भेजा था। इस मर्तबा पूरे तौर पर मैदान मेरे हाथ था और सब मुझसे खुश थे यहां तक कि उस दौर के सेक्रेट्री ने वजीर से मेरी मुलाकात के लिये वक्त लिया और मैं उसके साथ वजीर से मिलने गया। मुझे देखते ही वजीर के चेहरे पर एक तरह की खुशी आ गयी और बड़े पुरतपाक अंदाज में खुश आमदीद कहते हुए उसने मुझसे हाथ मिलाया। यह मुलाकात पहले की बेजान और मुख्तसर मुलाकातों से बिल्कुल मुख्तलिफ थी जो इस बात को जाहिर करती थी कि मैंने उसके दिल में अपने लिये जगह पैदा कर ली है।

वजीर खास तौर से मेरी इस महारत का मुतआरिफ था जिसकी बुनियाद पर मैंने शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अपने कब्जे में

कर लिया था। मुझे याद है कि उसने अपनी गुप्तगू के दौरान मुझसे कहा था, "मुहम्मद पर गलबा नीआदयाती वजारत का सबसे अहम मसला था" उसने बड़ी शिद्दत से यह ताकीद की थी कि मैं मुहम्मद को एक मुनज्जम मसूबे के तहत उन कामों से आगाह कर दू जिन्हें आइदा चलकर उसे हमारे लिये अंजाम देना है। वह बार बार इस बात का एतेराफ कर रहा था कि अजीम बर्तानिया के लिये मेरी तमाम खिदमात शेख मुहम्मद जैसे शरहत की तलाश और उस पर अपना असर व नुफूज कायम करने के मुकाबले में कुछ भी नहीं। मकबूजा इत्बाकों के वजीर को जब इस बात का इल्म हो गया कि मैं शेख की गुमशुदगी के बारे में बहुत परेशान हूँ तो उसने निहायत इत्मीनान से जवाब दिया, "परेशान होने की जरूरत नहीं तुमने जो कुछ शेख को पढ़ाया था वह अभी तक उसे याद है और हमारे आदमी असफहान में उससे सच्चा कायम रखे हुए हैं। उनकी रिपोर्टों से मालूम होता है कि शेख अभी तक अपनी डगर पर कायम है। मैंने आप ही आप कहा, शेख ने अपने इस गुरुर व अहंकार के साथ अंग्रेज जासूस को कैसे इजाजत दी होगी कि वह उसके बारे में मालूमात फराहम कर सकें। इस मौजूअ पर वजीर से बात चीत करते हुए मुझे खीफ महसूस हुआ कि कहीं वह बुरा न मान जाये। बाद में शेख से दोबारा मुलाकात पर मुझे सब कुछ इल्म हो गया और उसने तमाम माजरा कह सुनाया। उसने बताया कि असफहान में उसकी दोस्ती अब्दुल करीम नामी एक शरहत से हुई जो अपने आपको अहले कलम जाहिर करता था और उसी ने शेख पर अपना सिक्का बिठाकर उसके तमाम राज मालूम किये थे। इसके साथ ही सफिया भी कुछ अर्से बाद असफहान आई और उसने मजीद दो वहीने के लिये शेख से मुतआ किया। शीराज के सफर में वह इसके साथ नहीं थी बल्कि अब्दुल करीम ने उसे अपने साथ रखा हुआ था। शीराज में अब्दुल करीम ने शेख के लिये सफिया से भी ज्यादा खूबसूरत लड़की का इंतजाम किया था और वह शीराज के एक यहूदी खानदान की हसीन व जमील लड़की थी जिसका नाम आसिया था। अब्दुल करीम असफहान के एक मादर

पिंदर आजाद ईसाई का फजी नाम था और वह भी आसिया की तरह ईरान में बर्तानिया के मकबूजा इलाकों की बजारत का एक पुराना मुलाजिम था।

मुख्तसर यह कि अब्दुल करीम, सफिया, आसिया और मैंने मिलकर अपनी रात दिन की कोशिशों से शेख मुहम्मद बिन अब्दुल बहाब को मकबूजा इलाकों की बजारत की ख्वाहिशात के ऐन मुताबिक डाला और आइंदा की प्लानिंग को सब अमल लाने की जिम्मेदारी उठाने पर आमादा किया। यहां यह नुक्ता भी काबिले जिक्र है कि वजीर से मुलाकात के मौके पर सेक्रेट्री के अलावा बजारत के दो और आला ओहदेदार भी यहां मौजूद थे जिन्हें उस वक्त तक मैं नहीं जानता था। वजीर ने इजलास के इख्तेताम पर मुझसे कहा, अब तुम इंग्लिस्तान की मकबूजा बजारत के सबसे बड़े इफतेखारी निशान के हकदार हो और यह वह इनाम है जिसे हमारी हुकूमत अब्बल नंबर के जासूस को दिया करती है। खुदा हाफजी के मौके पर उसने कतई अंदाज में कहा मैंने सेक्रेट्री से कह दिया है कि वह तुम्हें हुकूमत के बाज पोशीदा और कुछ राजदाराना मसायल से आगाह करे ताकि तुम अपनी जिम्मेदारियों को ज्यादा बेहतर तरीके से अंजाम दे सको।

वजीर की खुशनूदी के सबब मेरी दस दिन की छुट्टी मंजूर हुई और मुझे अपनी बीबी और एक अदद बच्चे से मिलने का मौका हाथ आया। मेरा लड़का जो अब तीन साल का हो चुका था बिल्कुल मेरा हम शकल था और कुछ अल्फाज बड़े पीठे अंदाज में बोलने लगा था। उसने चलना भी सीख लिया था। मैं हकीकतन अपने दिल के टुकड़े को जमीन पर चलता फिरता महसूस कर रहा था। अफसोस कि खुशी के यह लम्हात बड़ी तेजी से गुजर रहे थे। बीबी और बच्चे के साथ गुजरने वाले यह खुशी के लम्हात वाकई नाकाबिले बयान हैं और जिन्दगी की तमाम लज्जतें इसके आगे फीकी हैं। मेरी एक उम्र रसीदा चच्ची थी जिसकी मुझ पर बचपन ही से नवाजिशात और मेहरबानियां रही हैं। मैं उससे मिलकर किस कदर खुश हुआ इसका अंदाजा किसी को भी नहीं हो सकता। मेरी उससे यह आखरी

मुलाकात थी इसलिये कि दस दिन की छुट्टियों के बाद जब मैं तीसरी मर्तबा अपने राफर पर खाना हुआ तो निहायत अफसोस के साथ मुझे उसकी भीत की इत्तेला मिली।

मेरी दस दिन की यह छुट्टियां पलक झपकते गुजर गयीं। यह एक कड़वी हकीकत है कि जिनदगी के खुशी के लम्हात हमेशा बड़ी तेजी से गुजरते हैं और मुरीबत की घड़ियां अपने दामन में सालों का फासला रखती हैं। लंदन के खुशी के लम्हात में मैंने अपनी नजफ की बीमारी को याद किया जिसका हर लम्हा मेरे लिये एक सदी बन गया था। मैं किसी तरह भी मुरीबत के उन दिनों को मुला नहीं सकता। खुशी के लम्हात को इतना दवाम नहीं कि वह मुरीबतों के दिनों की तकलीफ को यादों के दरिचों में न आने दें।

दस दिनों की छुट्टियां मनाने के बाद आइंदा के प्रोग्राम से बाखबर होने के लिये मैं दिल न चाहते भी वजारत खजाना गया। सेक्रेटरी से मुलाकात के मौके पर मैंने उसे हमेशा की तरह खुश व खुरम पाया। उसने मुझसे बड़ी गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया और दोस्ताना लहजे में कहा-

मकबूजा उमूर के खुसूरी कमीशन की मजी के मुताबिक वजीर ने खुद मुझे यह हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें दो अहम राजों से आशना करूं। इन राजों से बाकफियत आइंदा के प्रोग्रामों में तुम्हारे लिये बहुत मुकीद साबित होगी और इन दो बातों से मकबूजा इलाकों की वजारत के सिर्फ बंद एक मिम्बरान ही बाखबर हैं। यह कह उसने मेरा हाथ थामा और अपने साथ वजारत खाना के एक कमरे में ले गया जहां कुछ लोग एक गोल मेज के गिर्द बैठे हुए थे। उन्हें देखकर तअज्जुब से मेरी चीख निकलते निकलते रह गयी क्योंकि उस इजलास के आदमियों की कैफियत कुछ यूं थी।-

१. हू वहू सल्लनते उसमानी का जलालत अफरोज पैकर जो तुकी और अंग्रेजी जुबानों पर बड़ी महारत से मुरात्लत था।

२. कुरतुनतुनिया के शैखुल इस्लाम की दूसरी हकीकत से

करीब तसवीर।

3. शहशाहे ईरान का जिन्दा मुजरसमा।

4. दरबारे ईरान के शिया आलिम की मुकम्मल शबीह।

5. नजफ में शियों के मरजेअ तकलीद का बे भिरल सरापा।

यह आखरी तीन अफराद फारसी और अंग्रेजी जुबानों में गुप्तगू कर रहे थे। सबके नजदीक उनके प्राईवेट सेक्रेट्री बैठे थे, जो उनकी बातों को नोट बनाकर हाजिरीन के लिये उस का तर्जुमा पेश कर रहे थे। जाहिर है कि उन तमाम प्राईवेट सेक्रेट्रियों का किसी जमाने में इन पांच शख्सियतों से बहुत करीब का राब्ता रह चुका था और उनकी मुकम्मल रिपोर्ट के तहत उन पांच हम शबीह अफराद को हु-बहु तमाम आदात व खसायल के साथ जाहिरी और बातिनी एतेबार से असली अफराद की मुकम्मल तसवीर बनाया गया था। यह पांचों सवांणी अपने फरायज और मुकाम व मनसब की बखूबी जानते थे। सेक्रेट्री ने बात शुरू करते हुए कहा, इन पांच अफराद ने असली शख्सियतों का बहरूप भर रखा है और यह बताना चाहते हैं कि वह किस तरह की सोच रखते हैं और आइंदा के बारे में इनका क्या ख्याल है। हमने इसतंबोल, तेहरान और नजफ की मुकम्मल इत्तेलाआत इन्हें फराहम करदी हैं। अब वह अपने मैकअप को हकीकत पर महमूल किये बैठे हैं और इसी एहसास के साथ अपनी हासिल कर्दा मालूमात से हमारे सवालों का जवाब देते हैं। हमारी जांच पड़ताल के मुताबिक इनके सत्तर फीसद जवाबात हकीकत के ऐन मुताबिक या यूँ कहिये कि असली शख्सियतों के अफकार से मेल नहीं खाते हैं। सेक्रेट्री ने अपनी गुप्तगू के दौरान मुझे मुखातब करके कहा "अगर तुम चाहो तो तुम इनमें से किसी का इस्तेहान ले सकते हो। मिसाल के तौर पर नजफ के शिया मरजेअ तकलीद से जो चाहो पूछ सकते हो। मैंने कहा बहुत अच्छा, और फौरन ही कुछ सवालात पूछ डाले।

मेरा पहला सवाल यह था किन्ना व काबा! क्या आप अपने मुकल्लेदीन को इस बात की इजाजत देते हैं कि वह सुन्नी और

मुतअरिस्सब उस्मानी हुकूमत की मुखालिफत पर तैयार और उनके खिलाफ ऐताने जंग करें?

नकली या सवांगी मरजेअ तकलीद ने कुछ देर सोचा और कहा, मैं मुतलक जंग की इजाजत नहीं देता क्योंकि वह सुन्नी मुसलमान हैं और कुरआन की आगत कहती है कि तमाम मुसलमान आपस में भाई भाई हैं। सिर्फ इस सूरत में जंग जायज है जब उस्मानी हुक्मरान जुल्म व सितम पर उतर आये। ऐसी हालत में अमर बिल मारूफ (नेकी का हुक्म देना) और नहीं अनिल मुन्कर (बुराई से मना करना) के तहत उनसे जंग लड़ी जा सकती है। वह भी उस वक्त तक जब आसारें जुल्म खत्म न हो जायें और जालिम जुल्म से बाज न आ जाये।

मैंने फिर दूसरा सवाल पूछा, हुजुरे वाला! यहूदियों और ईसाईयों की नजासत के बारे में आपका क्या ख्याल है क्या यह लोग वाकई नापाक हैं?

उसने कहा, हां यह दोनों फिरके पूरे तौर पर नापाक हैं और मुसलमानों को इनसे दूर रहना चाहिये।

मैंने पूछा इसकी वजह क्या है?

उसने जवाब दिया, यह दर असल बराबर के सुलूक का मसला है क्योंकि वह लोग भी हमें काफिर मानते हैं और हमारे पैगम्बर को झुटलाते हैं।

इसके बाद मैंने पूछा पैगम्बर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सफाई से मुताल्लिक इतनी ताकीदात के बाद कि सफाई ईमान की अलामत है फिर क्यों हजरत अली के सेहने मुतहहर और तमाम बाजारों में इस कदर गंदगी फैली रहती है?

मरजेअ तकलीद ने जवाब दिया, बेशक इस्लाम ने सफाई और सुथराई को ईमान की दलील जाना है मगर इसको क्या किया जाये कि उस्मानी हुकूमत के उम्मात की वे तबज्जोही और पानी की कमी ने यह सूरत पैदा की है।

दिलचस्प बात यह थी कि उस बनावटी मरजेअ तकलीद की आमादगी और हाजिर जवाबी नजफ के हकीकी मरजेअ तकलीद के ऐन मुताबिक थी। फकत उस्मानी हुकूमत के उम्मात की ये तबज्जोही की बात उसने अपनी तरफ से इस में मिलाई थी क्योंकि नजफ के आलिम की जुबान से यह जुमला नहीं सुना गया था। बहरहाल मैं उसकी आहंगी और मुशाबहत पर सख्त हेरान था क्योंकि तमाम जवाबात बिल्कुल असली मरजेअ तकलीद के ब्यानात थे जिसे उसने फारसी में पेश किया था और यह तकली मरजेअ भी फारसी ही में गुप्तगू कर रहा था।

सेक्रेटरी ने मुझसे कहा, "दीगर चार अफराद से भी चाहो तो सवाल कर सकते हो, यह चारों अफराद भी तुम्हें असली शख्सियतों की तरह जवाब देंगे।"

मैंने कहा कि मैं इसतंबोल के शैखुल इस्लाम अहमद आफंदी के अफकार और ब्यानात से बखूबी वाकिफ हूँ और उसकी बातें मेरे हाकिजे में महफूज हैं। आपकी इजाजत से मैं उसके हम शख्स से गुप्तगू करूंगा। इसके बाद मैंने पूछा आफंदी साहब! क्या उस्मानी खलीफा की इताअत वाजिब है?

उसने कहा, हां मेरे बेटे! उसकी इताअत खुदा और उसके रसूल की इताअत की तरह वाजिब है।

मैंने पूछा किस दलील की बुनियाद पर?

उसने जवाब दिया, क्या तुमने यह आयते करीमा नहीं सुनी है कि खुदा, उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उलुल अम्र की इताअत करो।

मैंने कहा "अगर हर खलीफा उलुल अम्र है तो गोया खुदा ने हमें यजीद की इताअत का भी हुक्म दिया है क्योंकि वह उस वक्त का खलीफा था हालांकि उसने मदीना को लूटने का हुक्म दिया था और नवासे रसूल हजरत इमाम हुनैन को कत्ल किया था। खुदाबंद

अलीम किस तरह यलीद की इताअत का हुक्म देगा जबकि वह शराब खोर था।

नकली शैखुल इस्लाम ने जवाब दिया, मेरे बच्चे यजीद अल्लाह की तरफ से मोमिनो का अमीर था लेकिन कत्ले हुसैन में उससे खता हो गयी थी जिसके लिये बाद में उसने तौबा कर ली थी मदीना में कत्ल व गारतगरी का सबब वहां के लोगों की सरकशी और यजीद की इताअत से हटना था जिसमें यजीद का कोई कसूर नहीं था। अब रह गया यलीद तो इसमें शक नहीं कि वह शराब पीता था लेकिन शराब में पानी मिलाकर पीता था ताकि उसकी मस्ती खत्म हो जाये और वह इस्लाम में जायज है।

मैंने कुछ अर्सा पहले इस्तंबोल में हुमत से शराब से मुताल्लिक मसले को वहां के शैखुल इस्लाम शैख अहमद से दर्याफ्त कर लिया था। उसका जवाब थोड़े से इख्तेलाफ के साथ लंदन के इस नकली शैखुल इस्लाम के जवाब से मिलता जुलता था। मैंने असल से नकल की ऐसी सबाहत तैयार करने की कोशिशों को सराहते हुए सेक्रेट्री से पूछा आखिर इस काम से क्या फायदा हासिल हो सकता है?

उसने जवाब दिया, इस तरह हम बादशाहों और सुन्नी शिया उलमा के अफकार और उनके रुझान से आशनाई हासिल करते हैं। फिर उन मकालमात को परखा जाता है और उनसे नतायज निकाले जाते हैं और फिर हम इलाके के दीनी और सियासी मसायल में दखल अंदाजी करते हैं मसलन अगर हमें यह मालूम हो जाये कि फलां आलिम या फलां बादशाह इलाके की मरिरकी सरहदों में हमसे दुश्मनी पर उतर आया है तो हम उसके अमल को नाकारा बनाने के लिये हर तरफ से अपनी तवानाईयों को इस सस्त में लगा देते हैं लेकिन अगर हमें यह न मालूम हो कि हमारा हकीकी दुश्मन किस मुकाम पर सरगमें अमल है तो फिर हमें अपनी तवानाईयों को इलाके के चप्पे चप्पे में फैलाना पड़ता है। यह अमल हमें इस बात में भी मदद देता है कि हम इस्लाम के अहकाम व फरामीन से एक फर्द मुस्लिम

के तर्ज इस्तिंवात को समझें और उसके जेहन में शक और तजबजुब पैदा करने के लिये ज्यादा वाजेह और ज्यादा तर्क युक्त मतालिब कराहम करें और उसके अकायद को झूठा करार दें। इख्तेलाफात, तफरकें, गड़बड़ और मुसलमानों के अकायद में हलचल पैदा करने के लिये इस तरह के इकदामात वे इतेहा असरदार पाये जाते हैं। इसके बाद सेक्रेट्री ने मुझे एक हजार सफाहों पर मुश्तमिल एक मोटी किताब मुताला के लिये दी। उस किताब में असली और नकली अफराद की गुफ्तगू और बहस के तजजिया और मुकाबला के नतायज से मुताल्लिक आदाद व शुमार लिखे थे और मुझे हासिल शुदा नतायज की बुनियाद पर इस्लामी दुनिया में फौजी, माली, तालीमी और मजहबी मसायल से मुताल्लिक हुकूमते बतानिया के बनाए गए प्रोग्रामों से वाकफियत हासिल करना थी। बहरहाल मैं किताब घर ले गया और तीन हफ्ते के अर्से में बड़ी तवज्जोह के साथ शुरू से आखिर तक उसका मुताला किया और मुकरर मुदत में मकबूजा इलाकों की बजारत को वापस दे आया। किताब वाकई बड़ी मेहनत से तैयार की गयी थी। इसमें साहिबाने इल्म, साहिबाने सियासत और इस्लाम की दीनी शखिसयतों के अकायद व नजरियात के बारे में इस खूबी से बहस की गयी थी और नतीजा निकाला गया था कि पढ़ने वाला दंग रह जाता था। सत्तर फीसद बार्त हकीकत पर थे जबकि 30 फीसद में इख्तेलाफ था। किताब के मुताले के बाद मुझे इत्मीनान हो गया कि मेरी हुकूमत यकीनन अपने अमल में कामयाब होगी और इस किताब की पेशगोई के मुताबिक सलतनते उस्मानी एक सदी से कम अर्से में बहरहाल खत्म हो जायेगी।

सेक्रेट्री से मिलने के बाद मुझे यह बात मालूम हो गयी कि मकबूजा इलाकों की बजारत में दुनिया के तमाम मुमालिक के लिये चाहे वह इस्तेमारी हों या नीम इस्तेमारी इस तरह की शबीह साजी या नकली रूप का अमल बरुए कार लाया गया है और इनतमाम मुमालिक को पूरी तरह इस्तेमार के शिकंजे में जकड़ने के इतेजामात मुकम्मल किये गये हैं।

सोफेटी ने अपनी गुफ्तगू के दौरान मुझसे कहा था कि यह वह पहला राज है जिसे उसने वजीर के हुक्म के मुताबिक मुझे बताया है मगर दूसरे राज को इस किताब की दूसरी जिल्द पढ़ने पर एक माह बाद मुझे बतायेगा।

मैंने दूसरी किताब लेकर उसका मुतालाा शुरू किया। यह किताब पहली किताब को मुकम्मल करती थी। इसमें इस्लामी मुमालिक से मुताल्लिक नई इत्तेलाआत, जिन्दगी के मुख्तलिफ मसायल में शिया सुन्नी अफायद व अफकार जो हुक्मत की कमजोरी या तयानाई को जाहिर करते थे, और मुसलमानों की गुरबत के असबाब वगैरह पर गुफ्तगू थी। इस किताब में उन मौजूआत पर बड़ी सैर हासिल बहस की गयी थी और मुसलमानों के कमजोर पहलुओं या ताकत के जराए को नुमायां किया गया था और इन से अपने हक में फायदा उठाने की तदाबीर समझाई गयी थी। इस किताब में मुसलमानों की जिन कमजोरियों की तरफ इशारा किया गया था वह यह थी -

१. शिया सुन्नी इख्तेलाफ ।

हुक्मरानों के साथ कौमों के इख्तेलाफात।

ईरानी और उस्मानी हुकमतों के इख्तेलाफात।

कबायली इख्तेलाफात।

उलमा और हुक्मत के ओहदेदारों के दर्मियान गलत फहमियां।

२. तकरीबन तमाम मुसलमान मुल्कों में जहालत और नादानी की अधिकता।

३. फिकी जुमूद और तअस्सुब, रोजाना के हालात से बे खबरी, काम और मेहनत की कमी।

४. भीतिक जिन्दगी से बे तयज्जोही, जन्नत की उम्मीद में हद से ज्यादा इबादत जो इस दुनिया में बेहतर जिन्दगी के रास्तों को बंद कर देती थी।

५. घमंडी बादशाहों के जुल्म व सितम।

६. अमन व अमान की कमी, शहरों के दर्मियान सड़कों और रास्तों की कमी, ईलाज मुआलिजे की सहूलतों और हिफजाने सेहत के उसूलों की कमी जिसकी बिना पर ताऊन या इस जैसी छूत की बीमारियों से हर साल आबादी का एक हिस्सा मौत की नजर हो जाता।

७. शहरों की बीरानी, आवपाशी के निजाम की कमी जराअत और खेती बाड़ी की कमी।

८. हुक्मती दफ्तरों में बढ इतेजासी और कायदे कवानीन की कमी, कुरआन और अहकामे शरीअत के एहतेराम के बावजूद अमली तौर पर उससे लापरवाही।

९. पस मांदा और गैर सेहतमंदाना मशीयत पूरे इलाके में आम गुरबत और बीमारी का दौर दौरा।

१०. सही तर्बियत याफता फौजों की कमी हथियार और दिफाई साज व सामान की कमी और मौजूदा हथियारों का पुराना पन।

११. औरतों की तहकीर और उनके हुक्क की पामाली।

१२. शहरों और देहातों की गंदगी, हर तरफ कूड़े करकट के अंबार, सड़कों शाहराहों और बाजारों में अशिया-ए-फरोख्त के बे हंगम ढेर, वगैरह।

मुसलमानों के इन कमजोर पहलुओं को गिनवाने के बाद किताब ने इस हकीकत की तरफ भी इशारा किया था कि शरीअते इस्लाम का कानून मुसलमानों की इस तर्जे जिन्दगी से रत्ती बराबर भी मेल नहीं खाता लेकिन यह बात जरूरी है कि मुसलमानों को इस्लाम की हकीकी रूह से बे खबर रखा जाये और उन्हें दीन की सच्चाईयों तक न पहुंचने दिया जाये। इसके बाद किताब ने बसूरते फेहरिस्त उन अयामिर व अहकामात की तरफ भी इशारा किया जो दीने इस्लाम के उसूल व मयानी को जाहिर करते थे और उनकी सूरत यह थी-

१. यहदत, दोस्ती, और भाई चारा की ताकीद और तफरका से दूरी।

२. तालीम व तर्बियत की ताकीद।

३. जुस्तजू और इस्तेकार की ताकीद।

४. माददी जिन्दगी को बेहतर बनाने की ताकीद।

५. जिन्दगी के मसायल में लोगों से राय माश्वरे की ताकीद।

६. शाहराहें बनाने की ताकीद।

७. हदीसे नबी की युनियाद पर तंदरुस्ती और ईलाज की ताकीद।

उलूम की चार किस्में हैं :-

१. इल्मे फिकह, दीन की हिफाजत के लिये।

२. इल्मे तिव, बदन की हिफाजत के लिये।

३. इल्मे नह्व, जुबान की हिफाजत के लिये।

४. इल्मे नुजूम, जमाने की पहचान के लिये।

८. आबादकारी की ताकीद।

९. अपने कामों में नज्म व तर्तीब।

१०. मआशी इस्तेहकाम की ताकीद।

११. जदीद तरीन असलेहा और जंगी साज व सामान से तैस फौजी तंजीम की ताकीद।

१२. औरतों के हुक्क की हिफाजत और उसके एहतेराम की ताकीद।

१३. सफाई और पाकीजगी की ताकीद।

इन अवामिर के तजकिरे के बाद किताब अपने दूसरे बाव में

इस्लाम के ताकत व कुव्वत के सर चश्मों और मुसलमानों की पेशरफत के असबाब पर रौशनी डालती है और उन्हें तबाही से दो बार करने के लिये तरक्की व तकामल की राहों के खिलाफ इकदामात को मकबूजा इलाकों की बजारत का नुक्ताए आगाज करार देती है और वह तरक्की व तकामुल की राहें यह थीं।

१. रंग व नसल, जुवान, तहजीब व तमदुन और कौमी तअस्सुबात को खातिर में न लाना।

२. सूद, जखीरा अंदोजी बंद अमली, शराब और सुअर के गोश्त बनेरह की मुमानिअत।

३. इमान व अकीदे की बुनियाद पर उलमाए दीन से शदीद मुहब्बत और वाबस्तगी।

४. मौजूदा खलीफा की निसबत आम्मतुल मुस्लेमीन का एहतेराम और यह अकीदा कि वह पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जानसीन और ऊलत अमर है जिसकी बिना पर उसके अहकामात पर अमल करना खुदा और रसूल के अहकामात की बजा आवरी है।

५. कुफ़ार के खिलाफ वुजूबे जिहाद।

६. गैर मुस्लिमों की नापाकी पर बवनी अहले तशीअ का अकीदा।

७. तमाम अदयान और मजाहिब पर इस्लाम के अजीम का यकीन।

८. इस्लामी सरजमीन पर यहूदी और नसरानी इबादत गार्हों की तामीर के बारे में शिया हज़रात की मुमानिअत।

९. जजीरतुल अरब से तमाम यहूदियों और नसरानियों को निकालने पर अवसर मुसलमानों का इत्तेफ़ाक।

१०. इश्तेयाक के साथ नमाज़, रोज़ा, और हज के फ़रायज़ की अंजामदेही में पाबंदी करना।

११. खुम्स की अदायगी के बारे में अहले तशीअ का अकीदा और

उलमा की तरफ से मुस्तेहकीन को उस रकम की तकरीम।

१२. ईमान व इखलास के साथ इस्लाम के दीनी अकायद से दिलचस्पी।

१३. घरेलू इस्तेहकाम के बुनियादी मकसद के साथ बच्चों और नौजवानों की रिवायती तालीम व तर्बियत और बच्चों के साथ वालिदेन के दायमी ताल्लुक की जरूरत व अहमियत की कच्ची।

१४. औरतों को पर्दा की ताकीद जो उन्हें गैर शरई मेल जोल और बंद अमलियों से रोकती है।

१५. नमाज जमाअत का इस्तेहबाब और हर जगह के लोगों का दिन में कई मर्तबा एक मस्जिद में इकट्ठा होना।

१६. पैगम्बर इस्लाम, अहले बेयत, उलमा और सुलहा की जिवास्तगारि की ताजीम और उन मकामात को मुलाकात और इज्तेमाअ के मर्कज करार देना।

१७. सादात का एहतेराम और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इस तरह तजकिरा करना गोया वह अभी जिन्दा हैं और दुरुद व सत्ताम के मुस्तहिक हैं।

१८. शियों की तरफ से एजादारी का इनेकाद खास तौर पर मुहर्रम और सफर के अजीम इजतेमाआत और उनमें उलमा और जाकिरीन की मुनज्जम तकरीरें जो यकीनन मुसलमानों के ईमानी इस्तेहकाम में एक नाकाबिले इंकार असर छोड़ जाती हैं और उन्हें नेक चाल चलन पर उभारती हैं।

१९. इस्लाम के अहम उसूलों के उनवान से अमर बिल मारुफ और नही अनिल मुन्किर का वुजूब।

२०. शादी ब्याह, ज्यादा औलाद और एक से ज्यादा शादियों का मुस्तहब होना।

२१. काफिरों की हिदायत पर इतना जोर कि अगर कोई किसी

काकिर को मुसलमान करे तो यह काम उसके लिये तमाम दुनिया की दोलत से मुफीद होगा।

२२. नेक अमल अंजाम देने की अहमियत "जो कोई किसी नेक अमल की पैरवी करेगा उसके लिये दो जजाएं मखसूस हैं। एक खुद उस नेक अमल की अपनी जजा और दूसरे उस नेक अमल को अंजाम देने की जजा।

२३. कुरआन व हदीस का ये इत्तेहा पास व एहतेराम और सवावे आखिरत के लिये उन पर अमल पैरा होने की शदीद जरूरत।

इस्लाम के इन कुच्चत के धारों के तजकिरे के बाद किताब के अगले अबयाब में दयानत के इन मोहकम सतूनों को कमजोर बनाने के अमली रास्तों पर बड़ी मोहकम दलीलों के साथ गुफ्तगू की गयी थी। इसके बाद फेहरिस्त में उन इकदामात की ताकीद थी जिनके जरिये इस्लामी दुनिया को कमजोर बनाया जा सकता था और वह यह थी -

१. बदगुमानी और सूए तफाहुम के जरिये शिया और सुन्नी मुसलमानों में मजहबी इख्तेलाफात पैदा करना और दोनों गरोहों की तरफ से एक दूसरे के खिलाफ एहानत आमेज और तोहमत अंगेज बार्त लिखना और निफाक व तफरके के इस सूदमंद प्रोग्राम को अमल में लाने के लिये भारी अखराजात की हरगिज परवा न करना।

२. मुसलमानों को जहालत और ला इल्मी के आलम में रखना। किसी तालीमी मर्कज के कयाम की कोशिश को कामयाब न होने देना। छपाई और नशर व इशाअत पर पाबंदी आयद करना और जरूरत पड़े तो अयामी किताब खानों को नजरे आतिश करना। बच्चों को दीनी मदारिस में जाने से रोकने के लिये उलमा और मराजेए दीनी पर तोहमते लगाना।

३. काहिली फैलाने और जिन्दगी की जुस्तजू से मुसलमानों को महरूम करने के लिये मौत के बाद की दुनिया में रंग आमेजी और

जन्नत की ऐसी तारीफ ब्यान करना कि वह पुजरसम बनकर लोगों के जेहन व दिल पर छा जायें और वह उसको हासिल करने के लिये अपनी मआशी कोशिशों को छोड़ जायें और मलकुल मौत के इतेजार में बैठे रहें।

४. हर तरफ दरवेशों की खानकाहनों का फैलाव और ऐसी किताबों और रिसालों की तबाअत जो लोगों को दुनिया व आसपास से दूर करके उन्हें लोगों से बेजारी और गोशा नशीनी की तरफ मायल करें। जैसे गजाली की अहयाउल उलूम, मौलाना रोम की मसनवी और मोहीयुद्दीन अरबी की किताबें वगैरह।

५. पुस्तबिद और खुद ख्याह हुक्मरानों की हक्फानियत के सुबूत में मुख्तलिफ अहादीस की इशाअत मसलन! "बादशाह जमीन पर अल्ताह का साया है।" या फिर यह दावा कि हजरत अबू बकर, उमर, उस्मान और अली बनी उमैय्या और बनी अब्बास सबके सब जबरदस्ती तलवार के जोर से हुकूमत के मनसब पर फायज हुए और बजोरे शमशीर हुक्मरानी की या सकीफा की कार्रवाई को एक तमाशे की सूरत में पेश करना जिस की डोरी हजरत उमर ने थाम रखी हो और इस बारे में दलायल कायम करना जैसे हजरत अली अलैहिस्सलाम के तरफदारों खास तौर पर आपकी जौजा हजरत फातिमा जह्रा अलैहिस्सलाम का घर जलाना नीज यह साबित करना कि -

१. हजरत उमर की खिलाफत जाहिर में हजरत अबू बकर की वसीयत और वातिन में मुखालेफीन को डरा धमकाकर अमल में आयी।

२. हजरत अली अलैहिस्सलाम की मुखालेफत की बुनियाद पर हजरत उस्मान के इतेखाब में एक झामाई मशवरा कमेटी बनाना, जो बिल आखिर मुखालेफत, शोरिश, खलीफ़े सोम के कत्ल और हजरत अली की खिलाफत पर खत्म हुई।

३. मकर व हीला और शमशीर के जरिये मुआविया का हुकूमत में आना और इसी सूरत में उसके जानशीनों का बाकी रहना।

४. अबू मुस्लिम की कयादत में सफाह की हथियार बंद दंगा और बजोर शमशीर खिलाफते बनी अब्बास का कयाम।

५. हजरत अबू बकर से लेकर उस्मानियों की हुक्मरानी के इस दौर तक तमाम खुलफाए इस्लाम जालिम थे और यह कि -

६. निजामे इस्लाम में हमेशा जाबिरियत का दौर दौरा रहा है।

७. रास्तों में बदअमनी के असबाब पैदा करना, बद अंदेश अफराद की मदद से शहरों और देहातों में फित्ना व फसाद बरपा करना और गुंडों फसादियों और डाकुओं की पुश्त पनाही करना और उन्हें असलेहा और रकम फराहम करके उनकी मदद करना।

८. हिफजाने सेहत की कोशिशों के आड़े आना और जबरी और क़दरी अफकार को तरजीह देना और यह बताना कि हर चीज़ अल्लाह की तरफ से है। बीमारी भी अल्लाह की देन है, और इसका इलाज बे सूद है। इस सिलसिले में यह आयत पेश करना, "वही है जो मुझे खाना देता है और प्यास की हालत में सैराब करता है और जब मैं बीमार होता हूँ तो मुझे तंदरुस्ती अता करता है। "वही मारता है और जिलाता भी है।" शिफा अल्लाह के हाथ में है। मौत और हयात भी उसके कब्ज़ए कुदरत में हैं। बीमारी से शिफायाबी और मौत से रिहाई उसकी मर्जी और उसके इरादे के बगैर कतई नामुमकिन है और यह तमाम रूनुमा होने वाले वाकियात क़जाए इलाही हैं।

९. इस्लामी मुमालिक को फाका व फ़लाकत में बाकी रखना और उनमें किसी किरम का तगय्युर व तबदीली या इस्लाहे अमल को जारी न होने देना।

१०. फित्ना व फसाद और हंगामा आरईयों को हवा देना और इस अकीदे को लोगों में पक्का करना कि इस्लाम महज इबादत और परहेजगारी का नाम है, और दुनिया और इसके उमूर से इसका कोई वास्ता नहीं। हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके जानशीनों ने कभी इन मसायल में पड़ने की कोशिश नहीं की और सियासी और इक्तेसादी तंजीम से कोई सरोकार नहीं रखा।

१०. ऊपर दिये हुए कामों पर तबज्जोह, इक्तेसादी बदहाली और गुरबत व बेकारी में इजाफा का बाइस होगी मगर इसके साथ साथ गुरबत में इजाफा करने के लिये जरूरी है कि किसानों के गल्ला के ढेरों को नजरे आतिश किया जाये, तिजारती कश्तियां खुदो दी जायें, तिजारती जहाज और रानअती मराकिज में बड़े पैमाने पर आग भड़काई जाये। दरियाओं के बंद तोड़कर बरितियां वीरान की जायें और पीने के पानी को जहर आलूद बना दिया जाये ताकि इस लिहाज से इलाके वालों की गुरबत और फकर व फलाकत का सामान फराहम किया जा सके।

११. इस्लामी हुक्मरानों के मिजाज को बदला जाये और उनमें लराब नोशी, जुए बाजी और दीगर अखलाकी बुराईयां पैदा की जायें। कौमी खजाने में खुर्द बुर्द और लूट खसोट की ऐसी सूरत पैदा की जाये कि उनके पास अपने दिफाअ, मुल्की मईशत और तरक्कीयाती कामों के लिये कोई रकम बाकी न रहे।

१२. "मर्द औरतों पर हाकिम हैं" कि आयत या "औरतें बदी का पुतला हैं" की हदीस के सहारे औरतों की तौहीन व तहकीर और कनीजी का प्रचार किया जाये।

१३. इसमें कोई शक नहीं कि मुसलमानों की शहरी और देहाती बरितियां में गलाजत और गंदगी का सबसे बड़ा सबब इन इलाकों में पानी की कमी है और हमें चाहिये कि हम हर मुमकिन तरीके से गुंजाना आबाद इलाकों में पानी की फरवानी रोक दें ताकि उन इलाकों में ज्यादा कसरत से गंदगी में इजाफा हो।

किताब के एक और बाब में मुसलमानों की कुब्वत व ताकत को तोड़ने और उन्हें कमजोर बनाने के दीगर उसूलों पर भी गुप्तगू की गयी थी जो दिलचस्पी से खाली नहीं।

१. ऐसे अफकार को फैलाना जो कौमी, कबायली और नसली असबियतों को हवा दें और लोगों को गुजिश्ता कौमों की तारीख, जुवान और सकाफत की तरफ शिद्दत से भायल करें और वह इस्लाम

से पहले की तारीखी शख्सियतों पर फरेफता हो जायें और उनका एहतेराम करें। मिस्र में फिरऔनियत का अहया, ईरान में दीन जर्द तहत और बेनुन्नहरेन में बाबुल की बुत परस्ती उन ही की मिसालें हैं। किताब के उस हिस्से में एक बड़े नक्शे का भी इजाफा किया गया था जिसमें उन मराकिज की निशानदेही की गयी थी जिनमें पहले के खुलूत पर अमल दरआमद हो रहा था।

२. शराब खोरी, जुए बाजी, बद फेली और शहबल रानी की तरबीज, सुअर के गोश्त के इस्तेमाल की तरगीब इन कारगुजारियों में यहूदी, नसरानी, जरदतुशती और सायबी अकलियतों को एक दूसरे के साथ हाथ बटाना चाहिये और इन बुराईयों को मुस्लिम मुआशरे में ज्यादा से ज्यादा फरोग देना चाहिये जिनके बदले मकबूजा इलाकों की वजारत उन्हें इनाम व इकराम से नवाजेगी। इस काम के लिये बहुत से अफराद की जरूरत है जो किसी भी मौके को हाथ से न जाने दें और शराब जुआ फहशा और सुअर के गोश्त को जहां तक हो सके लोगों में मकबूल बनायें। इस्लामी दुनिया में अंग्रेजी हुकूमत के कारिन्दों का यह फरीजा था कि वह माल व दौलत इनाम व इकराम और हर मुनासिब तरीके से इन बुराईयों की पुष्ट पनाही करें और उन पर आमिल अफराद को किसी तरह का नुकसान न पहुंचने दें और मुसलमानों को इस्लामी अहकामात और उसके अवामिर व नवाही से हटने की तरगीब दें क्योंकि एहकाम शरअ से ने तबज्जोही मुआशरे में बद नजमी और अफरा तफरी का सबब होती है। मिसाल के तौर पर कुरआन मजीद में सूद की शिद्दत से मजम्मत की गयी है और इसका शुमार गुनाहे कबीरा में होता है। पस लाजिम है कि हर हाल में सूद और हराम सौदे बाजी को आम करने की कोशिश की जाये और इक्तेसादी बदहाली को मुकम्मल तौर पर सूरत बनाया जाये। इस काम के लिये जरूरी है कि सूद के हराम होने से मुताल्लिक आयात की गलत तफसीर की जाये और इस उसूल को पेशे नजर रखा जाये कि कुरआन के एक हुक्म से इंकार इस्लाम के तमाम अहकाम से मुंह मोड़ने की जुरअत का आईनादार होती है।

मुसलमानों को यह समझाने की जरूरत है कि कुरआन ने जिस सूद को मना किया है वह सूद मुरककब (या सूद दर सूद) है यरना आम सूद में कोई बुराई नहीं है। कुरआन कहता है "अपने माल को कई गुना करने की खातिर सूद न खाओ।" इस बिना पर आम हालत में सूद हराम नहीं है।

३-४. उलमाए दीन और अयाम के दर्मियान दोस्ती और एहतेराम की फिजा को आलुदा करना वह अहम काम है जिसे इंग्लिस्तान की हुकूमत के हर मुलाजिम को याद रखना चाहिये। इस काम के लिये दो बातों की अशद जरूरत है-

१. उलमा व मराजेअ पर इल्जाम तराशी करना।

मकबूजा इलाकों की वुजारत से जुड़े बाज अफराद को उलमाए दीन की सूरत देना और उन्हें अलजहर यूनिवर्सिटी, नजफ, करबला और इसतंबोल के इलमी और दीनी मराकिज में उतारना, उलमाए दीन से लोगों का रिश्ता तोड़ने के लिये एक रास्ता यह भी है कि वच्चा को मकबूजा इलाकों की वजारत के प्रोग्रामों के मुताबिक तरबियत दी जाये। इस काम के लिये ऐसे उस्तादों की जरूरत है जो हमारे तंख्याह दार हों ताकि वह जदीद अलूम पढ़ाने के साथ में नौजवानों को उलमाए दीन और उस्मानी खलीफा से मुतनफिफर करें और उनकी अखलाकी बुराईयाँ और जुल्म व ज्यादतियों को बड़ी आप व ताव के साथ ब्यान करें और यह बतायें कि वह किस तरह कौमी सरमाए को अपनी अय्याशियों की नजर करते हैं और उनमें किसी पहलू से इस्लामी झलक नहीं पाई जाती।

५. वाजिब होने के अकीदे में कमजोरी पैदा करना और यह साबित करना कि जिहाद सिर्फ सदरे इस्लाम के लिये था ताकि मुखालिफों को खत्म की जाये मगर आज इसकी कतअन जरूरत नहीं है।

६. काफिरों की पलीदी और नजासत से मुताल्लिक मौजूअ जो ख़ास तौर पर शिया हजरात का अकीदा है उन मसायल में से है जिसे

मुसलमानों के जेहन से खारिज होना चाहिये और इसके लिये कुरआन व हदीस से मदद लेने की जरूरत है। मिसाल के तौर पर यह आयत जिसमें कहा गया है कि "अहले किताब जो खाना खाते हैं वह तुम पर हलाल है और जो तुम खाते हो वह उन पर हलाल है और पाक दामन मोमिन औरतें और पाकदामन अहले किताब (यहूद व नसारा) औरतें तुम पर हलाल हैं।" क्या रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सफिया और मारिया नामी यहूदी और मसीही औरतों से शादी नहीं की थी? और क्या यह कहा जा सकता है कि ना-ऊजूबिल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां नजिस थीं?

७. मुसलमानों को यह बात समझानी चाहिये कि दीन से हजरत खतभी मरतबत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुराद सिर्फ इस्लाम नहीं बल्कि जैसा कि कुरआन हकीम से भी साबित है दीन में अहले किताब यानी यहूद व नसारा भी शामिल हैं और तमाम अदयान के पैरोकारों को मुसलमान कहा जायेगा। कुरआन मजीद में हजरत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम खुदा से दुआ करते हैं कि इस दुनिया से मुसलमान जायें। हजरत इब्राहीम व इस्माईल अलैहिमुस्सलाम की भी यही तमन्ना है कि "परवर्दिगार हम दोनों को मुसलमानों के जुमरे में और हमारे खानदान को उम्मत मुस्लेमा करार दे।" हजरत याकूब अलैहिस्सलाम अपने बेटों से कहते हैं "न मरना मगर हालते इस्लाम में।"

८. दूसरा अहम मौजूअ कलीसाओं और कनीसाओं की तामीरात के असबाब से मुताल्लिक है। कुरआन, हदीस और तारीखे इस्लाम की रीशनी में लोगों को यह बावर कराया जाये कि अहले किताब की इबादतगाहें मोहतरम हैं। कुरआन का इरशाद है कि "अगर खुदा वंदे आलम लोगों को मना न फरमाता तो लोग नसारा के कलीसाओं यहूदियों के कनीसाओं और जर्द तश्तियों के आतिशकदों को तबाह व बर्बाद कर देते हैं। इस आयत से यह हकीकत सामने आती है कि इस्लाम में इबादतगाहें मोहतरम हैं और उन्हें हरगिज नुकसान नहीं पहुंचाया जा सकता।

६. दीने यहूद से इंकार पर मक्की चंद हदीसों जनावे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नकल की गयी है मसलन यहूदियों को जजीरतुल अरब से बाहर निकाल दो या जजीरतुल अरब में दो मुख्तलिफ अवयान की गुंजाईश नहीं। हमें हर हाल में इन अहादीस की तरदीद करनी चाहिये और यह बताना चाहिये कि अगर यह अहादीस सही होती तो हजरत खतमी मरतबत कभी यहूदी औरत से शादी न करते।

१०. ताजिम है कि मुसलमानों को इबादत से रोका जाये और इसके वाजिब होने के बारे में उनके दिलों में शुकूक पैदा किये जायें। खास तौर से इस नुक्ते पर जोर दिया जाये कि खुदावंदे आलम बंदों की इबादत से बे नियाज है। हज को एक बेहूदा अमल करार दिया जाये और मुसलमानों को शिद्दत के साथ मक्का जाने से रोका जाये। इस तरह मजालिस और इस सिलसिले के तमाम इज्तेमाआत पर पाबंदी लगाई जाये। यह इज्तेमाआत हमारे लिये खतरे की घंटी है और इन्हें शिद्दत के साथ रोकना जरूरी है। मसाजिद, आइम्मए दीन (अलैहिमुस्सलाम) के मजारात, इमाम बारगाहों और मदरसों की तानीरात पर भी बंदिश आयद की जाये।

११. खुम्स और गनायमे जंगी की तकसीम भी इस्लाम की तकवियत का एक सबब है। खुम्स का ताल्लुक लेन देन, तिजारती और कारोबारी मुनाफा से नहीं है। मुसलमानों को इस बात से आगाह करने की जरूरत है कि इस मद में रकम की अदायगी पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इमामों (अलैहिमुस्सलाम) के जमाने में वाजिब थी लेकिन अब उलमाए दीन को इस का इस्तेयार नहीं है कि वह लोगों से इस रकम को हासिल करें खास तौर पर जबकि यह लोग इस रकम से जाती फायदे हासिल करते हैं और अपने लिये गेड बकरियां, गाय, घोड़े, बागात और महलात खरीदते हैं। इस एतेबार से शरअन खुम्स की रकम उनके लिये जायज नहीं है।

१२. लोगों को बद गुमान करने के लिये यह जाहिर करने की

जरूरत है कि इस्लाम फित्ना व फसाद और अबतरी और इखलेलाफात का दीन है और इस के सुबूत में इस्लामी मुमालिक में रूनुमा होने वाले वाकियात को पेश करना चाहिये।

१३. अपने आपको तमाम घरानों में पहुंचाकर बाप, बेटों के ताल्लुकात को इस हद तक बिगाड़ा जाये कि बुजुर्गों की नसीहत बे असर हो जायें और लोग आमरियत की तहजीब व तमहुन का शिकार हो जायें। इस सूरत में हम नौजवानों को उनके दीनी अकायद से फेर करके उन्हें उलमा से दूर रख सकते हैं।

१४. औरतों की बे पर्दगी के बारे में हमें बहुत कोशिश की जरूरत है ताकि मुसलमान औरतें खुद पर्दा छोड़ने की आरजू करने लगें। इस सिलसिले में हमें तारीखी दलायल व शवाहिद का सहारा लेकर यह साबित करना होगा कि पर्दे का रिवाज बनी अब्बास के दौर से हुआ और यह हरगिज इस्लाम की सुन्नत नहीं है। लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों को बगैर पर्दा देखते रहे हैं। सदरे इस्लाम की औरतें जिन्दगी के तमाम शोबों में मदों के शाना बशाना रही हैं। इन कोशिशों के कामयाब होने के बाद हमारे साथियों का यह फर्ज है कि वह नौजवान नसल को गैर शरई जिन्सी ताल्लुकात और अय्याशियों की तरगीब दें और इस तरह बुराईयों को इस्लामी मुआशरे में रिवाज दें। जरूरी है कि गैर मुस्लिम औरतें पूरी बे पर्दगी के साथ अपने आपको मुस्लिम मुआशरे में पेश करें ताकि मुसलमान औरतें उन्हें देखकर तकलीद करें।

१५. जमाअत की नमाज से लोगों को रोकने के लिये जरूरी है कि जुमा व जमाअत के इमामों पर इल्जाम तराशियां की जायें और उनके फिरक व फुजूर पर मुबनी दलायल पेश किये जायें ताकि लोग बेजार होकर उनसे अपना रास्ता तोड़ लें।

१६. हमारी दुश्वारियों में से एक बड़ी दुश्वारी बुजुर्गाने दीन के मजारों पर मुसलमानों की हाजरी है। जरूरी है कि मुख्तलिफ दलायल से यह साबित किया जाए कि कब्रों को अहमियत देना और

उनकी आराईशात पर तयज्जोह देना बिदअत और खिलाफे शरअ है और खतमी मरतबत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने में मुर्दा परस्ती और इस किस्म की बातें रायज नहीं थी। आहिस्ता आहिस्ता इन कब्रों को तोड़ करके लोगों को इनकी जियारत से रोका जाये। इस सिलसिले में एक मुफीद प्रोग्राम यह भी है कि इन मराकिज की असलियत के बारे में लोगों को शक में डाला जाये। मरालन यह कहा जाये कि हजरत खतमी मरतबत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मस्जिद नबवी में मदफून नहीं हैं बल्कि अपने वालिदा गिरामी की कब्र में सो रहे हैं और इसी तरह तमाम बुजुर्गाने दीन के बारे में कहा जाये कि वह उन मकामात पर नहीं हैं जिन मकामात को उनसे मंसूब किया गया है। हजरत अबू बकर व उमर दोनों जन्नतुल बकीअ में मदफून हैं। हजरत उस्मान की कब्र का कहीं पता नहीं है। हजरत अली (अलैहिस्सलाम) की आरामगाह बसरा में है और वह कब्र जो नजफ अशरफ में मुसलमानों की जियारतगाह है दर असल इसमें मुगीरा बिन शोअबा दफन हैं। इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम) का सरे अकदस मस्जिद हनाना में दफन है और आपके जसदे अकदस की तदफीन के बारे में सही इत्तेला नहीं है। काजमीन की मशहूर जियारतगाह में इमाम मूसा काजिम (अलैहिस्सलाम) और इमाम तकी (अलैहिस्सलाम) के बजाए दो अब्बासी खलीफा दफन हैं। मशहद में इमाम रजा (अलैहिस्सलाम) नहीं बल्कि हारून रशीद दफन है। सामरा में भी इमाम नकी (अलैहिस्सलाम) और इमाम हसन असकरी (अलैहिस्सलाम) के बजाए अब्बासी खुलफा दफन हैं। हमें बकीअ के कब्रस्तान के सिलसिले में कोशिश करनी चाहिये कि वह खाक के एकसां हो जाये और तमाम इस्लामी मुमालिक की जियारतगाहें वीरानों में बदल दी जायें।

१७. खानदाने रिसालत से अहले तशीअ की अकीदत व एहतेराम खत्म करने के लिये झूटे और बनावटी सादात पैदा किये जायें और इस काम के लिये हमें चंद तंख्याह दार अफराद की जरूरत है जो काला और हरे अमामों के साथ लोगों में जाहिर हों और अपने आपको औलादे रसूल से निसबत दें। इस तरह वह लोग जो उनकी

हकीकत से वाकिफ है आहिस्ता आहिस्ता हकीकी सादात से बदजन हो जायेंगे और ओलादे रसूल पर शक करने लगेंगे। दूसरा काम हमें यह करना होगा कि हम हकीकी सादात और उलमाए दीन के सरों से उनके अमामे उतरवायें ताकि पैगम्बरे खुदा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वायस्तगी का सिलसिला खत्म हो और लोग उलमा का एहतेराम छोड़ दें।

१८. इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम) की इजादारी के मराकिज को खत्म करके उन्हें वीरान कर दिया जाये और यह काम मुसलमानों की गुमराही की राह रोकने और दीन को बंद बख्ती और नाबूदी से बचाने के उनवान से होना चाहिये। अपनी तमाम कोशिशों को इस्तेमाल में लाकर लोगों को मजालिसे इजा में जाने से रोकने की कोशिश की जाये और और इजादारी को आहिस्ता आहिस्ता खत्म किया जाये। इस काम के लिये इमाम बारगाहों की तामीर और उलमा व जाकिरीन के इतेखाब की शरायत को सख्त बनाया जाये।

१९. आजाद ख्याली और चून व चिरा वाली कैफियत को मुसलमानों के अजहान में बक्का करना चाहिये ताकि हर आदमी आजादाना तौर पर सोचने के काबिल हो और हर काम अपनी मर्जी से अंजाम दे। अमर बिल मारुफ और नहीं अनिल मुन्कर वाजिब नहीं। अहकामे शरीअत की तरबीज का अमल तर्क होना चाहिये। अगर अमर बिल मारुफ नहीं अनिल मुन्कर को वाजिब समझा जाये तो यह काम बादशाहों का है। अवापुन्नास को इसमें कोई दखल नहीं।

२०. नस्त को कंट्रोल किया जाये और मर्दों को एक से ज्यादा बीवी इख्तियार करने की इजाजत न दी जाये। नये कवानीन बना कर शादी के मसले को दुश्वार बनाया जाये मसलन किसी अरब मर्द को ईरानी औरत और ईरानी मर्द को अरब औरत से शादी की इजाजत न दी जाये। इस तरह तुर्क, ईरानियों से शादी नहीं कर सकेंगे।

२१. इस्लामी तालीम की आफाकियत के मसले को मजबूत दलायल से रद्द किया जाये और यह बताया जाये कि इस्लाम

उसूलन दीने हिदायत नहीं है बल्कि इसका ताल्लुक सिर्फ एक कबीला और एक कौम से है जैसा कि कुरआन ने इकरार किया है : "यह दीन तुम्हारी और तुम्हारे कबीले की हिदायत के लिये है।"

२२. मसाजिद, मदारिस, तद्वियती मराकिज और अच्छी बुनियादों पर कायम होने वाली सामीरात से मुताल्लिक इस्लाम की तमाम सुन्नतों को रद्द या कम से कम महदूद कर दिया जाये। इस किरम के कामों का ताल्लुक उत्तमा से नहीं बल्कि ममलिकत के बादशाहों से है और जब हुक्मते इस किरम का काम अंजाम देंगी तो खुद ही उनकी टीनी कदर व कीमत जाती रहेगी।

२३. जरूरी है कि मुसलमानों के हाथों में मौजूद कुरआन में कमी बेशी करके लोगों को शक में मुदतला किया जाये। खास तौर पर कुफ्फार और यहूद व नसारा के बारे में तौहीन आमैज आयात नीज अनर बिल मारुफ और जिहाद से मुताल्लिक आयतों को कुरआन से निकाल दिया जाये और इन कुरआनों को तुर्की और फारसी जुबानों में तर्जुमा करके बाजारों में लाया जाये। गैर अरब मुस्लिम हुक्मतों को तरगीब दी जाये कि वह अपने अपने इलाकों में कुरआन, अजान, और नमाज को अरबी जुबान में पढ़ने से परहेज करें। दूसरा मसला अहादीस व रियायात में शक पैदा करना है और कुरआन की तरह इसमें भी तहरीफ व तर्जुमा से काम लेना है।

मुख्तार यह कि इस दूसरी किताब में भी मुझे बड़ी काम की चीजें दिखाई दीं। इस किताब का नाम "इस्लाम को कैसे सफह हस्ती से पिटाया जाये, रखा गया था। इसमें वह बेहतरीन अमली प्रोग्राम मुरत्तब थे जिन पर मुझे और मेरे दीगर साथियों को काम करना था। इस किताब ने मुझ पर बड़ा असर कायम किया था। किताब के मुताले के बाद मैं उसे वापस करने मकबूजा इलाकों की वजारत पहुंचा जहां दूसरी मर्तबा सेक्रेट्री से मेरी मुलाकात हुई। उसने मुझे मुखातब करके कहा-

जिन कामों को तुम्हें अंजाम देना है उसमें तुम अकेले नहीं हो

बल्कि लकरीबन पांच हजार सच्चे और खरे अफराद मुख्तलिफ गरोहों की सूरत में तमाम इस्लामी ममालिक में तुम्हारी मदद के लिये आमादा हैं। मकबजा इलाकों की बजारत का ख्याल है कि वह काम को आगे बढ़ने के साथ साथ इन अफराद की तादाद में इजाफा करके इन्हें एक लाख तक पहुंचा दें। जब भी हमें इस अजीम गरोह बनाने में कामयाबी हुई यकीनन हम तमाम आलमे इस्लाम पर छा जायेंगे और इस्लामी आसार को मुकम्मल तौर पर मिटा देंगे।”

इसके बाद सोकेंटी ने अपनी गुप्तगू जारी रखते हुए कहा-

“मैं तुम्हें यह खुशखबरी देता हूँ कि हम आइंदा एक सदी में अपनी मुराद को पहुंच जायेंगे और अगर आज हमारी नस्ल इस कामयाबी को न देख सके तो हमारी औलादें जरूर यह अच्छे दिन देखेंगी और यह ईरानी जरबुल मस्ल कितनी माना खेज है जिसमें कहा गया है, “कल दूसरों ने बोया हमने खाया। आज हम बो रहे हैं। कल दूसरे खायेंगे।” जिस दिन भी अजीम बर्तानिया या (समुद्रों की मलिका) को इस्लामी ममालिक पर फतह मंदी नसीब हुई दुनियाए मसीहियत उन तमाम तकालीफ से निजात पा जायेगी जिसे वह बारह सदियों से बर्दाश्त कर रही है। मुसलमानों ने इस असे में हम पर बड़ी जंगे मुसल्लत की जिनमें सलीबी जंग बतौर मिसाल है। यह जंगें बिल्कुल मुगलों की यलगार की तरह वे मकसद थीं कि जहां सियाए कत्ल व गारतगरी, वीरानी व तबाही और लूट मार के कोई मकसद नहीं था लेकिन इस्लाम के खिलाफ हमारी जंग मुगलों की तरह फौजी कार्रवाईयाँ और कत्ल व गारतगरी पर मुनहसिर नहीं है। हमें इस काम में जल्दी भी नहीं है। अजीम बर्तानिया की हुकूमत इस्लाम को मिटाने के लिये पूरे मुताला के साथ आगे बढ़ेगी और बड़े सब्र व तहम्मूल के साथ अपने अजीम कामों को अमल में लायेगी और अपने मकसद में कामयाब होगी। अलबत्ता हम जरूरी मौकों पर फौजी कार्रवाईयाँ से भी पीछे नहीं हटेंगे मगर यह इस सूरत में होगा जब हम इस्लामी हुकूमतों पर पूरी तरह छा जायेंगे और कुछ अनासिर

हमारी मुखालेफत पर कमरबस्ता होकर मैदान में उतर आयेगे। इस में कोई शक नहीं कि इस्तंबोल के बादशाह बड़ी होशमंदी और फितानत के मालिक हैं और इतनी जल्द हमें अपने प्रोग्रामों में कामयाब नहीं होने देंगे लेकिन हमें अभी से दर्मियाने तबके के बच्चों को उन स्कूलों में तबियत देना है जो हमने उनके लिये कायम किये हैं। हमें उन इलाकों में कई चर्च भी बनाने हैं। शराब, जुआ और शहयतजनी को इस तरह फैलाना है कि नौजवान नस्ल दीन व मजहब को भूल जाये। हमें इस्लामी ममालिक के हुक्मरानों के दर्मियान इस्तेलाफात की आग को भी हवा देना है। हर तरफ हरज मरज और फित्ना व फसाद का बाजार गर्म करना है। अरकाने हुकूमत और साहबाने सरवत को हसीन व जमील और शौख व चंचल ईसाई औरतों के दाम में फंसाना है और उनकी महफिलों को इन परीवर्शों से रौनक बख्शना है ताकि वह आहिस्ता आहिस्ता अपने दीनी और सियासी इक्तेदार से हाथ धो बैठें। लोग उनसे बदजन हो जायें और इस्लाम के बारे में उनका ईमान कमजोर हो जाये जिसके नतीजे में उलमा, हुकूमत और अवाम का इत्तेहाद टूट जाये और ऐसे हालात में जंग की आग भड़काकर हम उन ममालिक में इस्लाम की जड़ बुनियाद उखाड़ फेंकेंगे।”

(7)

आखिर कार मकबूजा इलाकों की वज्जारत के सेक्रेट्री ने उस दूसरे राज से भी पर्दा उठाया जिसका उसने मुझसे वादा किया था और मैं शिदत से जिसके इंतजार में था और यह वह करारदाद थी जो हुकूमते बर्तानिया के आला ओहदेदारों ने मंजूर की थी। पचास सफहात पर मुश्तमिल यह करारदाद मकबूजा इलाकों की वज्जारत की उस सियासत की आईना दार थी जिसके जरिये इस्लाम और अहले इस्लाम को एक सदी के अंदर अंदर नाबूद करना था। उस रिसाले की पेरोनगोई के मुताबिक इस असे के बाद इस्लाम सारी दुनिया से रुखसत हो जायेगा और सिर्फ तारीख में इसका नाम बाकी रह जायेगा। इस बात की सस्ती से ताकीद की गयी थी कि 14 निकालती करारदाद के मजमून को गहरे राज में रखा जाये और यह किसी उनयान से जाहिर न होने पाये क्योंकि इस बात का खतरा था कि मुसलामनों को इसकी खबर हो जाये और वह इसकी चारा जोई में उठ खड़े हों। फिर भी मुस्तसर तौर पर इसका मवाद कुछ यूं था-

१. ताजकिस्तान, बुखारा, अरमनिस्तान, शुमाली खुरासान और मावरा उन्नहर और रूस के जुनूब में वाकेय मुस्लिम आबादियों पर इख्तियार हासिल करने के लिये सल्तनते रूस से बडे पैमाने पर इस्तेराके अमल, इसके अलावा ईरान के सरहदी शहरों तुरकिस्तान और आजर बाईजान पर कब्जा हासिल करने के लिये रूस के साथ इस्तेराके अमल।

२. इस्लामी हुकूमतों को अंदरूनी और बैरूनी एतेबार से पूरी तरह तबाह करने के लिये एक पुनज्जम प्रोग्राम बनाने में रूस और फ्रांस के सलातीन के साथ इस्तेराके अमल।

३. उस्मानी और ईरानी हुकूमतों के पुराने झगड़ों को हवा देना और उनके दर्मियान कौमी और नसली इख्तेलाफात की आग भड़काना। ईराक और ईरान के अतराफ में आबाद कबीलों में कबायली जंगों और गड़बड़ पैदा करना। इस्लाम से पहले के मजाहिब की तबलीग हत्ता

कि ईरान, मिस्र और वैनून्नहरैन के तर्क किये हुए और मुर्दा अदयान को ज़िन्दा करना और उनके पैरोकारों को इस्लाम से फिराना।

४. इस्लामी ममालिक के शहरों और देहातों के बाज हिस्सों को गैर मुस्लिम अकवाम के हवाले करना मसलन मदीना यहूदियों को, असकंदरिया ईसाइयों को, यजद पारसियों को, अमारा साबइयों को, करमान शाह अलत्लाहियों को, भीसिल यजीदियों को और बूशहर समेत खलीज फारस के आसपास के इलाक़े हिंदुओं को सौंपना। इन दो आखिर में लिये गये इलाक़ों में पहले अहले हिंद को बसाना जरूरी है। इसी तरह लेबनान में पाकेंय तराबल्स दरौजियों के, कारज अलवियों के और मसकत ख्वारिज के हवाले करना। यही नहीं बल्कि माददी इमदाद, जंगी साज व सामान और फौजी और सियासी माहेरीन के जरिये उन्हें मजबूत बनाना भी जरूरी है ताकि कुछ अरों बाद वह अकलियतें अहले इस्लाम की आंखों में खटकने लगे और इस्लाम का पैकर आजुरदा हो जाये और इलाक़े में आहिस्ता आहिस्ता इन का असर व नफूज मुस्लिम हुकूमतों की तबाही का सबब बन जाये और इस्लाम की तरक्की पज़ीरी में रुकावट पड़ जाये।

५. हिंदुस्तान की तरह ईरानी और उस्मानी हुकूमतों में भी छोटी छोटी रियासतों का कयाम अमल में आये और फिर फूट डालो और हुकूमत करो या बेहतर अलफाज में फूट डालो और मिटा दो, के कानून पर अमल करते हुए उन्हें एक दूसरे से भिड़ा दिया जाये। इस सूरत में एक तरफ वह आपस में दस्त व गिरेबां होंगे और दूसरी तरफ मर्कज़ी हुकूमत से भी उनके झगड़े का सामान फ़राहम रहेगा।

६. एक सोचे समझे मुनज्जम मंसूबे के तहत इस्लामी दुनिया में लोगों के अफ़कार से हम आहंगी रखने वाले मन घड़त अकायद व मज़ाहिब की तबलीग़ मसलन आइम्मए अहले बैत (अलैहिमुस्सलाम) से बे इंतैहा अकीदत व एहतेराम रखने वाले शिष्यों के लिये हुसैन अल्लाही मजहब, इमाम जाफ़र सादिक की जात से मुताल्लिक शख़िसियत परस्ती, इमाम अली रज़ा (अलैहिस्सलाम) और इमाम ग़ायब (हज़रत मेहदी मौजूद) के बारे में बड़ा चढ़ाकर बताना और आठ इमामी फिरकें

की बढ़ावा देना हर हर मजहब के लिये उसके मुनासिब तरीन मुकाम की यह सूरत होगी, हुसैन अल्लाह फिरका (करबला) इमाम जाफर सादिक की परस्तिश (असफहान), इमाम मेहदी (अलेहिस्सलाम) की परस्तिश (सामरा) और हशत इमामी मजहब (मशहद)। इन जाली मजाहिब की तबलीग व तरबीज का दायरा सिर्फ शिया मजहब ही तक महदूद नहीं होना चाहिये बल्कि अहले सन्नून के तमाम फिरकों में भी इस फिरम के मजाहिब को बढ़ावा दिया जाना चाहिये और फिर उनमें इस्तेलाफात को हवा देकर नफरत का यह बीज बोना चाहिये कि उनमें का हर फिरका अपने आपको सच्चा मुसलमान और दूसरे को काफिर, मुरतद और वाजिबुल कत्ल समझे।

७. जिना, लवातत, शराब भोशी और जुवा वह अहम उमूर हैं जिन्हें मुसलमानों के दर्मियान रायज करने की जरूरत है। उन बुरी आदतों को मुसलमानों में फैलाने के लिये इलाके के उन लोगों से ज्यादा मदद लेनी चाहिये जो इस्लाम से पहले के मजाहिब से याबस्ता हैं और खुश किस्म से उनकी तादाद कुछ कम नहीं है।

८. अहम और हरसास ओहदों पर गलत कार और नापाक अफराद का तकस्सूर और इस बात पर तवज्जोह कि रियासतों की सरबराही मकबूजा इलाकों की वजारत से याबस्ता रहनी चाहिये ताकि वह इंग्लिस्तान की हुकूमत के लिये काम करें और उनसे अहकामात वसूल करें। फिर उन असरदार अफराद के जरिये हमारे मकासिद पोशीदा तौर पर कुव्वत के सहारे अमल में आये अलबत्ता उनके चुनाव में मुस्लिम बादशाहों का हाथ होगा।

९. गैर अरब मुस्लिम ममालिक में अरबी सकाफत और जुबान के फैलाव की राह रोकना और इसके बजाए संस्कृत, फारसी, करदी, पशतु, उर्दू और कौमी जुबानों को उन सर जमीनों पर रायज करना ताकि इलाकाई जुबानें रिवाज पाकर अरबी जुबान बोलने वाले कबायल में उतर आये और फसीह अरबी जुबान की जगह इस्तेयार करें। इस तरह अहले अरब का कुरआन और सुन्नत की जुबान से रिश्ता टूट जायेगा।

१०. हुकूमत के आफिरों में मुशीरों और माहिरो की हैसियत से बर्तानवी नौकर और जासूसों की तैनाती में इजाफा, इस तरह इस्लामी ममालिक के वजीरों और उमरा के फंसलों में हमारा रंग शामिल रहेगा। इस मकसद तक पहुंचने के लिये सबसे बेहतर रास्ता यह होगा कि पहले हम जहीन और भरोसे के गुलामों और कनीजों को तालीम व तर्बियत दें और फिर उन्हें हुक्मरानों, शहजादों, वजीरों, अमीरों और अहम दरबारी ओहदों पर फायज या असर अफराद के हाथों बेच दें। यह गुलाम अपनी सलाहियतों और समझ व फरासत की बुनियाद पर उनके नजदीक अपना मकाम पैदा करेंगे और आहिस्ता आहिस्ता उन्हें राय देने वाले का मकाम हासिल हो जायेगा। इस तरह मुस्लिम मदों में उनका एक अनमिट नक्श कायम हो जायेगा।

११. मुसलमानों के मुख्तलिफ तबकों खास तौर पर डाक्टरों, इंजीनियरों, हुकूमत के माली उमूर से वाबस्ता ओहदेदारों और इन जैसे दीगर रीशन फिक्र अफराद में मसीहियत की तबलीग व तरवीज, कलीसाओं खुसूसी स्कूलों और कलीसा से वाबस्ता शिफाखानों की तादाद में इजाफा, तबलीगाती कुतुब व रिसायल की नशर व इशाअत और दर्मियाने तबके के लोगों में इनकी मुफ्त तकसीम, तारीखे इस्लाम के मुकाबले पर तारीखे मसीहियत लिखवाने का एहतेमाम। मुसलमानों के हातात व कैफियात और उनमें हुकूमते बर्तानिया के उम्मात और जासूसों का चुनाव उनका दायराए अमल इस्लामी ममालिक में वाकैय मंदिर व कलीसा ही होंगे। इन आलिम नुमा इसाईयों से बाज का काम यह होगा कि वह मुस्तरिक और इस्लाम के जानने वाले बनकर तारीखी सच्चाईयों में तहरीफ करें और उन्हें उल्टा दिखाने की कोशिश करें और फिर दलायल की फराहमी और इस्लामी ममालिक से जरूरी इत्तेलाआत हासिल करने के बाद ऐसे मजामीन तैयार करें जो इस्लाम के नुकसान और ईसाईयत के फायदे में हों।

१२. मुसलमान लड़कों और लड़कियों में खुद सरी और मजहब बेजारी की तरवीज और उन्हें इस्लाम के उसूल व मबानी की सच्चाई के बारे में बदगुमान करना और यह काम मशीनरी स्कूलों, अखलाक

खुश करने और इस्लाम दुश्मनी पर मवनी किताबी, ऐश व नोश और खुश बाणी का सामान फराहम करने वाले कलबों और गलत बुनियादों पर इस्तेवार मुस्लिम और गैर मुस्लिम नौजवानों की दोस्ती के जरिये अंजाम पा सकता है। मुस्लिम नौजवानों को फांसने के लिये यहूदी और मसीही नौजवानों की शिराकत से खुफिया अंजुमनों की बुनियाद।

१३. इस्लाम को कमजोर करने, मुसलमानों के इस्तेहाद को तोड़ने और उन्हें जिन्दगी के भसायल के बारे में सोचने और तरक्की की राह में आगे बढ़ने से रोकने के लिये इस्लामी ममालिक में अंदरूनी और इस्लामी तौर पर झगड़े पैदा करना और मुसलमानों को एक दूसरे या फिर दीगर अदयान के पैरोकारों से भिड़ाए रखना। कौमी दौलत, जाली जस्सायर और फिक्क व फहम की कुब्बतों को तबाही से दो बार करना, मुसलमानों में रुहे अमल और बलबला अंगेजी को खत्म करना और उनमें इन्तेशार पैदा करना।

१४. इस्लामी ममालिक के इक्तेसादी निजाम को दरहम बरहम करना जिसमें जराअत और आमदनी के तमाम जराए शामिल हैं। इस मकसद को पूरा करने के लिये बंदों में छेद पैदा करना, दरियाओं में रेत की सतह ऊंची करना, लोगों में सुस्ती, सहल अंगारी और तन आसानी को बढ़ावा देना, पैदावार और तौलीदी उमूर की तरफ से लोगों की बे तबज्जोही को तकवियत देना और अवाम को नशीली चीजों का आदी बनाना जरूरी है।

इस बारे में यह बजाहत जरूरी है कि नशीली चीजों 14 निकात इतेहाई तकसील के साथ तहरीर में लाये गये थे और इनके साथ नक्शे, अलामतें और तराबीरें भी थीं। मैंने यहां इशारतन इनकी निशानदेही की है।

मुख्तसर यह कि मकबूजा इलाकों की बजारत के सेक्रेट्री से इस भरोसे की बुनियाद पर जो उसने मेरी जात से वाबस्ता कर रखी थी और जिसके जेरे असर उसने मुझे इतनी अहम और खुफिया किताब पढ़ने को दी थी मैंने दूसरी बार एहतेराम के साथ इजहारे तशक्कुर

किया और मजीद एक महीने तंदन में रहा। इसके बाद मजीद की तरफ से मुझे ईराक जाने का हुक्म मिला। मेरा यह सफर सिर्फ़ इराक़ के लिये था कि मैं मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को नये दीन के इजहार की दावत पर तैयार करूं। सेक्रेट्री ने बार बार मुझे यह ताकीद की कि मैं उसके साथ बड़ी चालाकी और होशियारी से पेश आऊँ और मुकद्दमाते उमूर की आमादगी में हरगिज हटे एतेदाल से आगे न बढ़ूँ क्योंकि ईराक़ व ईरान से मिलने वाली रिपोर्टों की बुनियाद पर सेक्रेट्री को इस बात का यकीन हो चुका था कि मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब काबिले भरोसा और मकसूजा इलाक़ों की बजारत के प्रोग्रामों को बअमल में लाने के लिये मुनासिब तरीन आदमी है।

इसके बाद सेक्रेट्री ने अपनी गुप्तगू जारी रखते हुए कहा-

“तुम्हें मुहम्मद के साथ बिल्कुल साफ़ और दो टोक अलफाज में गुप्तगू करनी है क्योंकि हमारे उम्मात असफ़हान में उससे बड़ी सराहत के साथ पहले ही गुप्तगू कर चुके हैं और वह उनकी बातों का मान चुका है मगर इस शर्त के साथ कि उसे उस्मानी हुक्ूमत के मकामी उम्मात, उलमा और मुतअस्सिव लोगों के हाथों आने वाले खतरात से बचा लिया जाये और उसकी हिमायत और तहफ़फ़ुज का भरपूर इंतज़ाम किया जाये क्योंकि उसकी दावत के जाहिर हाते ही हर तरफ़ से उसे खत्म करने की कोशिश की जायेगी और खतरनाक सुरतों में उस पर हमले किये जायेंगे।”

हुक्ूमते बर्तानिया ने शीख़ मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को हथियारों से अच्छी तरह लैस करने के बाद जरूरत के मौक़े पर उसकी मदद की ताईद की थी और शीख़ ही की मर्जी के मुताबिक़ जजीरतुल अरब में याक़ेय नज्द के करीब इलाक़े को उसकी हाक़मियत का पहला मक़ाम करार दिया था।

बहरहाल शीख़ की मुवाफ़िक़त की ख़बर सुनकर मेरी खुशी की कोई इंतहा न रही और मैंने सेक्रेट्री से सिर्फ़ यह सवाल किया कि मेरी आइंदा की जिम्मेदारियां क्या होंगी? मुझे इसके बाद क्या करना होगा

और शीख से किस किस्म का काम लेना होगा। नीज ये कि मैं अपने फरायज का कहां से आगाज करूं?

सेक्रेटरी ने जवाब दिया : मकबूजा इलाकों की दजारत ने तुम्हारे वजायफ को बड़ी वजाहत से मुतय्यन किया है और वह उन उमूर का इतफा है जिसे शीख को आहिस्ता आहिस्ता अंजाम देना है और वह यह है-

१. उसके मजहब में शामिल न होने वाले मुसलमानों की तकफीर और उनके माल, इज्जत और आवरु की बर्बादी को जायज समझना, इस जिम्न में गिरफ्तार किये जाने वाले मुखालेफीन को गुलाम बेचने वाली की मार्केट में कनीज व गुलाम की हैसियत से बेचना।

बुत परस्ती के बहाने मुमकिन होने पर खाना कावा का इनहेदाम और मुसलमानों को फरीजा-ए-हज से रोकना और हाजिर्यों के जान व माल की गारतगरी पर कवायले अरब को उकसाना।

३. अरब कवायल को उस्मानी खलीफा के अहकामात तोड़ने की तरगीब देना और नाखुश लोगों को उनके खिलाफ जंग पर आमादा करना। इस काम के लिये एक हथियार बंद फौज की तैयारी। हिजाज के बर्डा के एहतेराम और असर व नुफूज को तोड़ने के लिये उन्हें हर मुमकिन तरीके से परेशानियाँ में मुक्तला करना।

४. पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, उनके जानशीनों और पूरे तौर पर इस्लाम की बड़ी शखिरायतों की तौहीन का सहारा लेकर और इसी तरह शिर्क व बुत परस्ती के आदाब व रुसूम को मिटाने के बहाने मक्का, मदीना और दीगर शहरों में जहां तक हो सके मुसलमानों की जियारत गाहों और मकबरों को खत्म करना।

५. जहां तक मुमकिन हो सके इस्लामी ममालिक में फित्ना व फसाद, झगड़े और बदअमनी का फैलाव।

६. कुरआन में कमी वेशी पर शाहिद अहादीस व रिवायात की रु से एक जदीद कुरआन की नशर व इशाअत।

सेक्रेटरी ने अपने इस छः निकाती प्रोग्राम की तशरीह के बाद जिसे शेख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब को अंजाम देना था अपनी गुप्तगू जारी रखते हुए कहा-

“कहीं इस प्रोग्राम की दुश्वारियां तुम्हें घबराहट में मुत्तला न कर दें। हम सबका यह फर्ज है कि इस्लाम की तबाही का बीज उस सरजमीन में बिखेर दें ताकि हमारी आइदा आने वाली नरल हमारी इस राह पर आगे बढ़े और किसी फंसला कुन नतीजे पर पहुंच सकें। बर्तानिया की हुकूमत हमारी इस सब आजमा लंबी मुदत कोशिशों से वाकिफ है। क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अकेले व तहां अपने उस तबाहकुन इंकैलाब को बरपा नहीं किया। मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब भी (नाऊजूबिल्लाह) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरह हमारे पेशे नजर इंकैलाब को भड़का सकेगा।”

इस मुलाकात के कुछ दिन बाद मैंने वजीर और सेक्रेटरी से सफर की इजाजत मांगी और फिर घर वालों और दोस्तों को बिदाअ किया। घर से बाहर निकलते हुए मेरे छोटे लड़के ने आजिजाना लहजे में कहा, “बाबा जल्दी घर आइयेगा” उसके इस जुमले ने मेरी आंखें छलका दीं और मैं उन अशकों को अपनी बीबी से न छुपा सका। रुखासत के आखिरी रस्में तय करके मैं सफर के लिये तैयार हुआ।

हमारा जहाज बसरा की सम्त रवाना हुआ। बड़े दुश्वार और सख्त सफर के बाद रात के वक्त मैं बसरा पहुंचा और सैय्यद अब्दुल रजा तरखान के घर पहुंचा, वह बेचारा सो रहा था। मुझे देखते ही बहुत खुश हुआ और बड़ी गर्मजोशी से मेरा इस्तिकबाल किया। मैंने रात वहां काटी। दूसरे दिन सुबह मुझे अब्दुल रजा से मालूम हुआ कि शेख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब कुछ अरसे पहले ईरान से बसरा पहुंचा और अभी चंद दिन पहले किसी ना मालूम मकाम की तरफ खुदा हाफिज कह कर गया है। अब्दुल रजा ने यह भी बताया कि शेख मेरे नाम उसे एक खत भी दे गया है। उस खत में उसने अपना पता नज्द लिखा था।

दूसरे दिन मैं अकेला नज्द रवाना हुआ और बड़ी तकलीफों के

बाद मंजिले मकसूद पर पहुंचा और शैख से उसके घर पर मिला। उसके चेहरे पर थकावट और कमजोरी के आसार नुमायां थे। मैंने इस मौजूअ पर उससे गुफ्तगू मुनासिब नहीं समझी लेकिन जल्द ही मुझे पता चलता गया कि उसने दूसरी शादी रचा ली है और जिन्सी रवाबित में ज्यादा काम लेकर अपनी ताकत खो बैठा है। मैंने इस बारे में उसे नसीहतें कीं और बताया कि अभी हम दोनों को मिलकर बहुत से काम अंजाम देने हैं। इस मंजिल पर हम ने यह तय किया कि मैं अपने आपको अब्दुल्लाह के फर्जी नाम से बतीरे गुलाम पेश करूंगा और बताऊंगा कि शैख ने मुझे गुलाम बेचने वालों के गरोह से खरीदा है। चुनांचे शैख ने लोगों से मेरा इसी उनवान से तआरुफ कराया और बताया कि मैं बसरा में उसके काम से ठहरा हुआ था और अब यहां जद्दा पहुंचा हूं।

नज्द के रहने वाले मुझे शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब का गुलाम समझते थे। यहां यह भी बताना जरूरी होगा कि इस मकाम पर शैख की दावत का सामान फराहम करने में हमें दो साल का अर्सा लगा। सन 1143 हि० के बीच में मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने जजीरतुल अरब में अपने नये दीन के ऐलान का आखिरी इरादा किया और अपने दोस्तों को इकट्ठा किया जो उसके हम ख्याल थे और उसका साथ देने का वादा कर चुके थे। इत्तेदा में सिर्फ अपने खास असहाब और पुरीदों के दायरा में चंद अंजान और न समझ आने वाले अल्फाज में बड़े इख्तिसार के साथ इस दावत का आगाज हुआ लेकिन कुछ अर्से बाद नज्द के हर तबकए ख्याल के अफराद को बड़े पैमाने पर दावतनामे भेजे गये। आहिस्ता आहिस्ता हमने पैसे के जोर पर शैख के अतराफ इसके अफकार की हिमायत में एक बड़ा मजमा इकट्ठा किया और उन्हें दुश्मनों से टक्कर लेने की तलकीन की। यह बात भी काबिले जिक्र है कि जजीरतुल अरब में शैख की दावत के फैलने के साथ साथ उसके दुश्मनों और मुखालिफों की तादाद भी बढ़ने लगी।

जल्द ही रुकावटों और दुश्मनियों का सिलसिला इस मंजिल तक

पहुंचा कि शीख के पांव उखड़ने लगे। खास तौर पर नज्द में उसके खिलाफ बड़ी खतरनाक बातें फैली हुई थी। मैंने बड़ी हिम्मत के साथ उसे जमे रहने की तरगीब दी और उसके इरादे को सुस्त नहीं होने दिया। मैं हमेशा उससे कहता था "बेअसते के इब्तेदाई दिनों में अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दुश्मन तुम्हारे दुश्मनों से बहुत ज्यादा ताकतवर थे मगर आप उनके पैदा कर्दा दुश्मारियों और मुसीबतों को बड़े सब्र के साथ झेलते रहे। उन अजीबतों, तोहमतों और गालियों को सुने बगैर किसी बड़ी राह पर घामजन होना और बुलंदियों को घूना नामुमकिन है। कोई पेशवा और कोई रहबर इन दुश्मारियों से दामन छुड़ा न सका।

इस तरह हमने अपनी जहो जेहद का आगाज किया और खतरनाक दुश्मनों के मुकाबिल आये। जंग व गुरेज इस काम में हमारी हिकमते अमली थी। हमारे कामयाब प्रोग्रामों में से एक प्रोग्राम शीख के दुश्मनों को पैसों के जरिये तोड़ना था। हमारे यह तन्ख्याहदार अब मुखालेफीन की सफ में रहकर हमारे लिये जासूसी करते थे और उनके इरादों से हमें आगाह रखते थे। हम अपने इन बजाहिर दुश्मन साथियों की इत्तेलआत के जरिये मुखालिफों की तमाम स्कीमों को फेल किया करते थे। मसलन एक बार मैंने सुना कि चंद आदमियों के एक गरोह ने शीख को कत्ल करने का इरादा किया है। मैंने फौरी इकदामात के जरिये इस कत्ल की साजिश को नाकाम बना दिया और उस गरोह को इतना रुसवा किया कि बात शीख के हक में तमाम हुई और लोगों ने दहशत गर्दों का साथ छोड़ दिया।

आखिरकार शीख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने मुझे यह इत्मीनान दिलाया कि वह मकबूजा इलाकों की बजारत के छः निकाती प्रोग्राम को अमल में लाने में अपनी पूरी कोशिश करेगा। फिर भी उसने दो निकात के बारे में ठीक ठाक जवाब नहीं दिया। उनमें से एक मक्का पर कब्जा हासिल करने के बाद खाना काबा का इनहेदाम था। शीख के नजदीक यह एक बेहूदा और खतरनाक काम था क्योंकि अहले

इस्लाम इतनी जल्दी उसके दावे को तसलीम करने वाले नहीं थे और यही सूरत हज को बुत परस्ती करार देने की थी और दूसरा अमर जो उसके बस से बाहर था वह एक जदीद कुरआन का लिखना था। वह कुरआन के मुकाबिल नहीं आना चाहता था इसके साथ साथ वह मक्का और इसतंबोल के हुक्काम बहुत डरता था और कहता था कि अगर मैंने काबा को ढा दिया और नये कुरआन को लिखा तो इस बात का खतरा है कि उस्मानी हुक्ूमत एक बड़ी फौज मेरे खात्मे के लिये अरबस्तान भेजे और हम उस पर पूरे न उतर सकें। मैंने उसके बहाने को माकूल समझा और अदांजा लगाया कि इस दौर की सियासी और मजहबी फ़िजा इस बात को बर्दाश्त नहीं करेगी।

मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की दावत के बरसों बाद जब छः निकाती प्रोग्राम कामयाबी की पूरी मंजिलें तय कर चुका तो मकबूज़ा इलाकों की वज़ारत ने इरादा किया कि अब सियासी ऐतेबार से भी जज़ीरतुल अरब में कोई काम होना चाहिये। यही वजह थी कि उसने अपने उम्माल में से मुहम्मद बिन सऊद को मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के साथ इश्तेराके अमल पर मामूर किया और इस काम के लिये मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के पास खुफिया तौर पर एक नुमाइंदा भी भजा ताकि वह उसके सामने हुक्ूमते बर्तानिया के मकासिद की तौजीह करे और मुहम्मदैन के मिलकर काम की ज़रूरत पर जोर दे और ताकीद करे कि दीनी उमूर के फ़सले पूरे तौर पर मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के हाथ में होंगे और सियासी कामों की निगरानी मुहम्मद बिन सऊद की ज़िम्मेदारी होगी। मकबूज़ा इलाकों की वज़ारत का हदफ़ मुसलमानों के जिरम व जान दोनों पर अपना असर कायम करना था और तारीख़ इस बात की गवाह है कि सियासी हुक्ूमतों से देनी हुक्ूमतें ज़्यादा देरपा और ताकतवर रही हैं।

इस तरह दीनी और सियासी शख़्सियतों के इत्तेहादे अमल के नतीजे में अंग्रेज़ों का भला हो रहा था और हर आने वाला दिन इस भलाई में इज़ाफ़ा कर रहा था। इन दोनों रहबरों ने नज्द के करीब

"दरअया शहर" को अपना पाया तख्त बनाया। मकबूजा इलाकों की बजारत खुफिया तौर पर जी खोलकर उनकी माली मदद कर रही थी। यह बजारत की प्लानिंग के तहत हुकूमत को बजाहिर कुछ गुलाम खरीदने थे जो दरअसल मकबूजा इलाकों की बजारत ही के कुछ आदमी थे जिन्हें अरबी जुमान पर उबूर हासिल था और जो सेहराई जंगों के फुनून से भी वाकिफ थे। इन तमाम बातों का इंतजाम भी हमारी हुकूमत ने किया था। मैंने उन अफराद के मिलकर काम करने से जो तादाद में ग्यारह थे इस इस्लामी हुकूमत की दीनी और सियासी राहें मुख्यन कीं। दोनों मुहम्मद अपने फरायज से अच्छी तरह वाकिफ थे और उन तय की जाने वाली राहों पर नपे तुले कदमों से आगे बढ़ रहे थे। यहां यह बात भी काबिले जिक्र है कि कभी कभार उन दोनों के दमियान जुजवी तौर पर कशमकश हो जाया करती थी और वहीं उसी वक्त फैसला भी हो जाया करता था और मकबूजा इलाकों की बजारत को इसमें दखल की जरूरत पेश नहीं आती थी।

हमने नज्द के अतराफ की लड़कियों से शादियां कीं। हमें इस बात का ऐतेराफ है कि मुसलमान औरतों में मुहब्बत, खुलूस और शौहरदारी की सिफत याकई हैरतअंगेज और काबिले तारीफ है। हम इन रिश्तों के जरिये अहले नज्द के साथ दोस्ती, हम दिली और ताल्लुकात को और ज्यादा मजबूत बना सके।

इस वक्त हम उनके साथ अपनी दोस्ती की मेराज पर हैं। मर्कजी हुकूमत तमाम जजीरतुल अरब में अपना असर व नफूज कायम करने में कामयाब हो चुकी है। अगर कोई नागवार हादसा रुनुमा न हुआ तो बहुत जल्द इस्लामी सर जमीनों पर बिखेरे हुए यह बीज तनावर दरख्तों में तबदील हो जायेंगे और हमें इन से अपने मतलूबा फल हासिल होंगे।



RAZAVI KITAB GHAR

423, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 011-23264524, Mob.: 9350505879
E-mail : razavikitabghar@gmail.com